शेख़ सादी : गुलिस्तां

विश्व चिंतन सीरीज

सार्त्र : शब्दों का मसीहा	:	प्रस्तुति—प्रभा खेतान
प्लेटो : संवाद	:	प्रस्तुति—बद्रीनाथ कौल
नीत्शे . जरथुस्त्र ने कहा	.	प्रस्तुति—मुद्राराक्षस
मैकियावेली . शासक	:	प्रस्तुति—शशिवधुभ
शेख सादी : गुलिस्ता	:	प्रस्तुति—रामकिशोर सक्सेना

सम्पादन · नीलिमा सिंह

सरस्वती विहार

शेख़ सादी

गुलिस्तां

प्रस्तुतिः
राम किशोर सक्सेना

बात चाहे कितनी ही मीठी और अच्छी लगने वाली हो और लोग चाहे कितनी ही प्रशंसा करके उसे दुबारा सुनना चाहें, फिर भी जब एक बात तू उसे कह चुका, तो दुबारा मत कह। हलवा जब एक बार खा लिया, तो बस काफी है।

गुलिस्तां

क्रम

शेख सादी और गुलिस्तां : 9
1/राजनीति : 13
2/फकीरी : 48
3/सन्तोप : 74
4/खामोशी : 94
5/बुढापा : 100
6/परवरिश : 104
7/जिन्दगी : 121
उपसहार : 143

आवरण :
नासिरा शर्मा के सौजन्य से

शेख सादी और गुलिस्तां

जब भी किसी समाज में धर्म को धारण करने की शक्ति नही रह जाती है तब उसे शेख सादी जैसे विचारको की जरूरत पड़ती है। ऐसे विचारक जो मनुष्य में आत्मविश्वास पैदा कर सकें और उसे किंकर्तव्यविमूढता की स्थिति से उबार लें।

शेख मुसलिदुद्दीन सादी (1184-1291 ई०) फारसी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि हुए हैं। इनके नीति-वचन मनुष्य को उचित और अनुचित कर्मों का अन्तर समझाते हुए उसे सुखमय जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देते है।

सामान्य मनुष्य की अपनी भूख और गरीबी तथा अपने गृहस्थ जीवन की तमाम इहलौकिक समस्याओ को सुलझाने के लिए कई बार नैतिक आदर्शों को तिलाजलि देनी पड जाती है। शेख सादी दैनिक जीवन की गतिविधियों को पाप और पुण्य की परिभाषा में नही बांधते। उन्होने कर्म की व्याख्या उपयोगिता के आधार पर की है।

गुलिस्तां की पहली नीति-कथा में ही उनका यह सन्देश मिलता है, **'दूसरो का अहित करने वाले सच से वह झूठ कहीं अच्छा है जिससे किसी की जान बचती हो।'**

संसार के सभी महापुरुष अपने शत्रु को क्षमा कर देने की शिक्षा देते आए हैं। शेख शादी का कहना है कि क्षमा के पीछे भी कोई विवेक होना चाहिए, **'माफ कर देना एक अच्छी बात है लेकिन दुनिया को सताने वाले के जख्म पर मरहम नहीं लगाना चाहिए।'**

इसी तरह, वे नेकी करने के खिलाफ नही हैं लेकिन मनुष्य को यह चेतावनी अवश्य देते हैं कि, **'इतनी नेकी न कर कि तेज दांतों वाले भेड़िए तुम पर**

सवार हो जाएं।'

शेख सादी कहते है कि जो बुद्धिमान है उसे समदर्शी नही होना चाहिए। उसे अपने दोस्तो और दुश्मनो को भली भांति पहचान लेना चाहिए और अपने विवेक के अनुसार दोनों के प्रति अपने व्यवहार में अन्तर भी रखना चाहिए, **'जो दुश्मनों के साथ सुलह कर लेता है वह दोस्तों को सताने का इरादा रखता है।'** सच पूछा जाए तो व्यावहारिक जीवन में सफल होने के लिए मनुष्य को ऐसे ही मार्ग-दर्शन की आवश्यकता है।

प्राय: ऐसा देखा गया है कि भोले-भाग्ने, धर्म-भीरु और सन्तोषी प्रकृति के लोग किसी भी व्यवसाय मे सुखी नही रह पाते हैं। शेख सादी मुख्य रूप से उन्ही का उत्थान करना चाहते हैं। उन्होने वैराग्य की शिक्षा फकीरो को ही दी है। सासारिक मनुष्य से वे कहते है, **'बिना ताकत के सब तदबीरें मक्कारी और फरेब हैं। बिना तदबीर के ताकत का जोर नादानी और [illegible] है।'**

इन सूक्तियो मे जीवन के चिरन्तन सत्य की गूज सुनाई पडती है। कितने [illegible], संसार की सभ्यताएं बदल जाएं किन्तु ताकत के बिना तदबीर और तदबीर के बिना ताकत की कोई सार्थकता नही हो सकती।

शेख सादी चाहते है कि मनुष्य चतुर बने। वह सभी तरह की ऊंच-नीच समझकर ठडे दिल से अपने कर्तव्य का फैसला करे। साथ ही वह प्रतिपल सतर्क रहे कि ससार के ईर्ष्यालु अथवा नीच लोग उसके काम मे बाधा न डाल सकें। वे दुष्टो के साथ दुष्टता करने की इतनी छूट देते है कि कही-कही हिंसा को प्रोत्साहन देते हुए प्रतीत होने लगते है।

लोगो ने उनके इस नीति-साहित्य पर अनीति के प्रचार का आरोप लगाया। कुछ आलोचको को वे मैकियावेली की तरह सुख और स्वार्थ की साधना का समर्थन करने वाले पिशाच नजर आए।

शेख सादी जानते थे कि उन्हें गलत समझा जाएगा। अपने जीवन काल मे भी उन्होने अपनी नीतियो की निन्दा अवश्य सुनी होगी। गुलिस्ता के उप-संहार मे वे अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण देते है, 'जिनका नजरिया तंग है, वे शायद मुझ पर तानाजनी करें और बेकार में अपना दिमाग खपाएं; लेकिन बिना वजह चिराग का धुआ निगलना अक्लमन्दो का काम नही है। जो लोग रोशन दिमाग है, उनसे मुझे यह कहना है कि मैंने मनुष्य को सुख पहुंचाने वाली नसीहतो के मोती अपनी इबारतो की लडी में पिरो दिए हैं, लोगों की भलाई के लिए कडवी दवा को मजाक के शहद मे मिलाकर पेश किया है, ताकि इन्सान की रंज से उदास तबीयत इसे कुबूल कर ले।'

यही 'मजाक का शहद' उनकी नीति-कथाओं को रोचक और अविस्मरणीय बना देता है। मानव की विवशता को देखकर उनका हृदय रो पड़ता है, किन्तु उनकी यह करुणा भी उपहास की मीठी छुरी से वार किए बिना नहीं रहती। एक स्थान पर वे लिखते हैं, 'घोड़े के लिए घास का मैदान सड़क से बेहतर है लेकिन बेचारे के हाथ में अपनी लगाम नहीं होती।'

उन्होंने जीवन की विविध परिस्थितियों में रख कर मनुष्य के मनो- [illegible] और फकीर, जवान और [illegible] ोर अभिमानी, मूर्ख और [illegible] नसीहत है। यह ज्ञान उनके गंभीर अध्ययन और व्यापक अनुभव की देन है।

शेख सादी का जन्म 1184 ई० में ईरान के दक्षिणी प्रान्त में स्थित शीराज नगर में हुआ था। उनके पिता स्वयं एक कवि थे। अपने पिता के संरक्षक साद-बिन-जंगी के नाम पर ही उन्होंने अपना तखल्लुस रखा, सादी।

उनकी आरंभिक शिक्षा शीराज में हुई। बाद में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे बगदाद चले गए। सुप्रसिद्ध सूफी शेख शहाबुद्दीन सुहरावर्दी उनके गुरु थे।

अध्ययन समाप्त होने पर 1226 ई० में उन्होंने इस्लामी दुनिया के कई भागों की लम्बी यात्रा पर प्रस्थान किया। उन्होंने अपने जीवन के अगले तीस वर्ष केवल भ्रमण करने में ही व्यतीत किए। वे जिन देशों की यात्रा करते रहे उनमें से प्रमुख हैं—अरब, सीरिया, तुर्की, मिस्र और मोरक्को। मध्य एशिया का भ्रमण करते हुए वे संभवतः भारत भी आए थे। उन्होंने अपने यात्रा-विवरण में सोमनाथ का मन्दिर देखने की चर्चा की है।

अपने दीर्घ कालीन भ्रमण के दौरान शेख सादी ने जो अनुभव बटोरे उन्हीं के आधार पर वे मनुष्य को साहस, सहनशीलता, सतर्कता और व्यवहार-कुशलता की शिक्षा दिया करते थे।

बहत्तर वर्ष की परिपक्व अवस्था पर पहुंचकर उन्होंने भ्रमण करना बन्द कर दिया। वे पुन: शीराज लौट आए और साहित्य की साधना करने लगे।

उनकी पहली रचना 'बोस्तां' (फलों का उद्यान) है। इसमें उनकी नीति-विषयक कविताएं संकलित हैं। इसके दो वर्ष पश्चात् 1258 ई० में उन्होंने 'गुलिस्तां' (फूलों का उद्यान) की रचना की। 'गुलिस्तां' मूल रूप से गद्य में लिखा गया उपदेश प्रधान ग्रन्थ है जिसमें बीच-बीच में सरस पद्य और रोचक कथाओं के सूत्र जुड़े हुए हैं। उनकी अन्तिम रचना 'दीवान' है जिसे उन्होंने मृत्यु से कुछ समय पहले ही समाप्त किया था। इसमें मूल रूप से

१

राजनीति

मैंने एक बादशाह के बारे में सुना है कि उसने एक कैदी को मृत्यु-दंड दे दिया। जब कैदी जीवन से निराश हो गया, तो वह क्रोध में आकर बादशाह को गालियां देने लगा। कहावत मशहूर है कि जो आदमी जान से हाथ धो लेता है, वह कुछ भी कहने-सुनने से नहीं डरता। जब दुश्मन फंस जाता है और उसे बच निकलने का कोई रास्ता नहीं सूझता, तो वह लड़ने के लिए तलवार उठा लेता है।

मनुष्य जब जीवन से निराश हो जाता है, तो वह निडर होकर बकने लगता है। बिल्ली जब कुत्ते के चंगुल में फंस जाती है, तो एकदम उसके ऊपर झपटती है।

बादशाह ने पूछा, "यह कैदी क्या कह रहा है?"

एक समझदार वजीर ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया, "हुजूर, कैदी कह रहा है—*वे लोग कितने अच्छे होते हैं, जो क्रोध को पी जाते हैं और दूसरों* को क्षमा कर देते हैं।" बादशाह को कैदी पर दया आ गई। उसने उसे दंड देने का इरादा बदल दिया।

एक दूसरे वजीर ने, जो उस वजीर से जलता था, कहा, "हुजूर! हम लोगों का फर्ज तो यह है कि आपको ठीक सलाह दें और सच बात को साफ-साफ कह दें। इस कैदी ने हुजूर को गालियां दी हैं और जो नहीं कहना चाहिए था, कहा है, इसलिए इसे क्षमा नहीं किया जा सकता।"

बादशाह को इस दूसरे वजीर की बात पसन्द नहीं आई। उसे क्रोध आ गया। उसने कहा, "मुझे उसी वजीर की बात ठीक जंची। उसका झूठ भी तेरे इस सच से अच्छा है, क्योंकि उसके दिल में भलाई करने का इरादा था।

'किसी आलिम[1] ने ठीक ही कहा है कि दूसरो का अहित करने वाले सच से वह झूठ कहीं अच्छा है, जिससे किसी की जान बचती हो।'

बादशाह यदि अपने वजीर की सहायता से काम करे, तो वजीर को भी चाहिए कि वह जो सलाह दे, वह प्रजा के हित मे हो।

फरीदूं[2] के महल की दीवार पर लिखा था—ऐ भाई! दुनिया ने कभी किसी का साथ नही दिया। तू दुनिया को बनाने वाले से दिल लगा और सन्तोष कर। दुनिया की हुकूमत पर भरोसा न कर। दुनिया ने तुझ जैसे बहुतो को पाला और मार डाला। जब जाने-पाक[3] दुनिया से जाने का इरादा कर ले, तो जैसा जमीन पर मरना, वैसा तख्त पर।

खुरासान[4] के एक बादशाह ने स्वप्न मे देखा कि सुलतान महमूद सुबुक्तगीन का सारा शरीर गल-सड़ चुका है, किन्तु उसकी आंखें अपने गोलको मे घूम रही है और चारो तरफ देख रही है। बादशाह ने आलिमों से पूछा, 'इस स्वप्न का क्या अर्थ है?'

जब कोई भी आलिम इस स्वप्न का अर्थ न बता सका, तो एक फकीर ने बादशाह को समझाया कि उस स्वप्न का सकेत यह है कि सुलतान सुबुक्तगीन की आखें अब भी हसरत से यह देख रही है कि उसकी सलतनत अब दूसरों के कब्जे मे है।

'न जाने कितने महान और प्रसिद्ध लोग इस जमीन मे दफन हैं, जिनकी शानो शौकत का अब कोई निशान तक बाकी नही है।'

'जिस बूढ़े को मिट्टी के नीचे दफना दिया गया, उसे मिट्टी ने ऐसा खा डाला कि उसकी हड्डिया तक न बची।'

नौशेरवा महान[5] का नाम उसके सुप्रसिद्ध न्याय के कारण आज तक कायम है, यद्यपि उसकी मृत्यु के बाद सैकडो वर्ष बीत गए।

'ओ, मनुष्य! इस क्षण-भगुर जीवन को मत गंवा। इससे पहले कि यह आवाज आए कि तू नही रहा, तुझे चाहिए कि कुछ पुण्य कमा ले।'

मैंने एक शहजादे के बारे मे सुना कि वह छोटे कद का तथा कुरूप था, जबकि उसके और भाई लम्बे-तडगे और सुन्दर थे। एक दिन बादशाह ने

---

1. विद्वान
2. ईरान का एक बादशाह
3. पवित्र आत्मा
4. फारस देश का एक प्रान्त
5. फारस का एक न्यायप्रिय बादशाह

अपने उस कुरूप बेटे की ओर नफरत से देखा।

शहज़ादा बडा चतुर था। तत्का[illegible] समझ [illegible]आ कि [illegible] के मन में कैसा भाव उठा है। उसने बादशाह से कहा, "छोटे कद [illegible] आदमी [illegible] मूर्ख से कहीं अच्छा होता है। क्या यह सच [illegible] छोटी होती है, वह कीमत में बड़ी होती है ? जैसे बकरी हलाल[1] है और हाथी मुरदार।"[2]

'तूर[3] पर्वत एक बहुत छोटा पर्वत है, परन्तु सब पर्वतों में श्रेष्ठ गिना जाता है।'

"क्या आपने वह बात नहीं सुनी, जो एक दुबले-पतले विद्वान ने एक मोटे-ताजे मूर्ख से कही थी ? उसने कहा था, 'अरबी घोड़ा चाहे दुबला ही क्यों न हो, वह झुंड-के-झुंड गधों से कहीं अधिक उपयोगी होता है।'"

शहजादे की सारगर्भित बातें सुनकर बादशाह प्रसन्न हुआ। दरबार के लोगों को भी उसकी बातें पसन्द आईं, परन्तु उसके भाइयों को बहुत बुरा लगा।

'जब तक मनुष्य बोलता नहीं, उसके गुण और अवगुण प्रकट नहीं होते।'

'यह मत समझो कि हर झाड़ी सूनी होगी, हो सकता है कि उसके भीतर कोई शेर सो रहा हो।'

इस घटना के कुछ ही समय पश्चात् बादशाह को एक शक्तिशाली शत्रु का सामना करना पड़ा। जब दोनों ओर की सेनाएं आमने-सामने आईं, तो सबसे पहला सिपाही, जिसने युद्ध-भूमि में घोड़ा दौड़ाया, वही छोटे कद वाला शहज़ादा था। आते ही उसने शत्रु को ललकारकर कहा :

"आज के दिन तू भले ही मेरे सिर को खाक और खून में लथपथ पड़ा देखे, लेकिन मेरी पीठ नहीं देख सकेगा।"

'जो सिपाही लड़ने जाता है, वह अपने खून की बाजी लगाता है, लेकिन जो कायर लड़ाई के मैदान से भागता है, वह सारे लश्कर का खून करवाता है।'

यह कहकर वह शत्रु-सेना पर टूट पड़ा और देखते-ही-देखते उसने कई सैनिकों को मार गिराया। तब वह बादशाह के सामने आया और उसके

---

1. धर्मानुसार जीवित काटी गई (खाने योग्य)
2. अपनी मौत मरा हुआ पशु (अखाद्य)
3. वह पर्वत जहां खुदा का जलवा देखकर हजरत मूसा बेहोश हो गए थे।

पैरों तले की जमीन को चूमकर बोला :

"तूने मेरे छोटे कद को देखकर मुझे कमजोर समझ लिया, क्या मोटापे को तू हुनर समझ बैठा है ? लडाई के दिन तो पतली कमर वाला घोड़ा ही काम आता है, मोटा-ताजा बैल नही।"

कहते हैं कि शत्रु के पास बहुत बड़ी सेना थी, परन्तु इस तरफ थोड़े-से ही सिपाही थे। उनमें से भी कुछ ऐसे थे, जो भागना चाहते थे। शहजादे ने उन्हें ललकारकर कहा, "जवानो ! देखते क्या हो ? मैदान में कूद पडो। तुम मर्द हो !"

इतना सुनना था कि सिपाहियों को जोश आ गया। वे एकदम शत्रु सेना पर टूट पड़े और उसी दिन विजय प्राप्त कर ली। बादशाह ने शहजादे को बहुत प्यार किया। उसे गोद मे बिठाकर उसके सिर और आंखों को चूमा और उसे गले लगा लिया। वह दिनों दिन उसकी पदोन्नति करता गया, यहा तक कि उसे अपना उत्तराधिकारी बना दिया। यह देखकर उसके भाइयो को उससे बहुत ईर्ष्या हुई। उन्होंने उसे मरवा डालने के लिए षड्यन्त्र रचा।

एक दिन अवसर पाकर उन्होंने उसके भोजन मे जहर मिला दिया। जैसे ही शहजादा भोजन करने बैठा, उसकी बहन ने, जिसे इस षड्यन्त्र का पता चल गया था, खिडकी बजा दी। शहजादा बडा चतुर था। फौरन ताड गया कि दाल मे कुछ काला है। उसने भोजन मे हाथ खींच लिया और कहा :

'यह नही हो सकता कि बुद्धिमान मर जाए और मूर्ख उनकी जगह ले लें। अगर हुमा[1] दुनिया से नापैद भी हो जाए तो भी कोई उल्लू के साए के नीचे आना पसन्द नही करेगा।'

जब बादशाह को यह सूचना मिली, तो उसने दूसरे शहजादों को बुलाकर उन्हें उचित दंड दिया। बाद मे उसने हर एक को कुछ न कुछ जायदाद देकर दूर-दूर स्थानों पर बसा दिया, जिससे झगडा हमेशा के लिए खत्म हो जाए।

'दस फकीर एक कमली में इकट्ठे सो सकते है लेकिन दो बादशाह एक मुल्क मे नही रह सकते।'

'खुदा परस्त यदि आधी रोटी स्वय खाता है तो शेष आधी फकीरो के लिए छोड देता है। लेकिन एक बादशाह समूचे देश का स्वामी हो जाए तो

---

1. एक पक्षी, जिसके सम्बन्ध में यह लोकविश्वास है कि जिसके सिर पर उसका साया पड़ जाए, वह बादशाह बन जाता है।

भी वह दूसरे मुल्कों को हड़पने की सोचता रहता है।'

अरब के चोरों के एक गिरोह ने एक पहाड़ी पर अड्डा जमा लिया था। उनके डर से यात्रियों ने उधर का रास्ता ही छोड़ दिया। शहर के लोग उनके डर से कांपते थे। बादशाह के सिपाही भी उन्हें पकड़ने की हिम्मत न करते। कारण यह था कि पहाड़ी पर चोरों के लिए एक बहुत ही सुरक्षित जगह थी, जहां से वे आसानी से दूसरों पर हमला कर सकते थे।

वहां के कुछ अनुभवी और साहसी लोगों ने चोरों को पकडने का फैसला किया। उन्हें डर था कि यदि चोर उस पहाडी पर कुछ दिन और जमे रहे, तो फिर उनको वहा से निकाल पाना असंभव हो जाएगा।

'जिस पौधे ने अभी जड़ पकड़ी है, उसे तो कोई भी आसानी से उखाड़-कर फेंक सकता है। उसे छोड दिया जाए, तो वह बहुत बड़ा पेड़ बन जाएगा और फिर उसे औजारों की मदद से भी उखाड़ना मुश्किल होगा।'

'निकास पर नदी को केवल एक सलाई से रोक सकते हो। वही जब बढ़कर फैलाव पा जाती है तो हाथी की पीठ पर सवार होकर भी उसे पार करना मुश्किल है।'

उन्होंने चोरों की गतिविधियों का पता लगाने के लिए एक जासूस लगा दिया। संयोग की बात, एक दिन चोर पहाड़ी से निकल कर कहीं लूट-मार करने गए हुए थे। जासूस से यह सूचना पाते ही कुछ बहादुर सिपाही पहाडी पर जाकर छिप गए। सूर्यास्त के पश्चात् चोर जब लूट-मार करके पहाडी पर वापस आए तो बहुत थके हुए थे। उन्होंने अपने हथियार खोल-कर रख दिए और लूट का माल एक तरफ डाल दिया। लेटते ही वे गहरी नींद में डूब गए। रात हो चुकी थी और गहरा अंधकार छाया हुआ था।

सूरज की टिकिया अंधेरे में इस तरह छिप गई, जैसे हजरत यूनुस[1] मछली के पेट में चले गए हों।

अच्छा अवसर देखकर सिपाही बाहर निकले। वे सोते हुए चोरों की ओर बढ़े और उन सबके हाथ रस्सी से बांध दिए। सुबह होते ही उन्हें बादशाह के दरबार में पेश किया गया। बादशाह ने उन सबको मृत्यु-दंड दे दिया।

उन चोरों में एक नौजवान भी था, जिसका शरीर सुन्दर तथा सुगठित

---

1. हजरत यूनुस मुसलमानों के एक पैगम्बर थे। इन्हें एक दुर्घटना में मछली निगल गई थी। उसके पेट में ये चालीस दिन बंद रहे। फिर मछली ने इन्हें जिन्दा उगल दिया।

और मुख आकर्षक। उसे देखकर एक वजीर को बड़ी दया आई। उसने बादशाह से कहा, "हुजूर यह लड़का अभी नासमझ है। इसने अभी जीवन का कोई सुख नही देखा और न इसे अभी कोई अनुभव है। यदि आप इसे मृत्यु-दंड से मुक्त कर दें तो आपकी बड़ी कृपा होगी।"

बादशाह को वजीर की बात पसन्द न आई। उसने कहा, "जिस बच्चे की नस्ल ही खराब है, यह अच्छा कैसे बन सकता है?"

'दुष्ट लोगों को तो समूल नष्ट कर देना ही उचित है।'

'आग को बुझा देना, लेकिन चिन्गारी छोड़ देना, या साप को मार डालना लेकिन उसके बच्चे को छोड़ देना कहा की बुद्धिमानी है?'

'बादलों से चाहे अमृत ही क्यों न बरसे, बेंत के पेड़ पर फल नही लग सकते।'

'नीच को सुधारने में तू अपना समय नष्ट मत कर। नरकुल[1] से शक्कर नही बन सकती।'

'दुष्ट व्यक्ति को सुधारना ऐसा ही है, जैसा गोल गुम्बद पर अखरोट को रोकने की कोशिश करना।'

वजीर निरुत्तर हो गया। शिष्टाचारवश उसने बादशाह के कथन की सराहना की, फिर भी उसने निवेदन किया।

'इसमे कोई सन्देह नही है कि यह लड़का बुरे लोगों की संगति में रहा, तो बुरा ही बनेगा; परन्तु मुझे आशा है कि अभी यह सुधर सकता है। यदि भलेआदमियों के बीच इसे रखा जाए, तो यह भी भला आदमी बन जाएगा। अभी तक इसमे बुरे लोगों का असर नही दिखाई देता। सगति से ही बच्चा सुधर या बिगड़ जाता है। कुरान-शरीफ मे कहा गया है:

'जन्म से हर बच्चा मुसलमान ही होता है, बाद मे उसके मां-बाप चाहे उसे यहूदी बना लें, चाहे नसरानी, चाहे मजूसी।'

'हजरत नूह के बेटों ने बुरे लोगों के साथ रहना शुरू कर दिया था, जिसका परिणाम यह हुआ कि उनके वंश से पैगम्बरी सदा के लिए चली गई; परन्तु कैफ़[2] के दरवेशों के साथ रहकर उनका कुत्ता भी शरीफ बन गया।'

जब वजीर ने इतना कहा, तो और लोग भी उस लड़के की सिफारिश करने लगे। बादशाह ने उस लड़के को यह कहते हुए छोड़ दिया कि, 'हम

---

1. गन्ने के आकार का जंगली पौधा
2. सात दरवेश जो कैफ की गुफाओं में रहकर खुदा को याद करते थे।

इसे माफ किए देते है, हालांकि यह मुनासिब नही लगता। शायद तुझे मालूम नही है कि जाल[1] ने रुस्तम से क्या कहा था ?'

'दुश्मन को कभी कमजोर और बेसहारा नही समझना चाहिए।'

"क्या तूने नही देखा कि छोटी-सी नदी भी पानी से भर जाती है, तो वह ऊंट को उसके बोझ समेत बहा ले जाती है।"

बादशाह के हुक्म से उस लड़के को उसी वजीर की देख-रेख मे रख दिया गया और बड़े लाड़-प्यार से उसकी परवरिश होने लगी। उसे शिक्षा देने के लिए एक उस्ताद रख दिया गया, जिसने उसे सभ्य समाज में रहने-सहने का ढंग तथा अपने से बड़ों के साथ बात-चीत करने का सलीका सिखाया।

एक दिन वजीर बादशाह से उस लडके की प्रशसा करने लगा कि उस पर शिक्षा तथा अच्छी संगति का असर पडा है और वह एक शरीफ आदमी बन रहा है।

बादशाह सुनकर मुस्कराया और बोला, 'भेड़िए का बच्चा भेडिया ही बनेगा, चाहे उसकी परवरिश इन्सानों के बीच क्यों न हुई हो।'

इस बात को लगभग दो वर्ष बीत गए। उसी मुहल्ले में कुछ बदमाश आकर रहने लगे। धीरे-धीरे वह चोर लड़का भी उनमे जा मिला। उन्ही की मदद से एक दिन उसने वजीर तथा उसके दोनों बेटो को मार डाला और उनकी सारी दौलत लेकर चम्पत हो गया।

अन्त मे वह पक्का चोर बन गया और अपने पिता की जगह उसी पहाडी पर जाकर रहने लगा। बादशाह ने जब यह सुना तो कहने लगा, 'शिक्षा प्राप्त करने पर भी दुष्ट अपनी दुष्टता नही छोड़ता। खराब लोहे से अच्छी तलवार कैसे बन सकती है ?'

'यह ठीक है कि वर्षा जमीन को उपजाऊ बनाती है; परन्तु सब जगह एक-सी पैदावार नही होती। यदि उपवन मे लाला[2] उगता है, तो बंजर जमीन मे झाड़ियां।'

'बजर जमीन में फल नही उग सकते। तू अपनी मेहनत को बेकार मत कर।'

'दुष्टों के साथ भलाई करना उतना ही बुरा है, जितना सज्जनों के साथ दुष्टता करना।'

---

1. रुस्तम पहलवान का पिता
2. एक सुन्दर फूल

मैंने एक सिपाही को अग़लमश[1] के दरवाजे पर पहरा लगाते देखा। वह नौजवान बड़ा अक्लमन्द था। हर काम बड़ी होशियारी से करता। बचपन से ही हर बात से उसकी समझदारी प्रकट हाती थी। उसके चेहरे को देखकर ही यह कहा जा सकता था कि एक दिन वह महान व्यक्ति बनेगा।

बादशाह को यह नौजवान बहुत प्रिय लगने लगा। रूप भी आकर्षक और बुद्धिभी प्रखर, फिर और चाहिए भी क्या? किसी ने ठीक ही कहा है, 'मनुष्य की महानता उसकी बुद्धि पर निर्भर होती है न कि उसकी आयु पर।'

'मनुष्य के धनवान होने की ख्याति उसके उदारतापूर्वक खर्च करने पर होती है न कि धन जोड-जोडकर रखने से।'

बादशाह ने इस नौजवान की पदोन्नति कर दी। यह देखकर उसके साथी उससे ईर्ष्या करने लगे। उन्होने षड्यन्त्र रचकर उसे मरवा डालने का प्रयत्न किया, किन्तु जब अल्लाह की कृपा हो, तो शत्रु क्या कर सकता है।

बादशाह ने नौजवान से पूछा, "ये लोग तुझसे दुश्मनी क्यो रखते हैं?'

नौजवान ने उत्तर दिया, 'अल्लाह आपका साया मेरे सिर पर बनाए रखे। मैंने और सब लोगो को तो खुश कर लिया है लेकिन इन जलने वालो का क्या करू? ये तो तभी खुश हो सकते हैं जब मुझे नौकरी से निकाल दिया जाए और मेरा सब कुछ मुझसे छीन लिया जाए। यदि आपका संरक्षण मुझे प्राप्त है तो मुझे किसी बात की चिन्ता नही।'

'मैं यह तो कर सकता हूं कि किसी का दिल न दुखाऊं; किन्तु इन लोगो का क्या करूं, जो बिना बात जले-मरे जाते हैं?'

'ओ जलने वाले दुश्मन! तुझे भी इस दु:ख से तभी छुटकारा मिल सकता है, जब तू मर जाए। मौत के अतिरिक्त और कोई भी तुझे इस दु:ख से मुक्त नही कर सकता।'

'अभागे जलने वाले सुखी मनुष्य की बरबादी की कामना करते हैं, स्वयं परिश्रम करके सुखी और समृद्ध होना नही चाहते!'

'यदि रतौंध की बीमारी से पीड़ित मनुष्य उज्ज्वल सूर्य के प्रकाश को देखना पसन्द नही करता, तो उसमे सूर्य का क्या दोष है? सूर्य के लोप हो जाने से कहीं अच्छा है कि ऐसे हजारों रतौंध से पीड़ित मनुष्य निपट अंधे हो जाए।'

---

1. एक बादशाह का नाम

अजम के एक बादशाह के सम्बन्ध मे यह कहा जाता है कि वह बड़ा जालिम था। वह प्रजा का माल खूब लूटता-खसोटता था और लोगों के साथ बड़ा अन्याय करता था। परिणाम यह हुआ कि लोग उसका राज्य छोड़-छोड़कर भागने लगे। जब राज्य की जनसंख्या बहुत कम रह गई और राज-कोष की आय भी घट गई तो वह राज्य कमजोर हो गया। ऐसी दशा मे पड़ोस के शत्रु उस पर हमला करने की सोचने लगे।

'जो व्यक्ति यह चाहता है कि लोग मुसीबत मे उसका साथ दें, उसे चाहिए कि खुशहाली के दिनों मे वह उन्हे उदारता-पूर्वक दान दे।'

'यदि तू अपने स्वामिभक्त सेवक के प्रति उदार न होगा तो वह भी तुझे छोड़कर चला जाएगा। दूसरो के साथ भलाई कर, ताकि पराए भी अपने बन जाए।'

एक दिन बादशाह के दरबार मे शाहनामा[1] पढ़ा जा रहा था। संदर्भ यह था कि बादशाह ज़ह्हाक के राज्य का विघटन कैसे हुआ और फरीदू कैसे बादशाह बना।

इस वृत्तान्त को सुनकर एक वजीर ने बादशाह से पूछा, "हुज़ूर, आपने इस कहानी से क्या नतीजा निकाला?"

बादशाह ने कहा, "मेरी समझ मे बादशाह की शक्ति उसकी प्रजा है। प्रजा ही फ़रीदू के पक्ष मे इकट्ठी हो गई। उसने उसके हाथ मजबूत कर दिए जिसके फलस्वरूप उसे राज्य मिल गया।"

वजीर बोला, "ऐ बादशाह! जब प्रजा के सहयोग से राज्य प्राप्त किया जा सकता है तो तू अपनी प्रजा को राज्य से क्यों भगा रहा है? क्या शासन करने का तेरा इरादा नही है? तुझे चाहिए कि तू सैनिको को उदारता से धन दे। अगर सैनिक ही न रहेंगे तो तू शासन किसकी सहायता से करेगा?"

बादशाह ने पूछा, "सेना तथा प्रजा को कैसे सगठित किया जा सकता है?"

वजीर ने उत्तर दिया, "बादशाह को उदारता-पूर्वक धन देना चाहिए जिससे लोग उसका साथ दें। उसे न्याय करना चाहिए जिससे प्रजा उसके सरक्षण मे निर्भर जीवन बिता सके। दुर्भाग्य से तू ऐसा नही करता।"

'जालिम बादशाह हुकूमत नही कर सकता। भेड़िए से चरवाहे का काम नही लिया जा सकता। जिस बादशाह ने जुल्म करना शुरू कर दिया,

---

1. फिरदौसी द्वारा रचित महाकाव्य

उसने तो मानो अपने शासन की जड़ ही उखाड़ दी।'

बुद्धिमान वजीर की नसीहत बादशाह को बुरी लगी। उसे क्रोध आ गया और उसने वजीर को कैदखाने में डलवा दिया।

थोडे ही समय के पश्चात् बादशाह के चचेरे भाई उसके खिलाफ उठ खडे हुए। उन्होने उससे युद्ध करने के लिए बहुत बडी सेना तैयार कर ली। वास्तव मे यह राज्य भी उन्ही के पिता का था। अब उन्होने उसे वापस लेने का पक्का इरादा कर लिया। प्रजा के जो लोग बादशाह के विरुद्ध थे वे सब उसके शत्रुओ से जा मिले। बादशाह युद्ध मे हार गया और शासन उसके हाथ से निकल गया।

'जो बादशाह कमजोरो पर जुल्म करता है, वे लोग भी मुसीबत मे उसका साथ नही देते, उलटे उसके कट्टर दुश्मन बन जाते हैं।'

'तू प्रजा को खुश रख और निर्भय होकर शासन कर, न्यायप्रिय राजा की प्रजा उसके लिए सेना का काम देती है।'

'दीन-दुखियो पर सदैव दया कर और समय के कुचक्र से सावधान रह।'

कोई एक बादशाह अजम[1] के एक गुलाम के साथ नाव मे सवार हुआ। उस गुलाम ने इससे पहले कभी नदी मे सफर नही किया था। नाव जब चलने लगी तो वह भयभीत हो गया। वह रोने-चिल्लाने लगा और डर के मारे कांपने लगा।

बादशाह के मनोविनोद मे जब विघ्न पडा तो उसे क्रोध आ गया। लोगो ने गुलाम को चुप कराने की कोशिश की। जब वह किसी तरह चुप न हुआ तो एक अनुभवी व्यक्ति ने बादशाह से कहा, "हुजूर, यदि हुक्म दे तो मैं इसे शान्त कर दू।"

बादशाह की आज्ञा पाते ही उसने नौकरों से कहकर गुलाम को नदी में फिकवा दिया। जब वह चार-छः डुबकियां खा चुका, तो लोगो ने उसे बालों से पकडकर नाव पर खीच लिया। डरा हुआ गुलाम बेचारा चुपचाप एक कोने में बैठ गया। अब वह बिलकुल शान्त था।

बादशाह को इस बात पर आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "यह कैसे हो गया?"

बुद्धिमान मनुष्य ने उत्तर दिया, "इस गुलाम ने पानी मे डूबने की तकलीफ पहले कभी नही उठाई थी। इसीलिए यह नाव में सुरक्षित बैठने

1. एक देश का नाम

के आराम को नही समझता था। अब इसकी समझ में आ गया। आराम की कीमत वही जानता है जो मुसीबत में रह चुका हो।'

'ऐ इन्सान! तेरा पेट तो भरा है, इसीलिए तुझे जौ की रोटी अच्छी नही लगती; परन्तु जो चीज तुझे बुरी लगती है, मुझे अच्छी लगती है।'

'बहिश्त की हूरों के लिए ऐराफ़[1] दोजख है। तू दोजख वालों से पूछ—उनके लिए तो ऐराफ़ ही बहिश्त है।'

'जिस शख्स का माशूक उसकी बगल मे है, उसमें और उस शख्स में, बहुत फर्क है, *जिसकी आखे इन्तजार मे दरवाजे पर लगी हुई है।'*

अजम का एक बादशाह बुढापे मे बीमार पड़ा और उसके जीने की कोई आशा न बची। वह मृत्यु-शय्या पर पड़ा हुआ था। उसी समय एक घुड़सवार ने आकर सूचना दी कि उसकी सेना ने एक किले को जीत लिया और वहा के शत्रुओं को कैद कर लिया है। उसने यह भी बताया कि शत्रु-पक्ष की सारी प्रजा बादशाह सलामत को अपना स्वामी मान चुकी है। बादशाह ने एक ठडी सास ली और कहा :

"अफसोस! यह अच्छी खबर मेरे लिए न होकर मेरे दुश्मनो के लिए है, जो अब मेरे बाद हुकूमत करेंगे।"

"अफसोस! प्यारी उम्र इस उम्मीद में खत्म हो गई कि जो तमन्ना मेरे दिल में है वह कभी पूरी हो जाए। ठीक है कि बड़ी-बड़ी उम्मीदें पूरी हो गईं; किन्तु फायदा क्या, जब गुजरी हुई उम्र लौट कर न आए।"

'मौत के हाथ ने कूच का नक्कारा बजा दिया। ऐ मेरी दोनों आंखो! अब सिर को विदा दो। ऐ हाथ की हथेलियो, कलाइयो, बाजुओ! सब एक दूसरे को विदा दो। ऐ दोस्तो! मेरे दुश्मनो की इच्छा को पूरा करते हुए, मुझ असहाय को अब विदा दो। मेरा समय तो अज्ञान मे बीता और मैं बुराइयो से बच न सका लेकिन तुम तो बचो!'

हुरमुज[2] से लोगो ने पूछा, "तूने अपने वालिद के वजीरो में क्या खता देखी जो उन्हें कैद करवा दिया?"

उसने उत्तर दिया, "उनकी खता तो मैंने कोई नही देखी, मगर यह जरूर देखा कि वे मुझसे डरते बहुत थे और मेरी बात पर विश्वास नहीं करते थे। मुझे यह डर हुआ कि अपने अहित की आशंका से कहीं वे मुझे मार डालने की कोशिश न करें। इसलिए मैंने बुजुर्गों की नसीहत पर अमल

---

1. स्वर्ग और नरक के बीच की तंग जगह।
2. न्यायप्रिय सम्राट् नौशेरवां का पुत्र।

किया। उन्होंने कहा है, ऐ अक्लमन्द! जो तुझसे डरता है, तू भी उससे डर, चाहे तू उस जैसे सैकड़ों दुश्मनों को लड़ाई के मैदान में हरा देने की ताकत रखता हो।'

'साप चरवाहे के पैर में क्यो काटता है? वह जानता है कि चरवाहा पत्थर से उसका सिर कुचल देगा।'

'क्या तुझे नही मालूम कि बिल्ली जब मजबूर हो जाती है तो पंजा मारकर चीते की आख निकाल लेती है ?'

मैं दमिश्क की जामा मस्जिद में हजरत याहय्या[1] *की कब्र पर इबादत के लिए बैठा था।* मेरे सामने वहां अरब का एक बादशाह आया जो एक अत्याचारी शासक के रूप मे जाना जाता था। उसने कब्र पर नमाज पढ़कर मन्नत मागी।

'फकीर और मालदार सभी इस दर की खाक के गुलाम हैं। जो ज्यादा मालदार है, वही ज्यादा मोहताज है।'

उसने मुझसे कहा, 'फकीरों मे रूहानी-ताकत ज्यादा होती है और खुदा से उनका सीधा सम्बन्ध होता है। इसीलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हू कि आप मेरे लिए कुछ दुआ करें, जिससे मेरी परेशानी दूर हो। आजकल मैं एक बड़े दुश्मन से भयभीत रहता हूं। किसी तरह मुझे उससे छुटकारा दिलाइए।'

मैंने उत्तर दिया, 'जा और अपनी प्रजा के साथ दया और सहानुभूतिपूर्ण बर्ताव कर। फिर बड़े से बड़ा दुश्मन भी तेरा अहित नही कर पाएगा।'

'अपनी शक्तिशाली भुजाओं द्वारा दीन-दुर्बलों के हाथ मरोड़ना बहुत बड़ा अपराध है।'

'जो इन्सान गिरे-पड़े दुर्बलों पर दया नही करता वह स्वयं कभी गिर पड़े तो उसकी सहायता कौन करेगा ?'

'जो बुराई करके भलाई की आशा रखता है वह मूर्ख है। वह बेकार अपना दिमाग खपाता है और झूठी आशाएं रखता है।'

'कानों की रुई निकालकर फेंक दे और याद रख! तू अपनी प्रजा के साथ न्याय नही करेगा, तो भी न्याय एक-न-एक दिन जरूर होगा।'

'सब मनुष्य एक ही विशाल शरीर के भिन्न-भिन्न अग हैं, सबकी जड़ एक ही है। यदि किसी एक अंग मे पीड़ा हो, तो दूसरे अंग भी शाति से नही रह सकते। यदि तू दूसरों के दुख से दुखी नही होता, तो तू मनुष्य कहलाने

---

1. एक प्रसिद्ध पीर

योग्य नहीं है।'

एक अल्लाह को पहुंचे हुए फकीर शहर बगदाद में आए। वहां के एक जालिम और अमीर व्यक्ति हज्जाज बिन यूसुफ को उनके आने की सूचना मिली तो उसने उन्हें बुलाया और उनसे कहा, "आप मेरे लिए खुदा से दुआ कीजिए।" फकीर साहब ने दुआ की, "या अल्लाह! इसे मौत दे।" हज्जाज बहुत बिगड़ा और बोला, "यह क्या दुआ है?" फकीर साहब ने कहा, "यही दुआ तेरे और तेरे देश के सब मुसलमानों के लिए उपयुक्त है।"

'ऐ, ताकतवर! तू कमजोरों को सता रहा है तो तेरा बाजार कब तक गर्म रहेगा? बादशाहत तेरे किस काम आएगी? तेरा मरना ही अच्छा है, क्योंकि तू दूसरों को कष्ट पहुंचाता है।'

एक जालिम बादशाह ने किसी बुजुर्ग से पूछा, "सबसे अच्छी इबादत कौन-सी होती है?"

उसने जवाब दिया, "तेरे लिए सबसे अच्छी इबादत दिन में सोना है, क्योंकि कम-से-कम उतनी देर लोग तेरे अत्याचार से बचे रहेंगे।"

मैंने एक जालिम को दोपहर में सोते हुए देखा, तो कहा, 'यह दुष्ट है। इसका सोए रहना ही अच्छा है। जिस मनुष्य का सोना उसके जागने से अच्छा हो, ऐसे दुष्ट का मर जाना ही अच्छा है।'

मैंने एक बादशाह के बारे मे सुना है कि वह एक रात भोग-विलास में डूबा हुआ कह रहा था, 'मेरे लिए संसार मे इससे बड़ा सौभाग्य और क्या होगा? न मुझे किसी की अच्छाई-बुराई से मतलब है और न कोई चिन्ता है।'

उसी समय जाडे में ठिठुरते हुए एक नंगे फकीर ने कहा, "ऐ बादशाह! माना कि तेरे जैसा नसीब किसी का नही और तुझे अपना भी कोई ग़म नही है, लेकिन क्या तुझे हमारा भी कोई ग़म नही है?"

बादशाह प्रभावित हुआ। उसने एक हजार अशर्फियों की थैली खिड़की से बाहर निकालते हुए कहा, "ऐ फकीर! अपना दामन फैला!"

फकीर बोला, 'बदन पर कपड़ा ही नही है, दामन कहां से लाऊं?'

बादशाह को उसकी दीन दशा पर और भी अधिक दया आई। उसने उन अशर्फियों के साथ उसके लिए कुछ कपड़े भी भिजवा दिए।

फकीर ने थोड़े ही समय मे वह सारा धन खर्च कर डाला और फिर पहले जैसी दीन-हीन अवस्था में उसी जगह आकर बैठ गया।

'आजाद लोगों के हाथ मे धन उसी प्रकार नही ठहरता, जैसे प्रेमी के हृदय में धैर्य या छलनी मे पानी।'

लोगों ने बादशाह से फकीर का हाल कह सुनाया। बादशाह उस समय आमोद-प्रमोद मे व्यस्त था। उसे क्रोध आ गया और उसने मुंह फेर लिया। बुद्धिमान लोगों ने ठीक ही कहा है, 'बादशाह से उचित समय देखकर बात करनी चाहिए और साथ ही उनके क्रोध से बचना चाहिए।'

'बादशाह का इनाम-इकराम उस आदमी पर हराम हो जाता है, जो फुरसत और मौके का ख्याल नही रखता।'

'जब तक तू बात करने का सही मौका न देख ले तब तक बेकार बात करके अपनी कद्र मत घटा।'

बादशाह ने आदेश दिया, "जिसने तमाम दौलत इतनी जल्दी उडा दी, उस बेशर्म फिजूल खर्च को यहां से निकाल दो। शाही खजाना गरीबों को रोटी देने के लिए है, इस जैसे शैतान के भाइयों के लिए नहीं, जो उसे तुरंत लुटा दें।"

'वह मूर्ख जो दिन मे कपूर के चिराग जलाता है, ऐसा दिन जल्द ही देखेगा, जब रात के अंधेरे मे उसके चिराग मे तेल भी न होगा।'

उस बादशाह के एक वजीर ने सलाह दी, "हुजूर! इन फकीरों के लिए वजीफा बांध दीजिए जिससे ये लोग फिजूलखर्ची न कर सकें। आपने इस फकीर को निकाल देने का जो आदेश दिया है, वह उचित नहीं है। यह आप जैसे ऊंचे दर्जे वालो की शान के खिलाफ है कि पहले किसी पर कृपा करें और बाद मे उसे निराश करके उसका दिल तोड़ दें।"

'लालची के लिए अपना दरवाजा कभी नही खोलना चाहिए; लेकिन खुल ही जाए, तो उसे सख्ती से बन्द भी नही करना चाहिए।'

'हजाज[1] के प्यासे खारे पानी के किनारे एकत्र हो, ऐसा किसी ने न देखा होगा। जहां मीठे पानी का चश्मा हो, वहा आदमी, पक्षी और चीटियों का जमघट होता है।'

प्राचीन काल में एक बादशाह था। वह शासन के काम-काज मे सुस्ती करता था और सेना को दुखी रखता था। परिणाम यह हुआ कि जब उसे एक विकट शत्रु का सामना करना पड़ा तो वह हार गया। उसकी सारी सेना संकट के समय भाग खड़ी हुई।

'जब तू अपने खजाने को सिपाहियों से बचा कर रखेगा, तो युद्ध के समय सिपाही भी तलवार की ओर हाथ नही बढ़ाएंगे। जिस सिपाही का हाथ खाली हो और हालत खस्ता, वह युद्ध मे क्या बहादुरी दिखाएगा?'

1. अरब का रेगिस्तानी प्रदेश

जो सिपाही बादशाह के साथ गद्‌दारी करके भाग खड़े हुए थे, उनमे से एक मेरा मित्र था। मैंने उसकी निन्दा करते हुए कहा कि 'वह नीच और कृतघ्न है जो थोड़ा-सा कष्ट देखकर अपने पुराने स्वामी का साथ छोड बैठा और उसके बरसो के उपकारो को भूल गया।'

उसने उत्तर दिया, "क्या बादशाह का यही उपकार है कि मेरा घोडा बिना दाने के भूखा मरे और मेरे बैठने की जीन गिरवी रखी रहे ? जो बादशाह अपने सिपाही को धन देने मे कजूसी करे, उसके लिए लड़ाई मे सिर नही कटाया जा सकता और न इसमे कोई बहादुरी है।"

'तू बहादुर सिपाही को सोना दे, वह तेरे लिए अपना सिर कटा देगा। यदि तू उसे सोना नही देगा, तो वह तुझे छोडकर कही भी चला जाएगा।'

'जिस सिपाही का पेट भर जाता है, वह पूरी ताकत से हमला करता है यदि वह भूखा हो तो लडाई के मैदान मे भाग जाता है।'

किसी बादशाह ने अपने वजीर को नौकरी से निकाल दिया तो वह फकीरो के साथ जाकर रहने लगा। उनकी सगति का उस पर गहरा प्रभाव पडा। उसने सन्तोष करना सीख लिया।

कुछ समय पश्चात् बादशाह को अपनी भूल का पता चला। उसने वजीर से पुराने पद पर लौट आने को कहा। वजीर इसके लिए राजी नही हुआ। उसने कहा, "दुबारा नौकरी करने से तो अच्छा है कि मै बिलकुल छुट्टी ले लू।"

'जिसने सन्तोष कर लिया और एक कोने में अलग जा बैठा, उसने कुत्तों के दात और मनुष्यों के मुंह बन्द कर दिए।'

'जब कागज फाड डाला और कलम तोड डाली तो हम नुक्ता-चीनी करने वालो के हाथ और जबान, दोनो से बच गए।'

बादशाह ने फिर कहला भेजा, "हमे ऐसे अक्लमन्द आदमी की सख्त जरूरत है जो मुल्क के इन्तजाम में हाथ बटा सके।"

वजीर ने जवाब दिया, "असली अक्लमन्द वही है जो इस तरह का काम करने को राजी ही न हो।"

'तमाम परिन्दों मे हुमा[1] का दर्जा इसलिए ऊचा है कि वह बेचारी हड्डिया खाकर ही रह जाती है, दूसरे परिन्दों को सताती नही।'

सियाहगोश[2] से लोगो ने पूछा, "तुझे शेर के साथ रहना क्यो पसन्द

1. एक कल्पित पक्षी जिसके विषय में यह लोकविश्वास प्रचलित है कि जिस पर इसकी छाया पड़ जाए वह बादशाह बन जाता है।
2. बनबिलाव

है ?"

उसने जवाब दिया, "मुझे इससे दो फायदे हैं। एक तो मुझे शेर का बचा हुआ शिकार खाने को मिल जाता है, दूसरे, उसके डर से कोई दुश्मन मुझ पर हमला नहीं करता। मैं हर तरह से सुरक्षित हूं।"

लोगों ने फिर पूछा, "अब तो तू उसके आश्रय में आ गया है और तुझ पर उसके उपकार भी हैं तो उसके अधिक निकट क्यो नही रहता, इससे वह तुझे अपना अन्तरंग मित्र भी समझने लगेगा।"

सियाहगोश ने उत्तर दिया, "यह तो ठीक है; किन्तु मैं उसके हमले की तरफ से निश्चिन्त नही हूं।"

'आग का पुजारी सौ साल तक आग की पूजा करते रहने के बाद भी, यदि आग मे गिर पड़े, तो वह उसे जलाए बिना नही रहेगी।'

'बादशाह के पास रहने वाले के लिए दोनो बातें सभव हैं, उसे धन-दौलत मिले या उसका सिर काट लिया जाए।'

'बादशाह के तिल-तिल बदलने वाले स्वभाव से डरना चाहिए। कभी तो वह सलाम से नाराज हो जाता है और कभी गालियां सुनने पर भी जान बख्श देता है।'

विद्वानों ने यह भी कहा है कि, 'बादशाह के निकट रहने वाले हंसी-मजाक को अपना हुनर समझते हैं, परन्तु दूरदर्शी विद्वान इसे अवगुण ही समझते हैं। न जाने उसका क्या परिणाम हो ?'

"ऐ अकलमन्द ! तू तो अपने मर्तबे के मुताबिक कायदे से रह। बादशाह .. साथ हंसी-मजाक करने का काम तू उसके पास बैठने वालों के लिए छोड़ दे।"

मेरा एक दोस्त मुझसे शिकायत करने लगा कि, "जमाना बड़ा खराब है। मेरी आमदनी थोड़ी है और बाल-बच्चे ज्यादा। कहां तक सहा जाए ? भूखों मरा नहीं जाता। कई बार मन में आता है कि परदेस चला जाऊं। सुख-दुख मे जैसे भी हो वहा गुजर कर लू। किसी को मेरे अच्छे या बुरे हाल का पता भी नही चलेगा।"

"न जाने कितने लोग भूखे सो जाते हैं और किसी को खबर भी नही होती। न जाने कितने मृत्यु-शय्या पर पडे होते हैं और कोई उन्हें रोने वाला भी नही होता।"

"परन्तु मुझे भय है कि पीठ पीछे मेरे शत्रु खुश हो-होकर मेरी हंसी उड़ाएंगे, मुझे ताने देंगे और कहेंगे कि, 'वह आदमी कितना बेमुरव्वत है ! खुद तो चला गया और बेचारे बाल-बच्चो को यहा मुसीबत उठाने के लिए

छोड गया ।'

"उस बेशर्म को देखो ! वह कभी खुशहाल न होगा, जो अपने खुद के आराम के लिए बीवी-बच्चो को मुसीबत मे छोड़ गया ।"

"आपको मालूम है कि मुझे थोडा-बहुत हिसाब-किताब का काम आता है । यदि आपकी सहायता से मुझे कोई काम मिल जाए जिससे मेरी गुजर होती रहे तो मैं आजीवन आपका आभारी रहूंगा ।"

मैंने कहा, ' मेरे भाई, बादशाह की नौकरी मे दो बातें हैं—रोटी की उम्मीद और जान का खतरा, अक्लमन्दों की राय है कि रोटी की उम्मीद मे जान का खतरा नही मोल लेना चाहिए ।"

'फकीर के घर आकर कोई यह तकाजा नही करता कि जमीन या बाग का कर दे। या तो रज और परेशानी को सह लें, या फिर अपना कलेजा चील और कौवो को खिलाने के लिए तैयार रख ।'

उसने कहा, "जनाब ने जो कुछ कहा वह मेरी समझ मे नही आया, न उससे मेरी परेशानी का कोई हल निकला । बादशाह की नौकरी से वही डरता है, जो बेईमान होता है । जो कायर है उसी का हाथ कांपता है ।"

'सच्चाई खुदा को खुश रखने का जरिया है । मैंने कभी किसी सच्चे आदमी को भटकते नही देखा ।'

'अक्लमन्दों का कहना है कि चार तरह के इन्सानों की चार तरह के इन्सानों से दुश्मनी होती है—डाकू की बादशाह से, चोर की चौकीदार से, दुराचारी की चुगलखोर से और वेश्या की कोतवाल से ।'

'जिसका हिसाब साफ है, उसे हिसाब की जांच का क्या डर ?'

'यदि तू चाहता है कि नुक्ताचीनी करने वालो को कोई ऐब निकालने का मौका न मिले, तो तू अपने काम को बेकार मत फैला ।'

'ऐ भाई ! तू पाक रह और किसी से न डर, क्योकि गन्दे कपडे को ही धोबी पत्थर पर पीटते है ।'

मैंने फिर उससे कहा, "तुझे उस लोमड़ी की कहानी से शिक्षा लेनी चाहिए जिसे लोगो ने भागते हुए और गिरते-पड़ते देखकर पूछा, 'क्या मुसीबत है जो तू इतनी डरी हुई है ?"

"उसने जवाब दिया, 'मैंने सुना है कि शेरो को पकड़ा जा रहा है और उनसे कुछ बेगार ली जाएगी ।"

"उन्होने फिर पूछा, 'रे मूर्ख ! शेर पकड़े जा रहे हैं तो तुझे क्या ?'

"वह बोली, 'चुप रहिए ! यदि किसी दुश्मन ने मुझे भी शेर का बच्चा बता दिया और पकड़ने वालों ने मुझे भी पकड़ लिया, तो मुझे कौन

छुड़ाएगा? मेरे साथ किसकी हमदर्दी है जो मेरे मामले मे छान-बीन करेगा और जब तक कोई मेरी मदद को आएगा लोग मुझे मार भी डालेंगे।"

कहावत मशहूर है, 'जब तक ईराक से तिर्याक[1] आएगा साप का काटा मर भी जाएगा।'

'बेशक तुझमे होशियारी, दूरन्देशी, सच्चाई और ईमानदारी जैसे सब गुण हैं, लेकिन जलने वाले दुश्मन तो इस ताक मे रहते हैं कि कब मौका मिले और कब तुझे गिराए। यदि ऐसे लोगो ने बादशाह से तेरी चुगली खानी शुरू कर दी और तुझे उसने किसी मामले मे तलब कर लिया तो वहा कोई भी तेरी सहायता नही करेगा। अतः मेरी समझ मे तो यही आता है कि तू सब्र से आधी रोटी खा ले और बादशाह की नौकरी और मर्तबा पाने का इरादा छोड दे।'

'नदी में गोताखोरी से फायदे तो बहुत-से हो सकते है, लेकिन तू जान की हिफाजत चाहता है, तो किनारे पर ही रह।'

मेरे दोस्त को मेरी बातें अच्छी न लगी। उसने क्रोध मे आकर मुह फेर लिया और मुझे बुरा-भला भी कहा और बोला, 'दोस्त वही है, जो कैदखाने मे भी दोस्त की मदद करे। दस्तरख्वान पर तो दुश्मन भी दोस्त मालूम होते हैं।'

'तू उसको अपना दोस्त मत समझ, जो खुशहाली मे तेरी दोस्ती का भरता है। मै तो उसी को सच्चा दोस्त मानता हू, जो लाचारी और परेशानी मे दोस्त का साथ दे।'

जब मैने देखा कि मेरी नसीहत उसे बुरी लग रही है और वह मुझे स्वार्थी समझ रहा है तो मैं अपनी जान-पहचान के एक हाकिम के पास गया और अपने दोस्त की सब कहानी कह सुनाई। मेरी सिफारिश पर उसने उसे एक छोटी-सी नौकरी दे दी। थोडे ही दिनो बाद उसकी सच्चाई और ईमानदारी से प्रसन्न होकर उसने उसकी और तरक्की कर दी। धीरे-धीरे वह ऊंचे-से-ऊचे पद पर पहुच गया और बादशाह के विश्वास-पात्रो और नजदीक बैठने वालो मे शामिल हो गया। उसकी खुशहाली पर मुझे भी बडी खुशी हुई और मैने उससे कहा, 'आदमी को निराश नही होना चाहिए

---

1. जहर-मोहरा

न दिल ही तोड़ना चाहिए, क्योंकि आवेहयात[1] अंधेरे मे ही है।'

'मुसीबत के मारे इन्सान को रोना-चिल्लाना नही चाहिए, क्योंकि हर जगह खुदा का मेहरबानिया छिपी रहती है।'

'समय के फेर से मुह मत बिगाड, न मायूस होकर बैठ। सब्र कड़वा जरूर होता है; लेकिन उसका फल मीठा होता है।'

इस घटना के बाद मैं कुछ दोस्तों के साथ मक्का शरीफ की जियारत[2] के लिए चला गया। जब मैं लौटकर आया तो मेरा स्वागत करने सबसे पहले वही मेरा दोस्त आया। वह बहुत दुखी और परेशान मालूम होता था। उसकी फकीरों जैसी हालत हो गई थी। मैंने पूछा, "कहो भाई, क्या हाल-चाल है?"

वह बोला, "जो आप कह रहे थे वही हुआ। कुछ लोगो को मेरी उन्नति देखकर जलन हुई और उन्होंने मुझ पर सरकारी पैसा हड़प कर जाने का आरोप लगाया। बादशाह सलामत ने सच्चाई जानने की कोई कोशिश नही की। उधर मेरे पुराने साथी और जिन्हें मैं पक्का दोस्त मानता था, वे सब चुप रहे। किसी ने मेरे पक्ष मे कुछ नही कहा।"

"क्या तूने यह नही देखा है कि जब भाग्य किसी का साथ देता है, तो लोग भी उसकी प्रशसा करते है और सीने पर हाथ बाधकर उसकी आज्ञा का पालन करने को तैयार खड़े रहते है; परन्तु जैसे ही उसका पतन हो जाता है, तो दुनिया उसके सिर को पाव से ठुकराती है।"

"खुलासा यह है कि मुझे तरह-तरह की सजाए दी गई और जेलखाने मे डाल दिया गया। तब से मैं वही पड़ा हुआ था। इसी हफ्ते जब हाजी लोगों के सकुशल लौटने की खबर बादशाह को मिली तो उसने इस खुशी मे कैदियों को छोड़ देने का हुक्म दे दिया। मैं भी भारी बेड़ियो से मुक्त कर दिया गया और मेरी जायदाद मुझे लौटा दी गई।"

मैने उससे कहा, "उस वक्त तूने मेरी नसीहत नही मानी। मैंने तुझे चेतावनी दी थी कि बादशाह की नौकरी समुद्र मे व्यापारी बेड़े को चलाने जैसी है। उसमें खतरा भी है और फायदा भी। हो सकता है कि तू मालामाल हो जाए या फिर भवर मे फसकर जान से हाथ धो बैठे।"

"अगर तेरे कानो मे दूसरो की नसीहत घर नही करती तो फिर अपने

---

1. अमृत या जीवन जल, जिस तक पहुंचने का रास्ता बहुत अंधेरे में होकर जाता है।
2. तीर्थ-यात्रा

पैरों में बेडी देखने को तैयार रह।

"यदि तुझमे इतनी शक्ति नही है कि बिच्छू के डंक को दुबारा बर्दाश्त करे, तो उसके सूराख में उंगली मत डाल।"

कुछ सूफी लोग मेरे पास ठहरे हुए थे। देखने मे वे लोग बड़े भले मालूम होते थे और कई लोग उनसे प्रभावित भी हुए।

एक अमीर इन लोगो के बाहरी व्यवहार और आचार-विचार से बहुत खुश हुआ। उसने इनके लिए कुछ वजीफा निश्चित कर दिया।

कुछ ही समय पश्चात् इनमे से एक ने ऐसी हरकत कर दी जो फकीरों को नही करनी चाहिए थी। अमीर ने नाराज होकर उन सबका वजीफा बन्द कर दिया।

मैंने चाहा कि किसी तरह उन गरीबो की रोजी फिर से खुलवा दू। मैं उस अमीर के दरबार में पहुचा, लेकिन उसके दरबान ने मुझे अन्दर जाने से रोका और मेरे साथ बदतमीजी से पेश आया। मैंने सोचा कि इस दरबान का कोई दोष नही है, क्योकि समझदार लोगो ने कहा है, 'अमीर, वजीर और बादशाह के दरवाजे पर बिना किसी जरिए-वसीले के चक्कर नही काटना चाहिए जहा कुत्ते भी रहते है, और दरबान भी। दरबान तो गिरेबान पकड लेता है और कुत्ता दामन।'

जब अमीर के मुसाहिबों को मेरे आने का पता चला तो वे सम्मान के साथ मुझे अन्दर ले गए और मुझे बैठने के लिए ऊचा आसन देने लगे। मैंने नीचे ही बैठना पसन्द किया और कहा, "माफ कीजिए, मैं एक साधारण-सा मनुष्य हू। मुझे तो आप अपने गुलामो मे बैठने दीजिए।"

अमीर बोला, "सुबहान अल्लाह! यह आप क्या कह रहे हैं? आप मेरे सिर आंखों पर बैठें तो मैं अपने-आप को धन्य मानूगा और आपके नाज उठाऊगा, क्योकि आप मुझे बहुत प्रिय हैं।"

मैं उसके पास बैठ गया और धीरे-धीरे मतलब की बात पर आ गया। जब उन सूफियो की गलती का जिक्र आया तो मैंने कहा, "जिस मालिक ने इतने दिन इनाम-इकराम दिया, उसने उन गरीबो की क्या खता देखी, जो नजरो से गिरा दिया और उनकी रोटी बन्द कर दी? बडप्पन और उदारता तो खुदा को देखने योग्य है, कि इन्सान खता करता है और वह उसे फिर भी रोजी देता रहता है।"

अमीर पर इस बात का प्रभाव पड़ा। उसने उन सूफियों का वजीफा फिर से जारी करने का और जो रकम इस बीच उन्हें नही दी गई थी उसे भी चुकता करने का आदेश दिया।

मैंने उसके लिए उसे धन्यवाद दिया और साफ बात कह डालने के लिए नम्रता-पूर्वक क्षमा मांगी। मैंने कहा, 'काबा पहुंचने पर लोगों की मुरादें पूरी होती हैं, इसीलिए वहां हजारों कोस से लोग जियारत करने आते हैं। तुझे हम जैसों की बातें बर्दाश्त करनी चाहिए क्योंकि लोग उसी पेड़ पर ढेले मारा करते हैं, जिस पर फल होता है। बिना फल वाले पेड़ को कौन छेड़ेगा ?"

एक शहजादे ने बहुत बड़ा खजाना विरासत में पाया। उसने दिल खोल-कर दान करना शुरू कर दिया। प्रजा तथा सेना सन्तुष्ट हुई।

'अगर की डिबिया से तो किसी का हित नहीं होता। उसे खोल और अगर को आग पर रख तो सुगन्ध फैले।'

'यदि तुझे यश और बड़ाई चाहिए तो दानकर। जब तक अन्न के दाने बिखेरे नहीं जाते, वे फसल नहीं उगा सकते।'

उसके मुसाहिबों में एक मूर्ख ने उसे नसीहत देनी शुरू की, 'तेरे बाप-दादों ने यह दौलत बड़े परिश्रम से जमा की होगी और किसी जरूरत के लिए रखी होगी। तू इसे इस तरह मत लुटा। हो सकता है कि तुझे इसकी जरूरत पड़े, क्योंकि दुश्मन तेरे पीछे लगे हैं। ऐसा न हो कि जरूरत पड़ने पर तेरे पास धन की कमी हो जाए। ऐसी स्थिति में तू क्या करेगा ?

"यदि तू हर मांगने वाले को देने लगेगा तो तमाम खजाना खाली हो जाएगा और एक चावल के दाने से अधिक किसी के हिस्से में नहीं आएगा। तू हर व्यक्ति से जौ-जौ-भर चांदी वसूल करे तो रोज तेरे पास एक खजाना भर जाया करे।"

शहजादे को यह बात पसन्द नहीं आई। उसने मुंह फेर लिया और ऐसा कहने वाले को झिड़ककर कहा, "अल्लाह ताला ने मुझे इस दौलत का मालिक इसलिए बनाया है कि मैं स्वयं खाऊं और दूसरों को दान करूं, मैं चौकीदार नहीं हूं कि इस दौलत की रखवाली करता रहूं।"

'कारूं के पास चालीस खजाने भरे पड़े थे लेकिन वह कंजूस था। वह मर गया और लोग उसे भूल गये, न्याय-प्रिय नौशेरवां अमर है क्योंकि उसने दान तथा न्याय के कारण नाम कमाया था।'

कहते हैं कि न्याय-प्रिय नौशेरवां बादशाह जंगल में शिकार खेलने गया हुआ था। बावर्ची उसके भोजन के लिए कबाब तैयार कर रहे थे। संयोग की बात है कि उनके पास नमक की कमी पड़ गई। उन्होंने नौकरों को भेजा कि पास के गांव में जाकर नमक ले आयें।

नौशेरवां ने यह सुन लिया। उसने कहा, "नमक लाना लेकिन उसकी

कीमत जरूर देना। कहीं खराब रस्म पड़ गई तो गाव बरबाद हो जाएगा।"

लोगों ने कहा, "हुजूर, इतने-से नमक से क्या फर्क पड़ता है ?"

नौशेरवां बोला, "जुल्म की बुनियाद दुनिया में पहले थोड़ी-सी थी। फिर जो आया उसने उसे बढ़ाया ही। यहा तक कि यह नौबत आ पहुंची :

"यदि बादशाह किसी के बाग से एक सेब मुफ्त लेगा, तो उसके नौकर उस बाग के सब पेडो को साफ कर देंगे। यदि बादशाह किसी से पाच अंडे मुफ्त लेगा तो उसके सिपाही उस गरीब की हजार मुर्गिया काटकर उनका कबाब बना डालेंगे।'

एक हाकिम के बारे में मैंने सुना कि वह बादशाह के खजाने को भरने के लिए लोगो को लूट-लूटकर उन्हे तबाह करता था। उसने बुद्धिमानों की इस कहावत पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया कि जो व्यक्ति किसी दूसरे को खुश करने के लिए ऐसे कर्म करता है जिनसे अल्लाह नाराज हो जाए तो वह पापी है। अल्लाह ऐसे व्यक्ति का भाग्य उन्हीं लोगो के हाथ में दे देता है जिन पर उसने अत्याचार किया है, ताकि वे उससे बदला ले सकें और उसे बरबाद कर दें।

'जलती हुई आग राई के दाने को इतनी तेजी से नहीं जलाती जितनी तेजी से किसी दिल जले के दिल का धुआ दिल जलाने वाले जालिम को जलाता है।'

'लोग कहते हैं कि शेर सब जानवरो में श्रेष्ठ है, इसीलिए वह जगल का राजा कहलाता है और गधा जानवरो में सबसे निकम्मा, फिर भी मनुष्य उस बोझा ढोने वाले गधे को फाड़ खाने वाले शेर से उत्तम समझता है।'

'बेचारा गधा बुद्धि नहीं रखता; परन्तु बोझा ढोने के काम तो आता है, इसलिए सबको प्यारा है। बोझा ढोने वाले गधे और बैल उन लोगो से अच्छे हैं, जो दूसरों को सताते हैं।'

अब उस मूर्ख हाकिम की कहानी सुनिए। किसी तरह बादशाह को उसके कुकर्मों का पता चल गया। फिर क्या था! उस पर तरह-तरह के आरोप लगाए गए और इतनी यातनाएं दी गईं कि वह मर गया।

'बादशाह तुझसे उस समय तक खुश नही रह सकता जब तक तू उसकी प्रजा की सहानुभूति न पा ले। यदि तू चाहता है कि खुदा तुझ पर मेहरबान रहे तो तू उसके द्वारा पैदा किए गए इन्सानों के साथ भलाई कर।'

कहा जाता है कि उसकी लाश के पास से कोई उसी के जुल्म का मारा हुआ व्यक्ति गुजरा और उसे इस तबाही में पड़ा देखकर बोला, 'ऊंचे ओहदे पर पहुंचकर यदि तू अहंकारवश गरीबों और कमजोरो को लूटकर खाएगा,

तो वह माल तुझे हजम नही होगा। कठोर हड्डी को निगला तो जा सकता है, लेकिन जब वह अन्दर पहुचेगी, तो पेट को फाड़ डालेगी।'

'निर्दयी और अत्याचारी बहुत दिनों जिन्दा नही रहेगा; परन्तु उसकी निन्दा हमेशा होती रहेगी।'

एक सिपाही के बारे मे कहा जाता है कि उसने किसी फकीर के सिर पर पत्थर दे मारा। उस बेचारे मे बदला लेने की ताकत तो थी नहीं; उसने उसी पत्थर को सम्भालकर अपने पास रख लिया।

एक दिन ऐसा हुआ कि बादशाह को उस सिपाही पर क्रोध आ गया और उसने उसे एक कुए मे कैद करवा दिया।

उसी समय वह फकीर वहां पहुचा और उसने सिपाही के सिर पर वही पत्थर दे मारा।

सिपाही ने पूछा, "तू कौन है? और तूने मुझे पत्थर क्यो मारा?"

फकीर ने उत्तर दिया, "मै वही फकीर हू और यह वही पत्थर है जो उस दिन तूने मुझे मारा था।"

सिपाही बोला, "तू अब तक कहा रहा?"

फकीर बोला, "उस समय तेरी ताकत मे मै डरता था। अब, जबकि यहा तुझे कैद मे डाल दिया गया है तो मुझे भी बदला लेने का अवसर मिल गया।"

'जब तू किसी जालिम को ताकतवर देख तो चुप रह। बुद्धिमानो ने कहा है कि ऐसे समय पर उसके सामने झुक जाना ही ठीक है।'

'यदि तेरे पास फाड डालने वाले तेज नाखून नही हैं, तो उचित यही है कि तू दुष्ट लोगों से लडाई मोल न ले।'

'जो किसी फौलाद जैसे ताकतवर व्यक्ति के पजे से पंजा लड़ाता है वह अपने चादी के वरक जैसे नाजुक हाथ तुडवाता है।'

'तू उस समय तक धैर्य से प्रतीक्षा कर जब तक उसका दुर्भाग्य उसे गिरा न दे, फिर अपने साथियो की सहायता से उस दुष्ट का भेजा बाहर निकाल ले।'

एक बादशाह को ऐसा भयानक रोग लग गया जिसका न बताना ही अच्छा है। यूनानी हकीमो ने एकमत होकर कहा कि इस रोग का कोई इलाज नही। केवल एक चीज से लाभ हो सकता है। वह है किसी ऐसे आदमी का जिगर जिसमे हकीमो की बताई हुई कुछ विशेषताए हो।

बादशाह ने आज्ञा दी कि वैसा आदमी तलाश किया जाए। संयोग से एक गाव के जमीदार के लडके के जिगर मे वही विशेषताएं मिल गईं।

लड़के के मां-बाप को बुलाया गया। वे बहुत-सा धन पाकर उसके बदले में अपना बेटा देने को राजी हो गए। काजी ने भी फतवा[1] दे दिया कि बादशाह सलामत की जान बचाने के लिए एक आदमी का खून कर डालना उचित है।

जल्लाद उस लड़के के प्राण लेने के लिए आ खड़ा हुआ। लड़के ने आकाश की तरफ देखा और मुस्कराया।

बादशाह ने पूछा, "इस समय हंसने की क्या बात है?"

लड़का बोला, "बच्चा अपने मां-बाप पर नाज करता है क्योंकि वे प्यार से उसे पालते-पोसते हैं। यदि उसके साथ अन्याय होता है तो मां-बाप काजी के पास शिकायत लेकर जाते हैं और बादशाह से न्याय की मांग करते हैं। यहां हालत यह है कि मेरे मां-बाप ने धन के लोभ में आकर मेरे प्राण बेच दिए हैं, काजी साहब ने बादशाह को खुश करने के लिए फतवा दे दिया कि मेरा मारा जाना ही उचित है और बादशाह सलामत मेरी मृत्यु में ही अपना भला देख रहे हैं। ऐसी स्थिति में अल्लाह ताला के अलावा और कौन है जो मेरी रक्षा कर सके? ऐ बादशाह! मैं तेरे जुल्म की फरियाद और किससे करूं? तेरे जुल्म का इन्साफ मैं तुझी से चाहता हूं!"

यह सुनकर बादशाह का दिल भर आया। वह बोला, "इस निपरराध लड़के का खून बहाने से अच्छा है कि मैं मर ही जाऊं।"

बादशाह ने उसको गले से लगा लिया। उसके सिर और आंखों को चूमा। उसने उसे आजाद कर दिया और बहुत-सा धन भी दिया।

कहते हैं कि बादशाह का रोग उसी सप्ताह में जाता रहा और वह स्वस्थ हो गया।

उमरोलीस[2] का एक गुलाम भाग गया। कुछ लोग उसके पीछे लगा दिए गये और वे उसे पकड़कर ले आए। वजीर पहले से ही इस गुलाम से चिढ़ता था। उसने बादशाह को उसे मरवा डालने की राय दी जिससे दूसरे गुलाम कभी भागने का साहस न करें।

गुलाम ने जब यह सुना तो बादशाह के सामने अदब से अपना सिर जमीन पर रखकर बोला, "तू जो चाहे मेरे साथ कर, मैं तो गुलाम हूं। तेरे हुक्म के आगे कर ही क्या सकता हूं? लेकिन इतना जरूर कहना है कि मैं तेरे टुकड़ों पर पला हूं इसलिए नहीं चाहूंगा कि बिना उचित कारण के मेरा

1. धर्मशास्त्र का आदेश
2. फारस का एक बादशाह

खून बहाया जाए और उसका इल्ज़ाम कयामत के रोज तेरे ऊपर लगे। इस लिए पहले मुझे वजीर को मार डालने की इजाजत दे और फिर उस जुर्म पर मुझे मौत की सजा दे डाल ताकि तेरे हाथ से इन्साफ हो।"

बादशाह हंस पड़ा और वजीर से बोला, "कहिए, अब आपकी क्या राय है ?"

वजीर ने जवाब दिया, "ऐ दुनिया के मालिक ! अब मेरी राय यह है कि आप खुदा के वास्ते और अपने वालिद की कब्र के सदके में इस नालायक को आजाद ही कर दीजिए। ऐसा न हो कि यह मुझे किसी और मुसीबत में फंसा दे। मैंने गलती की जो अक्लमन्दों की बात पर यकीन नहीं किया। उन्होंने कहा है :

'जब ढेले फेंकने वाले से तू लड़ाई मोल लेगा तो बेवकूफी से अपना ही सिर फुड़वाएगा।'

'यदि तू किसी दुश्मन पर तीर चलाता है तो यह समझ ले कि तू भी उसके तीर का निशाना बनेगा।'"

रौजन[1] के बादशाह का एक वजीर था जो कुलीन और अच्छे स्वभाव का था। वह लोगों को उचित सम्मान देता था और पीठ पीछे किसी की बुराई नहीं करता था। एक बार बादशाह किसी बात पर उससे नाराज हो गया। उसने वजीर पर जुर्माना कर दिया और उसे जेल भिजवा दिया।

बादशाह के सिपाही वजीर से सहानुभूति रखते थे। वजीर ने उन पर कई उपकार कर रखे थे। उन्होंने जेल में भी उसके साथ अच्छा व्यवहार किया और कभी उसका दिल नहीं दुखाया।

'यदि तू शत्रु के साथ शान्ति से रहना चाहता है, तो चाहे वह पीठ पीछे तेरी बुराई करता फिरे, तू सदा उसके सामने उसके गुणों का ही बखान कर।'

'कड़वी बात हमेशा मुंह से ही निकलती है। यदि तू कड़वी बात नहीं सुनना चाहता, तो कहने वाले का मुंह मीठा कर दे।'

बादशाह ने वजीर पर जो आरोप लगाए थे उनमें से कुछ से तो वह छूट गया किन्तु कुछ ऐसे थे कि वह अपने निर्दोष होने का प्रमाण नहीं दे सका। इसलिए उसे जेल में ही रहना पड़ा।

इसी बीच पड़ोस के किसी दूसरे बादशाह ने चोरी-छिपे उसके पास सन्देश भेजा कि "तेरे बादशाह ने तेरा महत्त्व नहीं समझा और तेरा अप-

1. फारस का एक शहर

मान किया है।

"यदि तू हमसे मिल जाए तो हम तुझे कैद से छुड़वा देंगे और तुझे खुश रखने की पूरी कोशिश करेंगे। इस हुकूमत के बड़े हाकिम तुझसे मिलना चाहते है और जवाब का इन्तजार कर रहे है।'

वजीर ने जब यह सन्देश पढ़ा तो फौरन समझ गया कि कौन-सा संकट आने वाला है। उस ने उसी पत्र के पीछे एक छोटा-सा उत्तर लिखकर भेज दिया।

सयोग से बादशाह के किसी आदमी को पता चल गया और उसने बादशाह को सूचित कर दिया कि यह कैदी पडोस के बादशाह से पत्र-व्यवहार करता है।

बादशाह को बहुत क्रोध आया। उसने तुरन्त आदेश दिया कि इस जासूसी का पता लगाया जाए। पत्र ले जाने वाला आदमी पकड़ लिया गया। पत्र पढा गया। उसमे लिखा था, "आपने जो मेरी तारीफ की है, मैं उसके लायक नही हू और जो मेहरबानी आप मुझ पर करना चाहते हैं उसे मैं कबूल नही कर सकता। मैं इसी शाही खानदान के टुकड़ो पर पला हूं। यदि बादशाह ने किसी कारण मुझे थोडी-सी तकलीफ भी पहुंचाई है तो इसको लेकर मैं उसके पुराने अहसानों को नही भूल जाऊगा, मैं उसके साथ बेवफाई नही कर सकता।'

'जिस मेहरबान ने कदम-कदम पर तुझ पर मेहरबानी की हो, यदि वह [illegible] मे तुझ पर एक जुल्म भी कर दे, तो उसे माफ कर देना चाहिए।'

बादशाह को वजीर की यह बात बहुत अच्छी लगी। खुश होकर उसने इनाम और पोशाक दी और क्षमा मागते हुए कहा, 'मुझसे गलती हुई जो मैंने तुझ बेकसूर को सजा दी।"

वजीर बोला, "ऐ मालिक! इसमें आपका कोई कसूर नही। खुदा की मर्जी यही थी कि मुझे तकलीफ हो और जब तकलीफ़ मुझे पहुचनी ही थी तो अच्छा हुआ कि आपके हाथों पहुंची, जिनका मुझ पर पहले से ही हजारों अहसान हैं और जिन्होंने मुझे हजारो इनाम दिए हैं। अक्लमन्दो ने कहा है, 'यदि दुनिया वालों से तुझे तकलीफ पहुचे, तो दु.खी मत हो, क्योंकि दुनियावाले न किसी को तकलीफ पहुचा सकते हैं और न आराम।"

'दोस्त या दुश्मन खुदा की मर्जी से ही बन जाया करते हैं क्योंकि सबके दिल उसी के कब्जे में हैं।'

'तीर यों तो कमान से निकलता है; किन्तु अक्लमन्द उसे कमान चलाने वाले की तरफ़ से ही आया हुआ मानते हैं।'

मैंने अरब के एक बादशाह के बारे में सुना कि उसने हुक्म दिया, "अमुक व्यक्ति की तनख्वाह दुगुनी कर दी जाए क्योंकि वह दरबार में बराबर हाजिर रहता है और हमारे हुक्म का इन्तजार करता रहता है, जबकि दूसरे नौकर मौज-मजा करते हैं और हमारी खिदमत करने में सुस्त हैं।"

एक खुदापरस्त[1] ने यह सुना तो मारे खुशी के शोर मचाने लगा। लोगों ने उसकी खुशी का कारण पूछा तो उसने कहा, 'खुदा भी अपने बन्दों का दर्जा इसी तरह ऊंचा करता है।'

'यदि कोई दो दिन सुबह-सुबह बादशाह के दरबार में सलाम करने जाता है तो तीसरे दिन बादशाह उसकी तरफ मेहरबानी से जरूर देखेगा।'

'सच्चे दिल से खुदा की इबादत करने वाले को यह उम्मीद रहती है कि वह उसकी चौखट से नाउम्मीद नहीं लौटेगा।'

'हुक्म बजा लाने से ही दर्जा बढ़ता है और हुक्म न मानना उन्नति से वंचित रहना है।'

'जो सच्चे लोगों का अनुकरण करना चाहता है, वह सेवा के भाव से अपना सिर मालिक की चौखट पर झुकाए रखता है।'

एक धनवान व्यक्ति बड़ा जालिम था। उसके बारे में बताया जाता है कि वह गरीब मजदूरों से कम दाम में लकड़ियां खरीदकर उन्हें भारी मुनाफे के साथ मालदार लोगों को बेच देता था।

एक फकीर ने उस जालिम के पास जाकर कहा, "तू सांप तो नहीं कि जिसको देखता है उसे डस लेता है? या तू उल्लू है कि जहां बैठता है, उस जगह को उजाड़ कर देता है?"

'अगर तेरा जोर हम पर चल गया तो क्या उस खुदा पर भी चल जाएगा, जो गैब[2] की बात जानता है?

"जमीन वालों पर जुल्म न कर, नहीं तो लोगों की बद-दुआएं आसमान तक जा पहुंचेंगी।"

धनवान व्यक्ति को ये बातें बुरी लगीं। उसने मुंह फेर लिया और फकीर की नसीहत पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह उसी तरह से गरीबों पर जुल्म करता रहा।

एक रात उसके रसोई-घर में रखी हुई लकड़ियों में आग लग गई। उसके पास जो भी सामान था वह सबका सब इस आग में जल गया।

1. ईश्वर-भक्त
2. भाग्य

वह इतना गरीब हो गया कि नर्म बिस्तरों की जगह अब गर्म राख में बैठने की नौबत आ पहुंची।

एक बार वही फकीर उसके पास से गुजरा। उसने सुना कि वह अपने दोस्तों से कह रहा था, "मैं यह नही जान सका कि मेरे घर मे यह आग कहां से लगी ?"

फकीर बोल पडा, "गरीबों के दिल के धुएं से।"

'जख्मी दिलो के धुए से डरता रह। *अन्दर का जख्म कभी-न-कभी* जाहिर जरूर होता है।'

'जहा तक हो सके, किसी का दिल न दुखा। तू नही जानता कि एक आह सारे जहान को तबाह कर देती है।'

कैखुसरू[1] के महल की महराब पर लिखा था .

'लम्बी उम्र पाने और बहुत सालों तक जीने मे क्या फायदा, जब जमीन के नीचे दफन हो जाने के बाद दुनिया वाले हमारे सिरो पर पांव रखकर चलेंगे।'

'यह मुल्क हाथो-हाथ जिस तरह हमारे पास आया है, उसी तरह दूसरे हाथों मे चला जाएगा।'

एक पहलवान कुश्ती लडने मे बहुत माहिर था। वह तीन सौ साठ दाव-पेंच जानता था और हर रोज कोई नया पैंतरा दिखाया करता था। उसका एक शागिर्द भी था जिसे वह बहुत चाहता था। उसने शागिर्द को [illegible] सौ उनसठ दाव-[illegible] सिखा दिये थे किन्तु एक जो बच रहा था, उसे [illegible] वह आनाकानी करता रहा।

कुछ समय बाद वह शागिर्द भी ताकत और हुनर के लिए मशहूर हो गया। कोई भी उसका मुकाबला करने को तैयार न होता था। धीरे-धीरे उसे इतना घमड हो गया कि वह बादशाह के पास जाकर बोला, "हुजूर, उस्ताद की इज्जत मैं इसलिए करता हू क्योकि वह मेरे बुजुर्ग हैं और उन्होने मुझे पाला-पोसा है। मैं ताकत मे उनसे कम नही हू और जहां तक हुनर का सवाल है मैं उनके बराबर ही हूं।"

बादशाह को लड़के की यह बात बुरी लगी। उसने दोनों के बीच कुश्ती करवाने का हुक्म दे दिया। कुश्ती के लिए एक बड़ा अखाड़ा तैयार किया गया। सारे दरबार के लोग उस मुकाबले को देखने के लिए एकत्र हुए। दुनिया-भर के पहलवान भी दर्शकों मे शामिल हो गए। लडका मस्त हाथी

1. एक बादशाह का नाम

की तरह इतने तेजी के साथ अखाड़े में आया कि यदि उसके सामने कामि का पहाड़ होता तो वह उसे भी उखाड़ फेंकता ।

उस्ताद समझ गया कि लड़के में उससे ज्यादा ताकत है इसलिए उसे हरा पाना कठिन होगा । चूंकि उसने एक दांव उस लडके को अभी तक नहीं सिखाया था जिस दांव से उसने लड़के का मुकाबला किया । लड़का इस दांव का काट नही जानता था । बेचारा परेशान हो गया । उस्ताद ने दोनों हाथो से उसे अपने सिर के ऊपर उठा लिया और जमीन पर दे पटका ।

लोगो ने खुशी से शोर मचाया । बादशाह ने प्रसन्न होकर उस्ताद को इनाम और पोशाक दी । उस लडके को उसने फटकारा, "तूने अपने उस्ताद से ही मुकाबले का दावा किया और फिर कुछ कर भी न सका !"

लडके ने उत्तर दिया, "ऐ दुनिया के मालिक ! उस्ताद ने मुझे ताकत से नही जीता है। इन्होने कुश्ती का एक दांव मुझसे छिपा रखा था और तमाम उम्र उसे सिखाने मे टाल-मटोल करते रहे । आज उसी दांव से इन्होंने मुझे हरा दिया ।"

उस्ताद ने कहा, "मैंने इसी दिन के लिए यह दाव इससे बचाकर रखा था । अक्लमन्दों ने कहा है, 'दोस्त को इतनी ताकत न दे कि यदि वह चाहे तो तुझसे दुश्मनी कर सके ।' क्या तूने नहीं सुना कि एक व्यक्ति ने अपने हाथों पाले हुए बच्चे की बेवफाई देखी तो क्या कहा था? उसने कहा था — या तो दुनिया मे वफा थी ही नही या थी तो शायद किसी ने कभी की ही नहीं ।"

'मुझे आज तक ऐसा कोई व्यक्ति नही मिला, जिसने मुझसे तीर चलाना सीखकर, मुझे ही निशाना न बनाया हो ।'

एक फकीर जगल के एक कोने में अकेला बैठा हुआ था । उधर से एक बादशाह गुजरा । फकीर ने उसकी ओर कोई ध्यान नही दिया क्योकि फकीरो की दौलत उनका सन्तोप है । उन्हें बादशाह से क्या लेना-देना ?

बादशाह का रोब फकीर पर न चला । यह देखकर उसे क्रोध आ गया । वह कहने लगा, "ये गुदड़ी पहनने वाले जानवर है । न इनमें लियाकत है और न इन्सानियत !"

बादशाह के साथ उसका वजीर भी था । वह फकीर के पास आकर बोला, 'खुदा के बन्दे ! दुनिया का मालिक बादशाह तेरे पास से गुजरा पर तूने उसका अदब नहीं किया और न कोई खिदमत की !'

फकीर बोला, "बादशाह से कह देना कि वह अदब और खिदमत की उम्मीद उससे रखे जिसे उससे कुछ इनाम पाने की गरज हो । दूसरी बात

यह कि बादशाह रिआया की हिफाजत के लिए होता है। रिआया उसकी खिदमत और हुक्म बजा लाने के लिए नहीं होती।"

'बादशाह फकीर का चौकीदार है। उसकी दौलत और रोब के कारण तमाम लोग उसके ताबेदार भले ही हों।'

'भेड़ चरवाहे के लिए नहीं होती। चरवाहा उसकी देखभाल के लिए होता है।'

'यदि एक को अपनी इच्छा के अनुसार सब कुछ मिला हुआ है और दूसरे का दिल रंज और तकलीफ में जख्मी हो रहा है, तो थोड़े दिन ठहर जा। तू देखेगा कि जालिम के सिर को मिट्टी खा गई।'

'जब लिखी हुई तकदीर सामने आती है तो बादशाहत और गुलामी का भेद मिट जाता है। यदि कोई कब्रों को खोदकर देखे तो अमीर और फकीर में अन्तर करना संभव नहीं होगा।'

बादशाह को फकीर की बात अच्छी लगी। उसने फकीर से कहा, "मुझसे कुछ मांग?"

फकीर बोला, "मैं तुझसे यही चाहता हूं कि तू दुबारा आकर मुझे परेशान न करो।"

बादशाह ने कहा, "अच्छा, तो मुझे कुछ नसीहत कर।"

फकीर बोला, "कुछ कर ले, क्योंकि अभी तो दौलत तेरे पास है। दौलत और मुल्क हाथों-हाथ चलते रहते हैं, सदैव किसी एक के पास नहीं [illegible]।"

एक वजीर हजरत जुन्नून मिसरी[1] के पास गया और उनसे कहा, "मैं दिन-रात अपने बादशाह की खिदमत में लगा रहता हूं। सदा उसकी भलाई चाहता हूं। परन्तु, मुझे उसके क्रोध से हमेशा डर लगा रहता है।"

हजरत जुन्नून यह सुनकर रो पड़े और बोले, "यदि मैं भी उस खुदा से, जो सबसे बड़ा है और सब कुछ कर सकता है, इतना ही डरता, जितना तू अपने बादशाह से डरता है तो मैं उसके सबसे प्यारे और सच्चे बन्दों में होता।"

'यदि फकीर आराम और तकलीफ की परवाह करना छोड़ दे, तो उसका दर्जा बहुत ऊंचा उठ जाए और उसके कदम आसमान पर पहुंच जाएं।'

'यदि वजीर खुदा से उतना ही डरे, जितना बादशाह से डरता है, तो

1. मिस्र के एक बड़े सन्त

वह फरिश्ता हो जायेगा।'

एक बादशाह ने किसी कैदी को कत्ल करने का हुक्म दे दिया।

कैदी ने कहा, "ऐ बादशाह ! तू मुझ पर जो गुस्सा दिखा रहा है इस का इलजाम अपने ऊपर मत ले। तेरी यह सजा मेरे ऊपर से एक पल मे गुजर जाएगी पर उसका इलजाम तेरे सिर हमेशा रहेगा।"

'जिन्दगी का समय जंगल की हवा की तरह गुजर गया। सुख-दुख, अच्छा-बुरा सब गुजर गया। जालिम ने समझा कि उसने मुझ पर जुल्म कर लिया। वह जुल्म मुझ पर से तो गुजर गया, मगर उसका इलजाम जालिम की गर्दन पर हमेशा सवार रहा।"

बादशाह को कैदी की नसीहत पसन्द आई और उसने उसे माफ कर दिया।

नौशेरवां के वजीर राज्य की किसी समस्या पर उसके साथ विचार-विमर्श कर रहे थे। सभी अपनी-अपनी राय दे रहे थे। बादशाह ने भी अपना विचार रखा।

उसके एक वजीर बुजुरचे महर को केवल बादशाह की राय पसन्द आई। दूसरे वजीरों ने उसे अलग ले जाकर पूछा, "इतने अक्लमन्द लोगों के मुकाबले मे तूने बादशाह की ही राय क्यों पसन्द की ?"

उसने उत्तर दिया, "और कारण तो मैं बता नही सकता। हां, एक बात जरूर है, और वह यह कि दूसरों की राय का ठीक बैठना-न-बैठना खुदा के हाथ की बात है। बादशाह की राय मान लेना ही अच्छा है। यदि वह गलत भी बैठी तो उसकी हां मे हां मिलाने के कारण मैं उसके क्रोध से तो बचा रहूगा।"

अक्लमन्द लोगो ने कहा है, 'बादशाह की राय के खिलाफ राय देना अपने ही खून से हाथ धोना है। यदि बादशाह दिन को कहे कि रात है तो हमे कह देना चाहिए, हा हुजूर, "यह रहा चाद और वह रही सुरैया।"[1]

एक मक्कार ने ढोंग रचा और सय्यदों की तरह बाल बाध लिए। वह लोगो से कहने लगा कि वह अलवी है और हजाज के एक काफिले के साथ हज करके लौटा है। उसने बादशाह की प्रशसा मे एक कसीदा[2] पढ़कर सुनाया और कहा कि यह उसी ने लिखा है। बादशाह प्रभावित हुआ और

1. कृतिका नक्षत्र
2. प्रशस्ति-गीत

उसने उसे बहुत-सा इनाम दिया और सम्मान भी।

कुछ समय तक बादशाह की कृपा उस पर बनी रही लेकिन अन्त मे बादशाह के एक मुसाहिब ने उसकी पोल खोल दी। उसने बताया, "मैं इसी वर्ष समुद्री यात्रा करके लौटा हूं और मैंने इस व्यक्ति को बकरीद के अवसर पर बसरा में देखा था। यह तो हाजी नही है।"

एक अन्य दरबारी ने कहा, "मैं भी इसे पहचानता हूं। इसका पिता मलातिया मे एक ईसाई था।"

अब तो सबको मालूम हो गया कि वह व्यक्ति न किसी अच्छे वंश का मुसलमान था और न कोई शायर। उसके पढ़े हुए अशआर[1] अनवरी[2] के दीवान मे मिल गए। बादशाह उसके झूठ बोलने से बहुत नाराज हुआ। उसने हुक्म दे दिया कि उसे मार-मारकर शहर से बाहर निकाल दिया जाए।

वह व्यक्ति गिडगिडाकर बोला, "ऐ दुनिया के मालिक, बादशाह! मुझे एक बात और कहनी है। हुक्म हो तो कहूं। यदि वह सच न निकले, तो आप मुझे जो चाहे सजा दें।"

बादशाह ने पूछा, "वह क्या बात है?"

उसने कहा, "गरीब छाछ बेचने वाला, जब आपके सामने छाछ लाता है, तो उसमे एक चमचा दही होता है और दो प्याले पानी। यदि सच्ची बात आप सुनना चाहते है, तो मुझसे सुनिए। जिसने जितनी अधिक दुनिया देखी है, वह उतना ही अधिक झूठ बोलता है क्यो?"

बादशाह को हसी आ गई और वह बोला, 'शायद इससे ज्यादा सच्ची बात तूने उम्र-भर कभी नहीं कही होगी।"

उसने हुक्म दिया, "इस शख्स की जो भी इच्छा हो वह पूरी कर दी जाए और इसे हसी-खुशी विदा कर दिया जाए।"

हारुन-अल-रशीद का पुत्र क्रोध मे भरा हुआ उसके पास आकर बोला, "उस सिपाही के बेटे ने मुझे मा की गाली दी है।"

बादशाह ने दरबारियों से पूछा, "इस जुर्म की क्या सजा दी जाए?"

एक ने राय दी कि मुजरिम को कत्ल कर दिया जाए। दूसरे की राय थी कि उसकी जबान कटवा दी जाए। तीसरे ने कहा कि उसकी जायदाद जब्त करके उसे शहर से निकलवा देना चाहिए।

---

1. शेर का बहुवचन
2. फारसी का प्रसिद्ध कवि

हारून-अल-रशीद को किसी की राय पसन्द नही आई। वह अपने पुत्र से बोला, "शराफत तो यह है, कि तू उसे माफ कर दे। यदि इतना नही कर सकता तो तू भी उसे मां की गाली दे ले। इससे आगे न बढ़, नही तो फिर जुल्म तेरी तरफ से होगा और इन्साफ के लिए दावा उसकी तरफ से।"

'बुद्धिमान उसे बहादुर नही मानते जो मस्त हाथी से लड़े। सच्चा बहादुर वह है, जो क्रोध आने पर भी अनाप-शनाप नही बकता।'

मैं कुछ बुजुर्ग लोगों के साथ किश्ती मे सवार था। हमारे पीछे एक छोटी किश्ती नदी मे डूब गयी। दो भाई उसमे से गिरकर एक भंवर में फस गए।

एक बुजुर्ग ने मल्लाह से कहा, "जा, उन दोनों आदमियों को निकाल ला। मैं तुझे हरेक के लिए पचास-पचास दीनार दूंगा। मल्लाह पानी मे कूद पडा। वह एक को बचा लाया। दूसरा डूबकर मर गया।

मैंने कहा, "उस दूसरे की उम्र बाकी नही रह गई थी। इसीलिए तूने उसको बचाने मे सुस्ती की और इसे जल्दी से निकाल लाया।"

मल्लाह हंसा और बोला, "आपने जो कहा वह भी ठीक है। वैसे इसकी एक और वजह भी थी।"

मैंने पूछा, "वह क्या ?"

वह बोला, "मेरी इच्छा भी केवल इसी को बचाने की थी, क्योंकि एक बार मैं जगल मे थक गया था तो इसने मुझे अपने ऊंट पर बिठा लिया था जबकि उस दूसरे ने एक बार मुझे कोड़े मारे थे।"

मैंने कहा, "अल्लाह ताला ने सच फरमाया है कि जो नेक काम करता है वह अपने लिए करता है और जो बुराई करता है वह भी अपने ही लिए करता है।"

'जहा तक हो सके किसी का दिल न दुखा क्योंकि इस रास्ते मे कांटे बहुत है।'

'जरूरतमन्द फकीर का काम निकाल दे क्योंकि तेरे भी बहुत से काम दूसरों से पड़ेंगे।'

दो भाई थे। एक बादशाह की नौकरी करता था और दूसरा मेहनत-मजदूरी करके रोटी कमाता था। शाही नौकरी करने वाले अमीर भाई ने अपने गरीब भाई से कहा, "तू भी बादशाह की नौकरी क्यो नही कर लेता ? उससे तुझे इस कड़ी मेहनत से छुटकारा मिल जाएगा।"

उसने उत्तर दिया. "तू ही मेहनत करके क्यों नही कमाता ? इससे

तुझे दासता और अपमान से छुटकारा मिल जाएगा।"

समझदारों का कहना है कि 'सुनहरी पेटी बांध कर बादशाह के दरबार मे दिन भर खडे रहने स कही अच्छा है कि तू जौ की रूखी रोटी खाकर सन्तोष से बैठा रह।'

'सीने पर हाथ बाधकर अमीर के सामने खडे होने से कहीं अच्छा है हाथो से काम करके रोटी कमाई जाए, चाहे वह गरम चूने को गूंथने का ही काम क्यो न हो।'

'ऐ इन्सान! तूने अपनी कीमती उम्र इसी मे खत्म कर दी कि गर्मियों मे क्या खाऊ, और जाडो मे क्या पहनू। ऐ बेशर्म! एक ही रोटी पर सन्तोष कर ले, ताकि तुझे दूसरो की गुलामी मे अपनी कमर न झुकानी पड़े।'

नौशेरवां बादशाह के पास कोई व्यक्ति यह खुशखबरी लेकर आया कि "हुजूर के अमुक दुश्मन को अल्लाह ने इस दुनिया से उठा लिया।"

नौशेरवा बोला, "क्या तूने यह भी सुना कि अल्लाह मुझे छोड देगा? अगर दुश्मन मर गया तो इसमे खुशी की क्या बात है? हम क्या हमेशा जिन्दा रहेगे?"

कुछ बुद्धिमान लोग नौशेरवा के दरबार मे किसी समस्या पर विचार कर रहे थे। उन सब मे श्रेष्ठ था बजुरचे महर, जो बिलकुल चुप बैठा था।

लोगों ने उससे कहा, "आप इस बात-चीत मे हिस्सा क्यो नही लेते?"

वह बोला, "वजीरो और हकीमो का काम एक जैसा है। हकीम उसी [illegible] है जो बीमार होता है। जब मैं देख रहा हू कि जो कुछ तुम कह रहे हो वह ठीक है तो मैं बेकार मे अपनी राय देने की मूर्खता क्यो करू? जो, काम मेरी सलाह के बिना चल जाए उसमे मुझे बोलना नही चाहिए। लेकिन यदि मैं देखू कि अधा जा रहा है और सामने कुआं है, तो मेरा चुप बैठे रहना गुनाह है।"

खलीफा हारून-अल-रशीद ने जब मिस्र का मुल्क जीतकर उस पर कब्जा कर लिया तो उसे अपने एक मामूली-से गुलाम को सौंप दिया। वह वहां के हारे हुए बादशाह फिरऔन को ही उसका मुल्क लौटा सकता था किन्तु उसने ऐसा नही किया। कारण यह था कि फिर औन को इतना अहंकार हो गया था कि वह ईश्वर होने का दावा करने लग गया था। जिस गुलाम को यह मुल्क दे दिया गया था वह एक हब्शी था और उसका नाम था खजीब।

लोग कहते हैं कि इस गुलाम के पास अक्ल बिलकुल नही थी। लोग उसकी बातो पर हंसते थे।

एक बार कुछ किसान उसके पास फरियाद लेकर आए कि उन्होंने नील नदी के किनारे खेती की, लेकिन वर्षा और बाढ के कारण उसकी फसल बरबाद हो गई।

हब्शी बोला, "तुम्हे ऊन की खेती करनी चाहिए थी। यह कभी तबाह न होती।"

एक बुजुर्ग ने यह बात सुनकर कहा, "दरअसल अक्ल और रोजी का कोई ताल्लुक नही। यदि रोजी अक्ल के बढने के साथ ही बढ़ती तो बेवकूफों से ज्यादा और कौन दुखी होता? लेकिन रोजी पहुचाने वाला बेवकूफों को इस तरह रोजी पहुचाता है कि उसे देखकर अक्लमन्द भी हैरत मे पड जाते हैं। नसीबा और दौलत अक्ल और हुनर से नही मिलते। ये चीजे तो अल्लाह के करम से ही मिलती हैं।"

'कीमिया[1] बनाने वाला बेचारा मेहनत करते-करते मर गया और बेवकूफ को वीराने मे खजाना मिल गया।'

'जिनमे कोई अक्ल और तमीज नही थी उन्हे तो ऊंचा दर्जा मिल गया; लेकिन अक्लमन्द नीचा और जलील रहा।'

स्कन्दर रूमी से लोगो ने पूछा कि पूरब और पश्चिम के मुल्को को तूने कैसे जीता? जब कि तुझसे पहले के बादशाह इन्हे नही जीत सके। उन बादशाहो के पास तुझसे अधिक धन और सेनाए थी और वे बहुत लम्बे समय तक जीवित भी थे।

उसने उत्तर दिया, "उस खुदा की मदद से, जो सबसे बडा है। मैंने जो मुल्क जीता उसकी प्रजा को नही सताया, वहा के बुजुर्गों द्वारा डाली गई अच्छी रस्मो को नही खत्म किया और वहा के पुराने बादशाहो के नामों को हमेशा सम्मान के साथ याद किया।"

'अक्लमन्द लोग उस आदमी को बड़ा नहीं मानते जो बड़ो का नाम उपेक्षा से लेता है।'

'तकदीर, तख्त, बादशाही शान-शौकत, हुक्म, रोब और पकड-धकड। ये चीजें टिकने वाली नही हैं इसलिए किसी काम की नही।'

'पुराने लोगो के अच्छे नाम को मत बिगाड ताकि तेरा नेक नाम कायम रहे।'

---

1. रसायन से सोना बनाने की कला

फकीरी

एक बड़े आदमी ने किसी नेक बुजुर्ग से पूछा, "उस खुदापरस्त के बारे में आपकी क्या राय है ? दूसरे लोग तो उसकी बुराई करते हैं।"

बुजुर्ग ने कहा, "उसके ऊपरी रहन-सहन में मुझे कोई बुराई नहीं मिली और अन्दर का हाल मैं जान नहीं सकता। जो फकीरों के से कपड़े पहने हो उसे तू फकीर ही जान और उसके बारे में अच्छा ख्याल रख। जब तुझे नहीं मालूम कि उसके भीतर कैसे विचार भरे हुए हैं तो चुप रह। कोतवाल को किसी के घर के अन्दर की बातों में क्या मतलब ?"

मैंने एक फकीर को देखा जो काबा[1] की चौखट पर माथा रगड़ रहा था। वह रो-रोकर कह रहा था, "ऐ कुसूरों को माफ करने वाले ! और ऐ रहम करने वाले ! तू तो जानता है कि मैं कितना जालिम और गुमराह हूं। मुझसे क्या भलाई हो सकती है ? मैं माफी चाहता हूं कि मैं तेरी खिदमत नहीं कर सका। तेरी इबादत में तो मेरा भरोसा ही नहीं रहा। पापी लोग पाप न करने की कसम खाते हैं और खुदा तक पहुंचे हुए इबादत के ऊपरी ढोंग छोड़ने की। कुछ खुदा की इबादत करने वाले अपनी इबादत का बदला चाहते हैं, जिस तरह सौदागर अपने माल की कीमत चाहता है। लेकिन मैं तेरा गुलाम तेरे रहम की भीख मांगता हूं न इबादत का बदला और न कीमत। तू मेरे साथ वह कर जो तू कर सकता है न कि वह जिसके लायक मैं हूं। चाहे तू मार डाल और चाहे माफ कर दे। मेरा सिर तेरी चौखट पर रखा हुआ है। मैं तो तेरा गुलाम हूं। गुलाम की क्या मर्जी चल सकती है ? तू जो हुक्म देगा मैं उसी पर सब्र कर लूंगा।"

---

1. मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थ-स्थान

मैंने काबे के दरवाजे पर एक फकीर को देखा जो यह कह कर खूब रो रहा था, "मैं यह नही कहता कि तू मेरी बन्दगी कुबूल कर ले। हां, मेरे गुनाहो पर माफी की कलम जरूर फेर दे।"

लोगो ने शेख अब्दुल कादिर गैलानी को देखा कि वह काबे की चहारदीवारी के अन्दर अपना सिर कंकड़ियों पर रखे कह रहे थे, "ऐ खुदा ! बख्श दे ! और यदि मैं सजा के लायक हूं तो कयामत के दिन मुझे अंधा बनाकर उठाना, ताकि भले आदमियों के सामने मुझे शर्मिन्दा न होना पड़े।"

सुबह के वक्त जब हवा चलती है तो मैं अपना माथा खाक के ऊपर टेककर कहता हू, "ऐ मालिक ! मैं तो तुझे कभी नही भूलता। क्या तुझे भी कभी अपने गुलाम की याद आती है ?"

एक चोर किसी फकीर के घर में घुसा और बहुत देर तक सामान ढूंढता रहा। जब कुछ नही मिला तो उसे बड़ा दुख हुआ। फकीर को जब यह मालूम हुआ तो उसने अपना कम्बल, जिसमे वह लिपटा हुआ पड़ा था, निकालकर चोर के सामने फेंक दिया, ताकि वह खाली हाथ न जाए।

मैंने सुना कि खुदा के रास्ते पर चलने वाले उसके सच्चे बन्दे दुश्मनों के दिल को भी नहीं दुखाते। तू उनके रास्ते पर कैसे चल सकता है ? जब कि तू अपने दोस्तो से भी लड़ता रहता है ?

'सच्चे लोगों की दोस्ती ऐसी नही होती कि तेरे सामने वे तुझ पर कुर्बान जाएं और तेरे पीछे तेरी बुराई करें। ऐसे लोग तेरे सामने तो ऐसे सीधे बन जाते है, जैसे कमजोर बकरी और तेरे पीछे ऐसे खूखवार हो जाते हैं जैसे आदमी को फाड़ खाने वाला भेड़िया।'

'जो दूसरों की बुराई तेरे सामने करता है, वह तेरी बुराई दूसरों के सामने जरूर करेगा।'

कुछ फकीर साथ-साथ सफर कर रहे थे। आराम-तकलीफ जो भी मिले, आपस मे बांट लेते। मैने चाहा कि मैं भी उनके साथ हो लू किन्तु वे इसके लिए राजी न हुए।

मैंने कहा, "यह भले आदमियों का दस्तूर नही है कि अपनी [illegible] दूसरो को वंचित रखें। मैं ताकत और [illegible] से आपका साथ दूंगा। मेरा शामिल [illegible] लोगो पर बोझ नही बनूगा। अगर मैं [illegible] नहीं चलूगा तो मैं रास्ते में आप [illegible] रहूंगा।"

उन लोगो मे से एक बोला, "हमने तुझसे जो कुछ कहा है उसका बुरा न मान। वजह यह है कि इसी सफर में एक दिन एक चोर फकीरों के वेश मे आ गया और वह हम लोगो मे घुल-मिल गया। हम लोग क्या जानें कि किस वेश मे कौन छिपा हुआ है? यह तो लिखने वाला ही जानता है कि लिफाफे के अन्दर बन्द खत मे क्या लिखा है। फकीर लोग वेचारे सीधे-सादे होते है। हमने उस चोर पर सन्देह भी न किया और उसे अपना मित्र बना लिया।"

'फकीर अपनी गूदडी से ही पहचाने जाते हैं, चाहे वह गूदड़ी दुनिया को दिखाने के लिए ही क्यो न हो।'

'ऐ इन्सान! तू अपना दिल साफ रख और नेक काम में लगा रह। कपडे चाहे कोई भी पहन। चाहे सिर पर ताज रख और चाहे कंधे पर शाही झंडा।'

'फकीरी तो ससार का लोभ और काम वासना छोड देने में है, फकीरी कपडे पहनने मे नही।'

'कजागद[1] के पीछे मर्द की बहादुरी भी तो होनी चाहिए। हिजडे को हथियारों से लाद देने से क्या लाभ?'

"हम लोगों ने एक दिन और एक रात तक सफर किया। रात में हम एक किले की दीवार के नीचे सोए हुए थे कि उस चोर ने हमारे एक साथी से लोटा मागा कि मै इस्तन्जा[2] को जा रहा हूं। उसे लोटा मिल गया तो वह उसके अलावा कुछ और सामान भी उठाकर चम्पत हो गया।"

"उस मक्कार फकीर को देखो जिसने ऊपर से गूदड़ी पहन रखी है और काबे के पवित्र कपडे से गधे की झूल का काम ले रहा है।"

"हमारा साथ छोडने के बाद वह शाही महल मे घुसा। उसने वहां से भी एक डिबिया चुराई और फिर भागा। दिन निकलने तक वह काफी दूर पहुच चुका था। हम लोग अभी तक सो ही रहे थे। सुब्ह होने पर बादशाह के सिपाहियो ने हमे पकड लिया और गिरफ्तार करके किले के अन्दर ले गए। वहा हमारी खूब पिटाई हुई और हमे कैदखाने मे डाल दिया गया। उसी दिन से हमने किसी को अपने साथ लेना छोड दिया, क्योंकि सलामती अलग रहने मे ही है।"

"अगर किसी कौम में एक आदमी भी कोई बुरा काम करता है, तो

---

1. योद्धाओ का वस्त्र
2. लघुशंका के बाद स्वच्छ होने के लिए

पूरी कौम बदनाम हो जाती है, फिर न छोटे की इज्जत रहती है और न बड़े की।"

"क्या तूने यह नहीं देखा है कि चरागाह के अन्दर अगर एक बैल घुस आता है तो वह गांव की सब गायों को खराब कर देता है?"

यह घटना सुनकर मैंने कहा, "अल्लाह बड़ा मेहरबान है। उसका लाख लाख शुक्र है कि उसने मुझे फकीरों के अनुभव से लाभ उठाने का अवसर दिया। ऐ फकीरो! भले ही मुझे तुम्हारे साथ रहने का मौका नहीं मिला, लेकिन तुमने जो कहानी सुनाई, उससे तो मुझे लाभ ही हुआ। यह शिक्षा जीवन-भर मेरे काम आएगी।"

"मजलिस में अगर एक बदतमीज आकर बैठ जाए, तो उससे शरीफ लोगों को बहुत तकलीफ पहुंचती है। हौज को चाहे ऊपर तक गुलाब-जल से भर दिया जाए; परन्तु उसमें एक कुत्ते के गिर जाने से वह गन्दे पानी का चहबच्चा बन जाता है।'

एक आबिद[1] किसी बादशाह के यहां मेहमान था। जब सब लोग खाने पर बैठे तो उसने सबसे कम खाया और जब सब लोग नमाज पढ़ने लगे तो उसने सबसे ज्यादा देर तक नमाज पढ़ी जिस से लोग उसे बड़ा पहुंचा हुआ खुदापरस्त समझें।

"ऐ दहकान[2]! मुझे डर है कि तू काबे तक नहीं पहुंच सकेगा, क्योंकि जिस रास्ते पर तू चल रहा है, वह तुर्किस्तान जाता है।"

जब आबिद अपने घर पहुंचा तो फौरन उसने खाना मांगा। उसका पुत्र बड़ा समझदार था। उसने पूछा, "अब्बाजान! अपने बादशाह के यहां खाना क्यों नहीं खाया?"

उसने जवाब दिया, "मैंने उनके सामने इतना नहीं खाया कि मेरा काम चल जाता।"

पुत्र बोला, "तो फिर नमाज भी दुहरा लीजिए। उससे भी आपका काम नहीं चल पाया होगा।"

"ऐ इन्सान! तू अपने हुनर को तो हथेली पर लिए दिखाता फिरता है और अपनी बुराइयों को बगल में छिपाए हुए है। आखिर ऐ घमंडी! तू क्या खरीदना चाहता है? जरूरत पड़ने पर खोटी चांदी काम नहीं आती है।"

---

1. इबादत करने वाला
2. गंवार

मुझे याद है कि बचपन मे मैं रातों-रात जाग कर खुदा को याद किया करता था और सादगी से रहता था। एक बार मैं तमाम रात नही सोया। कुरान शरीफ मेरी बगल में दबा हुआ था। मेरे चारों ओर लोग सोए पड़े थे।

मैंने अपने वालिद से कहा, "अब्बाजान! ये लोग कैसे बेखबर होकर सो रहे हैं! कोई भी इतना नही करता कि उठकर दो रक्अत[1] नमाज ही पढ़ ले। ऐसे सोए हैं मानो मरे पड़े हो।"

उन्होने कहा, "दूसरो की बुराई करने से तो यह अच्छा होता कि तू भी सो जाता।"

'डींग मारने वाला अपने अलावा और किसी मे भी कोई अच्छाई नही देखता, क्योंकि उसकी आखो पर घमड का परदा पड़ा होता है। अगर तुझे खुदा को देखने वाली आख मिल जाए, तो तुझे मालूम होगा कि तू सबसे ज्यादा नासमझ और लाचार है।"

एक सभा मे लोग किसी बुजुर्ग की प्रशसा कर रहे थे और बढ़-चढ़कर उसके गुणो का बखान हो रहा था। जब वह सुन चुका तो कहने लगा, "ऐ मेरे गुणो का बखान करने वाले, मुझे सताने को तू ही काफी है। तूने तो मेरा बाहरी रहन-सहन ही देखा है। तुझे मेरे दिल का हाल क्या मालूम ?"

'मेरा बाहरी व्यवहार लोगो को अच्छा लगता है इसलिए वे मुझे चाहते हैं। किन्तु मैं अपने अन्दर की बुराइयो से इतना लज्जित हूं कि हमेशा अपनी गर्दन शर्म से झुकाए रखता हू।"

'मोर के सुन्दर रगो और बेल-बूटे वाले पखो को देखकर दुनिया उसकी प्रशसा करती है, परन्तु मोर स्वय अपने भद्दे पैरो को देख-देखकर लज्जित होता रहता है।"

कोह लम्वान के एक बुजुर्ग बड़े उदार तथा दानी थे। अरब देशों मे उनका यश दूर-दूर तक फैला हुआ था। एक बार वे दमिश्क की जामा-मस्जिद के सामने चूने के हौज के किनारे वजू[2] कर रहे थे। अचानक उनका पैर फिसला। वे हौज मे गिर पड़े और बड़ी मुश्किल से बाहर निकल पाए।

जब वे नमाज से फारिग हुए, तो उनके एक साथी ने कहा, "मेरी

---

1. नमाज में एक कयाम (खड़ा होना), एक रुकूअ (झुकना) और दो सज्दों (जमीन पर माथा टेकना) की इकाई।
2. नमाज से पूर्व मुंह-हाथ धोना

समझ में एक बात नही आ रही है !"

"वह क्या ?" बुजुर्ग ने पूछा।

"मुझे याद है कि जब आप दरिया-ए-मगरिब[1] के ऊपर चले थे तो आपका पैर तक नही भीगा था। आज क्या हुआ कि आप हौज में गिर पड़े और मरते-मरते बचे। इस हौज में तो कोई आदमी डूब ही नही सकता।"

बुजुर्ग ने थोड़ी देर सिर झुकाकर सोचा, फिर कहा, "यह वक्त-वक्त की बात है। हजरत मुहम्मद साहब ने भी फरमाया है, 'कोई वक्त ऐसा होता है जब मैं खुदा के साथ तन्हाई में होता हू। उस वक्त वहा न कोई खुदा के करीब रहने वाले फरिश्ता होते हैं और न कोई खुदा का हुक्म ले जाने वाले नबी।' परन्तु हजरत मुहम्मद ने यह नही कहा कि ऐसा हमेशा होता है। हजरत किसी वक्त तो खुदा के करीबी फरिश्तों जिबराइल और मैकाइल की तरफ भी ध्यान नही देते थे और कभी अपनी दोनों पत्नियो हफ्सा और जेनब के साथ रहते थे।"

'आप कभी दीदार कराते है तो कभी दूर रहते है। इस तरह अपनी कद्र को और हमारे दिल की आग को और भी तेज कर देते है।'

'अगर मैं अपने माशूक को बिना किसी वसीले[2] के देखना चाहता हूं तो मेरी हालत कुछ ऐसी हो जाती है कि मैं सच्चे रास्ते से भटक जाता हू।'

'वह आग भड़काता है और फिर पानी छिड़क कर उसे बुझा भी देता है। इसीलिए तू मुझे जला हुआ भी देखेगा और पानी में डूबा हुआ भी।'

किसी ने हजरत याकूब से पूछा, "ऐ रौशन दिल, अक्लमन्द बुजुर्ग ! तूने अपने बेटे के कुर्ते की खुशबू तो मिस्र में सूघ ली। उसको कन्आ[3]के कुएं मे तलाश क्यो नही किया ?"

हजरत याकूब ने उत्तर दिया, "हमारा हाल कौंधने वाली बिजली-का-

1. पश्चिम में बहने वाली एक नदी
2. माध्यम
3. कन्आं वह स्थान था जहां हजरत याकूब रहते थे। इनके सबसे प्यारे बेटे हजरत यूसुफ को उनके भाइयों ने मार-पीटकर कन्आं के पास एक कुएं में डाल दिया। वे उनका कुर्ता उतार कर मिस्र ले गए। जब वह कुर्ता मिस्र से लाया जा रहा था तो हजरत याकूब ने फरमाया था, "मुझे यूसुफ की खुशबू आ रही है।" उन्होंने मिस्र में वह खुशबू पहचान ली किन्तु जब हजरत यूसुफ को उनके भाइयो ने पास ही कुएं में डाल दिया था तो उन्हे पता नहीं चल पाया।

सा है। एक क्षण मे चमक और दूसरे क्षण मे अंधेरा। कभी तो मैं इतनी ऊंचा पर होता हू मानो किसी ऊचे बालाखाने[1] पर बैठा हूं और कभी इतने नीचे गिरा हुआ होता हू कि मुझे अपने पैर तक दिखाई नही देते। अगर फकीर एक ही हाल मे रह सकता तो वह दोनों दुनियाओ से परे होता।"

बअलबक की जामा मस्जिद मे मैं वाज[2] दे रहा था। मेरे श्रोता घोर संसारी लोग थे और धार्मिक बातो मे उनकी कोई रुचि नही थी। मैंने देखा कि मेरी बातो का उन पर कोई प्रभाव नही पड रहा था। मेरी आग उन भीगी हुई लकडियो को पकड पाने मे असमर्थ थी। मुझे दुख हुआ कि मैंने जानवरो को सभ्यता सिखाने और अंधो के सामने आईना रखने की मूर्खता क्यो की?

"क्या तूने नही सुना है कि काफिला चलने वाला हो; ऐसे मे वियाबान जंगल में कीकर के पेड के नीचे रात को सो जाना, अपनी जान से हाथ धोना है?"

मैंने एक नेक आदमी को नदी के किनारे देखा। उसे चीते ने घायल कर दिया था और उसका घाव किसी दवा से अच्छा न होता था। बहुत दिनों तक वह उस कष्ट मे परेशान रहा, फिर भी वह खुदा का शुक्र अदा करता रहा।

लोगो ने उससे पूछा, "तू शुक्र किस बात का अदा कर रहा है?"

उसने कहा, "शुक्र इस बात का है कि मैं मुसीबत में ही फसा हूं, किसी गुनाह मे नही। अगर मेरा माशूक मेरे कत्ल की सजा दे तो मैं यह कभी नहीं पूछूगा कि, 'ऐ मेरी जान! मुझसे ऐसी कौन-सी खता हुई जिससे तेरा दिल दुखा?'

"अल्लाह के प्यारे लोग मुसीबत को गुनाह से अच्छा समझते हैं। क्या तूने नही सुना कि हजरत यूसुफ को जब जुलेखा ने कैदखाने मे डलवा दिया तो उन्होंने क्या कहा था? वह बोले, 'ऐ खुदा! मेरे लिए कैदखाना उस बात से बेहतर है जिसके लिए वह मुझे बुला रही है।'[3]

एक फकीर को जरूरत पडी तो उसने अपने एक दोस्त को कमली

---

1. अट्टालिका
2. प्रवचन
3. हजरत यूसुफ पर मिस्र की रानी जुलेखा रीझ गई थी। जब उसके बार-बार बुलाने पर भी वे उसके प्रेम-निवेदन को स्वीकार करने के लिए नहीं आए तो उसने कुपित होकर उन्हें कैद में डलवा दिया था।

चुरा ली और उसे बेचकर पैसा खर्च कर डाला। काजी का हुक्म हुआ कि उसका हाथ काट डाला जाए।

कमली के मालिक ने कहा, "इसे सजा मत दीजिए। मैंने वह कमली इसे बख्श दी।"

काजी बोला, "तेरी सिफारिश के बावजूद मैं शरह[1] के खिलाफ चोर को कैसे छोड़ सकता हू?"

उसने कहा, "आपने जो कहा वह तो ठीक है लेकिन वक्फ[2] के माल से चोरी करना ऐसा जुर्म नही है कि उसके लिए हाथ काटने की सजा दी जाए। फकीर किसी चीज का मालिक नही होता। फकीर के पास जो कुछ भी है वह जरूरतमन्दों के लिए है।"

काजी ने यह सुनकर उस फकीर को छोड तो दिया किन्तु उसकी बडी निन्दा की। उसने कहा, "सारी दुनिया को यह बात बुरी लगी होगी कि तूने चोरी भी की तो अपने ही दोस्त के घर मे।"

फकीर ने उत्तर दिया, "क्या आपने नही सुना कि लोगो ने कहा है, दोस्तो के घर चाहे झाड़ू फेर दे लेकिन दुश्मनों का दरवाजा मत खट-खटा। जब तू मुसीबत मे फसा हो तो लाचार मन बैठ। दोस्तो की पोस्तीन[3] और दुश्मनो की खाल उतार ले।"

एक बादशाह ने एक फकीर को देखकर उससे पूछा, "क्या तुझे कभी हमारी याद भी आती है?"

उसने कहा, "हा, उस समय जब मैं खुदा को भूल जाता हू। जिसको वह अपने दरवाजे से भगा देता है वह हर तरफ मारा-मारा फिरता है और जिसको वह बुला लेता है उसे किसी दरवाजे पर जाने की जरूरत नही पडती।"

किसी नेक आदमी ने ख्वाब मे देखा कि एक बादशाह जन्नत मे बैठा है और एक फकीर दोजख मे। उसने वहा के लोगों से पूछा, "इस बादशाह ने कौन-सा अच्छा काम किया कि यह जन्नत मे आया? और उस फकीर ने कौन-सा बुरा काम किया जो दोजख मे डाला गया?"

उसी समय आकाशवाणी हुई कि, "यह बादशाह तो फकीरो मे अकी-

1. धार्मिक कानून
2. ईश्वर को अर्पित
3. रोएंदार जन्तुओं की खाल से बनाया हुआ

दत[1] रखने की वजह से जन्नत में आया और वह फकीर बादशाहों के साथ रहने की वजह से दोजख में पहुंचा।"

"ये तेरी कमली, तसबीह[2] और गूदडी कुछ काम नही आएंगी। तू अपने को बुरे कामो से बचा। बरकी टोपी[3] ओढ़ने की जरूरत नही। फकीरो की तरह रह, चाहे तंतरी टोपी[4] पहन।"

एक साधारण-सा व्यक्ति हज़ाज के काफिले के साथ पैदल चलता हुआ कोफा शहर से निकला और हमारे साथ हो लिया। मैंने देखा कि उसके पास कुछ नही था फिर भी अकड़कर चल रहा था।

वह कह रहा था, "न तो मैं ऊंट पर सवार हू, न ऊंट की तरह लदा हुआ हूं। न मैं रैयत का मालिक हू, न बादशाह और न बादशाह का गुलाम। जो है उसका गम नही, जो नही, उसकी फिक्र नही है। चैन से सास लेता हूं और उम्र काटता हू।"

एक ऊंट सवार ने उससे कहा, "ऐ फकीर! कहा जा रहा है? लौट जा, नही तो मुसीबतो से मर जाएगा।"

यह सुनकर फकीर जंगल की तरफ चल दिया। जब हम लोग नखलए महमूद नामक स्थान के निकट पहुचे तो वह धनवान ऊंट सवार मर चुका था।

वही फकीर अचानक उसके सिरहाने आकर बोला, "मैं तो पैदल भी मुसीबत से नही मरा और तू इतने अच्छे ऊंट पर बैठे-बैठे मर गया।"

'एक व्यक्ति तमाम रात एक बीमार के सिरहाने रोया। जब दिन निकला, तो बीमार अच्छा हो चुका था, मगर रोने वाला मर गया था।"

"बहुत से तेज दौडने वाले घोड़े मंजिल पर नही पहुच पाते और एक लंगड़ा गधा पहुंच जाता है।"

हमने देखा है कि बहुत-से तन्दुरुस्त लोग मरकर दफन भी हो गए, जबकि जख्मी और बीमार नही मरे।

एक खुदापरस्त को बादशाह ने बुलाया। उसने सोचा कि यदि मैं बादशाह के सामने क्षीण और दुर्बल बनकर जाऊं तो मेरे ऊपर उसकी श्रद्धा बढ़ जाएगी। लोग बताते है कि उसने अपने शरीर को कमजोर करने के लिए

1. श्रद्धा
2. जपमाला
3. मोटे ऊन की फकीरी टोपी
4. अमीरों की बहुमूल्य टोपी

कोई दवा खा ली। वह दवा इतनी जहरीली थी कि उसे खाते ही वह मर गया।

'जिसको मैंने पिस्ते की गिरी समझा था, वह तो प्याज की गाठ निकली जिसमे छिलके ही छिलके थे।'

'वे फकीर जो कभी संसार की भलाई में लगे रहते थे, उनको अब मैं किब्ले[1] की तरफ पीठ करके नमाज पढ़ते देखता हूं।'

'यदि बन्दा खुदा को पुकारता है, तो उसे भी चाहिए कि वह खुदा के अलावा किसी और की तरफ ध्यान न दे।'

यूनान के राज्य मे चोरो ने सौदागरों के एक काफिले को लूट लिया और बहुत-सा धन लेकर भाग गए। सौदागर बहुत रोए-पीटे। उन्होंने खुदा और रसूल की दुहाई दी परन्तु उससे कोई फायदा न हुआ।

'जब काले दिल वाला दुष्ट अपने कार्य मे सफल हो गया तो उसे काफिले वालों के रोने-पीटने का क्या गम?'

इसी काफिले में हकीम लुकमान भी था। काफिले वालों मे किसी ने उससे कहा, "आप ही डाकुओं को नसीहत दें और उन्हे अपनी बातो से प्रभावित करें। हो सकता है कि वे हमारा थोड़ा-बहुत माल छोड़ जाएं।"

लुकमान बोला, "उनको नसीहत देने से मुझे निराशा ही होगी।"

'जग खाए लोहे पर कलई करने से वह साफ नही होगा, जिसका दिल स्याह हो चुका है, उस पर प्रवचन का असर नही होता, क्या लोहे की कील को पत्थर मे ठोका जा सकता है?'

'जब तेरे अच्छे दिन हों, तू दुखी लोगो की मदद कर। किसी के दुखी दिल को दिलासा देना अपने ऊपर आने वाली विपत्ति को टालता है।'

'यदि कोई मांगने वाला दीन होकर तुझसे कुछ मागता है तो दे दे, नही तो लोग तेरा माल कभी जोर-जुल्म से ले लेंगे।'

बड़े शेख अबुल फर्ज-इब्ने-जोजी मुझे शिक्षा दिया करते थे कि मै गाना सुनना छोड दू और एकान्त का आनन्द लेना सीखू। जितना ज्यादा वे मुझे रोकते, मेरी गाना सुनने की इच्छा उतनी ही तीव्र होती। मुझ पर जवानी का जोश छाया हुआ था और मन मे भोग-विलास के लिए बडा मोह था। मैंने शेख साहब की नसीहत की परवाह न की। कभी उनकी बातें याद आयी तो कहता—

---

1. मक्के में वह स्थान जहां हजरते-अस्वद (काला पत्थर) स्थापित है। और जिसकी तरफ मुं[illegible] मुसलमान नमाज पढ़ते हैं।

'काजी अगर हमारी मजलिस मे आकर बैठेगा तो वह भी तालियां बजाएगा और अगर मुसिफ शराब पिएगा तो वह शराबियों को माफ कर देगा।'

एक रात मैं एक मजलिस मे पहुचा। वहां एक गवैया बड़ा ही बेसुरा गाना गा रहा था। मैंने मन मे सोचा, "इस गवैए की आवाज तो शाहेरग[1] को छीले डालती है। जितनी बुरी इसकी आवाज है, उतनी तो शायद बाप *की मौत पर मातम करने वाले की भी न होगी।"*

मजलिस मे बैठे लोग अपनी उगलिया या तो कानो पर रखते थे कि वह आवाज सुनाई न दे या होठो पर कि गवैया उनका इशारा देखकर *खामोश हो जाए।*

जब वह गवैया बर्बत[2] पर और भी जोर से गाने लगा तो मैंने मेजबान से कहा, "या तो मेरे कानो मे रुई ठूस दीजिए और या मेरे लिए दरवाजा खोल दीजिए ताकि मैं बाहर चला जाऊ।"

शिष्टाचार निभाने के लिए मुझे,रात-भर वहां रुकना पड़ा। मैंने वह रात बड़ी मुश्किल से काटी। सुबह मैंने अपने सिर की पगड़ी उतारी और पटके से एक दीनार निकाला। मैंने उपहार के रूप मे दोनो चीजें गवैए को दे दी और उसके साथ गले मिलकर उसका शुक्रिया अदा किया।

मेरे मित्रो ने मेरे इस व्यवहार पर आश्चर्य प्रकट किया। वे मन-ही-मन मेरी इस मूर्खता पर हस रहे थे। उनमे से एक मित्र से नही रहा गया। वह कहने लगा, "यह काम तूने अक्लमन्दो की शिक्षा के खिलाफ किया है। तेरी पगड़ी तेरे बुजुर्गों की निशानी थी और वह दीनार भी ऐसे कुपात्र को नही मिलना चाहिए था जिसके हाथ मे उम्र-भर एक दरम भी नही आया होगा और जिसके डफ मे कभी सोने का एक जर्रा भी नही पड़ा होगा।"

मजलिस मे सभी लोग उस गवैए की निन्दा कर रहे थे। वे कह रहे थे, "खुदा करे ऐसा गवैया इस ऊचे घराने से दूर ही रहे। ऐसे गवैए को किसी ने एक ही जगह दुबारा नही देखा होगा।"

"सच तो यह है कि ज्यों ही उसकी भद्दी आवाज मुंह से निकली कि सुनने वालों के रोंगटे खड़े हो गए।"

"महल के परिन्दे भी उसके डर से उड गए। उसने बेकार ही अपना *गला फाड़ा और हमारा भेजा खा गया।"*

1. गर्दन की मुख्य रग जिसके कट जाने से मृत्यु हो जाती है।
2. सितार के समान एक बाजा।

मैंने कहा, "अब मुनासिब यही है कि आप लोग उसकी बुराई न करें मुझे उसके गुणो का पता चल गया है।"

मेरा मित्र बोला, "मुझे भी कुछ बता दीजिए जिससे मैं उसके पा जाकर इस मजाक के लिए उससे माफी मांग लू।"

मैंने कहा, "मैं इस गवैए का इसलिए आभारी हूं कि इसने आज मु एक बहुत बड़ी शिक्षा दी है। बड़े शेख साहब ने मुझे कई बार नसीहत थी पर मेरे कानों पर जू तक न रेंगी। कल मेरे सितारे कुछ अच्छे थे इस गवैए को सुनकर मुझे वह नसीहत याद आ गई। मैंने इसी गवैए हाथ पर तौबा कर ली कि अब जिन्दगी भर न कभी गाना सुनूंगा और लोगो मे मेल-जोल बढ़ाऊगा।"

"आवाज यदि अच्छी है और वह मीठे होठों, मुह और कंठ मे निकल है, तो दिल को लुभाती है। गवैए की आवाज ही खराब है, तो चाहे कोई भी राग और सुर निकाले, वह अच्छा नहीं लगेगा।"

हकीम लुकमान से लोगों ने पूछा कि "तूने अदब[1] किससे सीखा ?"

वे बोले, "बे-अदबो से।"

लोगों ने पूछा, "वह कैसे ?"

उन्होंने उत्तर दिया, "बे-अदबो की, जो बातें मुझे नापसन्द थी, मैं छोड़ता गया।"

'होशियार लोग दूसरो के हंसी-मजाक से भी कुछ-न-कुछ नसी लिया करते हैं। बेवकूफ को तू सौ अच्छी नसीहतें भी देगा, तो उसे मजाक ही मालूम होगी।'

एक बड़े धार्मिक व्यक्ति के बारे में कहा जाता है कि वह एक रा दस सेर खा जाता था और रात-भर मे पूरा कुरान पढ़ लेता था।

एक बुजुर्ग ने जब यह सुना तो बोला, "यदि वह आधी रोटी और रात-भर सोए तो ज्यादा अच्छा हो।"

'पेट को थोड़ा-सा खाली रख, ताकि तुझमे मारिफत[2] की रोशनी सके। तुझमे अक्ल कहां से आएगी जब तूने पेट को नाक तक भर है।

एक पापी पर अल्लाह की ऐसी कृपा हुई कि उसे मारिफत हासि गई और वह पहुंचे हुए फकीरों में रहने लगा। फकीरो की संगति से

1. शिष्टाचार
2. ईश्वर का परिचय

बुरी आदतें अच्छाइयों में बदल गईं। उसने काम-वासना पर भी काबू पा लिया।

उसके दुश्मन उसे ताना दिया करते थे। वे कहते कि उसकी हालत अब भी ज्यों की त्यों है। उसकी परहेजगारी दिखावटी है। उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

'अगर कोई गुनाहगार गुनाहों से तौबा कर ले, तो मुमकिन है कि खुदा उसे माफ कर दे, लेकिन यह मुमकिन नहीं है कि वह दुश्मनों की ताने-बाजी से बच जाए।'

जब वह फकीर लोगों के ताने सुनते-सुनते परेशान हो गया तो अपने पीर के पास पहुंचा और उनसे अपना दुख कहा।

उन्होंने कहा, "तू खुदा की इस नेमत का शुक्रिया कैसे अदा कर सकता है कि लोग तुझे जैसा समझते हैं उससे तू कहीं अच्छा है? तू यह शिकायत कब तक करता रहेगा कि तेरा बुरा चाहने वाले और तुझसे जलने वाले तेरी निन्दा करते रहते हैं? लोग तुझे अच्छा कहें और तू बुरा हो, इससे तो कहीं अच्छा है कि तू नेक बन, भले ही लोग तुझे बुरा कहें।"

'यदि लोग मेरी प्रशंसा करते हों और मुझमें बुराइयां भरी हों तो मुझे लोगों से डरना चाहिए। बेशक मैं अपने पड़ोसियों की आंखों से छिपा हुआ हूं; लेकिन मेरे अन्दर-बाहर की सब बातें अल्लाह तो जानता है।'

'मैंने अपना दरवाजा आदमियों के आने-जाने के लिए बन्द कर रखा है, ताकि वे मेरी बुराइयों को न फैला सकें, लेकिन दरवाजा बन्द करने से भी क्या फायदा? खुदा तो छिपी और खुली हुई सारी बातों को जानता है।'

मैं एक बुजुर्ग के पास यह शिकायत लेकर गया कि अमुक व्यक्ति ने मेरे खिलाफ गवाही दी है और मेरी निन्दा की है।

उन्होंने कहा, "तू उसके साथ भलाई कर ताकि वह शर्मिन्दा हो जाए। ... चाल-चलन ठीक रख, ताकि दुश्मन को तेरी बुराई करने की ...न हीं न हो। जब सारंगी की आवाज ठीक होती है तो गवैए को ... कान ऐंठने की जरूरत नहीं पड़ती।"

एक बुजुर्ग से लोगों ने पूछा, "सूफी की असली पहचान क्या है?"

उन्होंने कहा, 'दुनिया में पहले कुछ लोग हुआ करते थे जिनकी शक्ल-सूरत तो भद्दी होती थी किन्तु उनका दिल साफ होता था। उन्हें सूफी कहते थे। आजकल जिन्हें सूफी कहा जाता है उनकी शक्ल-सूरत तो अच्छी

होती है लेकिन दिल मैला होता है।"

'जब तेरा दिल हर समय और हर जगह भटकता है तो तन्हाई में भी तुझे क्या हासिल होगा? यदि तेरा दिल खुदा की तरफ लगा हुआ है तो धन-दौलत, ऊंचे ओहदे और खेती-बाड़ी के बीच में रहते हुए भी तुझे तन्हाई का मजा मिल सकता है।'

मुझे याद है कि मैं रात-भर एक काफिले के साथ चला था और सुबह एक जंगल के किनारे सोया पड़ा था। उसी समय हमारे एक साथी ने पागलों की तरह नारा लगाया और रोता-चिल्लाता हुआ जंगल की तरफ भागता चला गया।

दिन चढ़े वह लौटा तो मैंने उससे पूछा, "क्या बात थी?"

वह बोला, "मैंने देखा कि बुलबुलें दरख्तों पर अल्लाह को पुकार रही हैं, चकोर पहाड़ों पर, मेंढक पानी में और चौपाए जंगल में। जब सभी प्राणी अल्लाह का नाम ले रहे थे तो मैं कैसे आलस में पड़ा रह सकता था? इसलिए मैं भी नारा लगाता हुआ भागा।'

कल सुबह एक परिन्दा चहचहा रहा था। उसने मेरी अक्ल, मेरा सब्र और मेरे होशो हवास सब खो दिए। जब मेरे एक दोस्त को यह मालूम हुआ तो वह बोला, "मुझे यकीन नहीं होता कि परिन्दे की आवाज से इन्सान कैसे बेखुद हो सकता है?"

मैंने कहा, "इन्सान के लिए यह मुनासिब नहीं है कि परिन्दे तो तस्बीह[1] पढ़ रहे हों और वह चुपचाप बैठा रहे।"

एक बार हजाज के सफर में मेरे साथ कुछ फकीर भी जा रहे थे। वे लोग आपस में दोस्ती और हमदर्दी रखते थे। रास्ता काटने के लिए वे सभी गाना गाते और शेर पढ़ते जा रहे थे।

इसी काफिले में एक फकीर था जो सबसे अलग-अलग रहता। न तो वह अल्लाह को याद करने में उनके साथ शामिल होता और न उनके दुख-दर्द की चिन्ता करता। वह अपने ऊंट पर बैठा अकेला चला जा रहा था।

जब हम नखैल-बनी-हलाल पर पहुंचे तो अरब के किसी कबीले से एक हब्शी लड़का निकला। उसने अल्लाह को पुकारते हुए ऐसा गाना गाया कि पक्षी आकाश से उतर आए। मैंने देखा कि उस फकीर का ऊंट मस्त होकर नाचने लगा और उसे जमीन पर पटककर जंगल की ओर भाग गया।

मैंने उस फकीर से कहा, "शेख साहब! उस हब्शी ने अल्लाह की

1. जपमाला

प्रशसा मे जो गाना गाया उससे जानवर तक प्रभावित हो गए; किन्तु आप वैसे-के-वैसे ही रहे।"

जानते हो मुझसे सुबह के वक्त चहचहाने वाली बुलबुल ने क्या कहा? उसने मुझसे कहा, 'तू कैसा आदमी है, जो इश्क मे बेखबर है? अरबी शेर से ऊंट भी मस्ती मे आ जाते हैं और खुदा की याद मे खो जाते है। क्या तू उलटे मिजाज का जानवर है, जो तू उसकी याद मे मस्त नही होता?"

'जगल मे जब हवा चलती है तो बान की शाखें झूमने लगती हैं; किन्तु पत्थर ज्यों का त्यों रहता है।'

'संसार की हर चीज उसी पैदा करने वाले का नाम ले-लेकर शोर मचा रही है; लेकिन इसे सुनता वही है, जिसके कान सुन सकते हों।'

'केवल बुलबुल ही फूल पर उसका नाम नहीं जपती है। हर एक कांटा उसका नाम जपने के लिए जबान बना हुआ है।'

एक बादशाह मरते दम तक किसी को अपना वारिस नही बना सका। अन्तिम समय मे उसने घोषणा की कि उसकी मृत्यु के अगले दिन सुबह-सुबह जो व्यक्ति सबसे पहले उस शहर के दरवाजे से प्रवेश करे उसी को बादशाह बना दिया जाए।

सयोग से वह व्यक्ति एक फकीर था जिसने तमाम उम्र टुकडे जमा किए थे और फटे चीथडो पर पैवन्द लगाकर शरीर ढका था।

वजीरो और अमीरो ने बादशाह की अन्तिम इच्छा का सम्मान करके उसी के सिर पर ताज रख दिया। तमाम खजानो और किलों की चाबियां भी उसे सौंप दी गईं।

एक दिन उसका एक पुराना साथी उधर आ निकला और उससे बोला, "अल्लाह-ताला का लाख-लाख शुक्र है कि तेरे नसीब ने जोर मारा और तुझे बादशाहत मिल गई। तेरे पैरो से कांटे निकल गए और तुझे उनके स्थान पर फूल मिले। किसी ने ठीक कहा है कि मुसीबत के बाद सुख के दिन आते हैं।"

'कली कभी खिलकर फूल बन जाती है और कभी मुरझाकर गिर जाती है। पेड कभी नंगा हो जाता है और कभी हरी-भरी पत्तियो से लद जाता है।'

वह बोला, "अरे भाई, मेरे साथ हमदर्दी कर और मेरे लिए दुआ कर। मेरा यहां होना कोई खुशी की बात नही है। जब तूने मुझे पहले देखा था तब मुझे केवल एक रोटी की चिन्ता थी। अब दुनिया-भर की है। अगर दुनिया न मिले तो हम दुखी होते हैं और मिल जाए तो उसके लोभ मे फंस

जाते है। दरअसल इस दुनिया से बढकर कोई मुसीबत नहीं है। यह न मिले तो दुख देती है और मिले तो भी दुख ही देती है। यदि तू धनवान होना चाहता है तो सन्तोष कर। वही सबसे बडा धन है।"

'यदि अमीर दामन भर कर सोना लुटा दे, तो इसे कोई बहुत बडा काम मत समझ। मैंने सुना है कि फकीर का सब्र अमीर की खैरात से कहीं बढकर है।'

'यदि बहराम[1] एक गोरखर[2] भी भूनकर ले आए तो उसकी कीमत टिड्डी के उस पैर के बराबर भी नही होगी, जिसे एक चींटी घसीटकर ले आती है।'

हजरत मुहम्मद के एक मित्र हजरत अबू हरीश रोज उनसे मिलने आते थे। एक दिन उन्होने कहा, "ऐ अबू हरीश ! तुम रोज मत आया करो। मैं चाहता हूं कि हमारी मुहब्बत बढ़ती रहे।"

एक बुजुर्ग से लोगों ने पूछा, "सूरज मे इतने गुण हैं फिर भी हमने यह नही सुना कि किसी ने उसे दोस्त बनाया हो या उस से इश्क किया हो। इसकी वजह क्या है ?"

उन्होंने उत्तर दिया, "जब सूरज हमें रोज देर तक दिखाई देता है तो अच्छा नही लगता, किन्तु जाड़ों में जब वह कम दिखाई देता है तो अच्छा लगने लगता है।"

'लोगों से मिलना-जुलना तो बुरा नही है; किन्तु इतना न मिलो कि वे 'बस' कहने लगें।"

मैं अपने दमिश्क के दोस्तों के साथ रहते-रहते इतना ऊब गया कि मैं कुद्स के जंगल की ओर निकल गया। वहां रहकर मै जानवरो से प्रेम करने लगा।

दुर्भाग्य से मुझे फिरंगियों ने कैद कर लिया और यहूदियो के साथ मुझे भी तराबलस मे एक खाई की मिट्टी निकालने के काम पर लगा दिया।

उधर से हलब का एक रईस गुजरा, जो मुझे पहले से जानता था। वह मुझे पहचान गया और बोला, "क्या हाल है ? यह तकलीफ क्यो उठा रहा है ?'

मैंने कहा, "क्या बतलाऊं ? मैं जंगल की तरफ इसलिए भागा था कि मेरा दिल खुदा से लगा रहे, लेकिन यहां मुझे अस्तबल मे जानवरों के साथ

---

1. ईराक का एक विलासी बादशाह
2. जंगली गधा

बांध दिया गया। अब समझ ले मेरा क्या हाल हो सकता है?"

"परायो के साथ जगल मे रहने की अपेक्षा कैदी बनकर अपनो के सामने रहना कही अच्छा है।"

उसे मेरी हालत पर रहम आ गया और उसने दस दीनार देकर मुझे फिरगियो की कैद से छुडा लिया। इसके बाद वह मुझे अपने घर ले आया। उसकी एक बेटी थी जिसकी उसने सौ दीनार महर पर मेरे साथ शादी कर दी।

जब मैं कुछ समय तक उसके साथ रह लिया तो मेरी बीवी मेरे साथ दुर्व्यवहार करने लगी। उसने मेरी जिन्दगी दूभर कर दी।

'यदि किसी भले आदमी के घर मे बदजबान औरत हो तो उस बेचारे के लिए दोजख[1] यही है।'

'बुरे साथी से खुदा बचाए। ऐ मालिक! हमें तू दोजख की मुसीबतो से बचा।'

एक दिन मेरी बीवी मुझे ताना देने लगी, "क्या तू वही आदमी नही है जिसे मेरे वालिद ने दस दीनार देकर फिरगियो की कैद से छुडाया था?"

मैंने कहा, "हा, मैं वही हू जिसे तेरे वालिद ने दस दीनार के बदले फिरगियो की कैद से छुडाया और फिर सौ दीनार के बदले तेरे हाथो गिरफ्तार करवा दिया।"

'मैंने सुना कि एक बुजुर्ग ने एक बकरी को भेडिये के पजे से छुड़ाया और रात को उसके गले पर छुरी फेर दी। बकरी कहने लगी—ऐ जालिम, भेडिये के पजे से तूने मुझे छुडा लिया, लेकिन जब मैंने गौर किया तो मेरी समझ मे आया कि तू खुद भेडिया था।'

एक बादशाह ने किसी आबिद[2] से, जिसके बाल-बच्चे भी थे, पूछा, "तेरी गुजर-बसर कैसे होती है?"

उसने उत्तर दिया, "तमाम रात खुदा से बाते करता हूं। सुबह अपनी जरूरतो के लिए उससे दुआए मागता हू और फिर तमाम दिन रोजी की फिक्र मे काटता हू।"

बादशाह उसकी कठिनाई को समझ गया। उसने हुक्म दिया कि उसके लिए कुछ वजीफा बाध दिया जाए ताकि उसके बाल-बच्चो की गुजर हो सके और उसकी चिन्ता मिट जाए।

---

1. नरक
2. इबादत करने वाला

'जब तू बाल-बच्चों की बेड़ियों में गिरफ्तार है, तो आजादी का ख्याल छोड़ दे। औलाद, रोटी, कपड़ा और रोजगार की चिन्ताएं तुझे बहिश्त[1] से भी लौटा लाएंगी।'

'मैं तमाम दिन यह सोचता हूं कि रात में खुदा को याद करूंगा और रात होने पर जब नमाज पढ़ने का इरादा करता हूं, तो यह चिन्ता सवार हो जाती है कि बाल-बच्चे सुबह क्या खाएंगे।"

एक आबिद बेचारा जंगल में रहता था और पेड़ों की पत्तियां खा-खाकर गुजारा करता था। एक दिन एक बादशाह उसकी खिदमत में हाजिर हुआ और बोला, "यदि आप चाहें तो मैं शहर में आपके रहने के लिए मकान बनवा दूं। वहां आप इत्मीनान से इबादत करें। लोग आपके दर्शन और आशीर्वाद से लाभ उठाएं। सबको आपसे अच्छे कर्म करने की प्रेरणा मिलेगी।"

फकीर को यह बात पसन्द नहीं आई। एक वजीर ने उससे कहा, "बादशाह की इतनी इच्छा है तो आप दो-तीन दिन के लिए ही शहर चले चलिए। वहां रहकर देख लें। यदि आपको कोई कष्ट हो तो आप वापस आ जाइएगा।"

कहते हैं कि बहुत आग्रह करने से वह फकीर शहर में आ गया। बादशाह ने बगीचे के बीच में बने एक आलीशान महल में उसे रहने की जगह दे दी। यह जगह इतनी सुन्दर थी कि लगता जैसे स्वर्ग यहीं पर हो।

यहां के गुलाब के फूल माशूक के गुलाबी गालों की तरह सुर्ख और सुन्दर थे। यहां सुम्बल की खुशबूदार शाखें माशूक की मुश्की[2] जुल्फों की तरह महकती थीं। हरियाली और तरो-ताजगी में डूबा हुआ बगीचा ऐसा लगता था जैसे हाल का पैदा हुआ बच्चा, जिसने अभी दाई का दूध भी न लिया हो।

बादशाह ने फकीर की सेवा के लिए चांद-से मुखड़े वाली एक दासी भेज दी। परियों जैसी उसकी आदतें और मोर जैसा दिलकश उसका बदन।

इसके अलावा एक गुलाम भी उस फकीर की खिदमत में भेजा गया। वह गुलाम नौजवान, सुडौल और सुन्दर था।

फकीर स्वादिष्ट भोजन खाने लगा और रेशमी वस्त्र पहनने लगा।

---

1. स्वर्ग
2. कस्तूरी के समान महकती हुई

भोग-विलास में पड़कर फकीर का मन डांवा-डोल हो गया और उसका चैन जाता रहा। लोगों ने ठीक ही कहा है, 'चाहे कोई फकीर हो, पीर हो, मुरीद हो या ऊंचे विचारों वाला शायर, जब वह संसार के लोभ में पड़ जाता है, तो उसकी दशा शहद में फंसी हुई मक्खी के समान हो जाती है।'

बादशाह जब दूसरी बार फकीर से मिलने आया, तो वह पहचान में नहीं आता था। अब वह गोरा और मोटा हो गया था और उसके शरीर पर खून की सुर्खी थी। वह रेशमी तकिये का सहारा लेकर लेटा हुआ था।

उसे सुखी देखकर बादशाह खुश हुआ। इधर-उधर की बातें होने लगीं। अन्त में बादशाह ने कहा, "मैं दो तरह के लोगों को अपना दोस्त समझता हूं। मैं इनकी जितनी कद्र करता हूं उतनी कोई नहीं कर सकता। एक तो आलिम[1] और दूसरे फकीर।"

एक बुद्धिमान और अनुभवी वजीर भी बादशाह के साथ था। उसने कहा, "ऐ दुनिया के मालिक! सच्ची दोस्ती तो यह है कि आप इन दोनों तरह के लोगों का भला करें। आलिमों का भला तो उन्हें पैसा देने से होगा ताकि वे बेफिक्री से इल्म हासिल करने में लग जाएं और फकीरों का भला उन्हें पैसा न देने में है, ताकि वे खुदा से ही लौ लगाएं।"

'सुन्दर स्त्री को नक्काशीदार फीरोजे की अंगूठी पहनाने की क्या जरूरत है? उसी तरह यदि नेक फकीरों के पास भीख के टुकड़े नहीं हैं तो उन्हें क्या गम?'

'जब तक मुझमें 'और चाहिए' की हवस बाकी है, मुझे फकीर और परहेजगार कहना ठीक नहीं। फकीर को न दरम चाहिए न दीनार। यदि वह दरम और दीनार तलाश करने लगे तो दूसरा फकीर तलाश करना चाहिए।'

'जो खुदा से ही लौ लगाए रखता है, वह भीख के टुकड़ों के बिना भी अपनी फकीरी में मस्त रहता है। खूबसूरत उंगली और कान की लौ, फीरोजे की अंगूठी और कुंडल के बिना भी अच्छी लगती है।'

एक बादशाह किसी मुसीबत में फंसा हुआ था। उसने मानता मानी कि यदि उसकी मुसीबत टल गई तो वह बहुत-सा धन फकीरों में बांट देगा।

सौभाग्य से उसकी मुराद पूरी हो गई। उसने अपने एक विश्वास-पात्र गुलाम को दरमों की थैली देकर कहा, "जा, फकीरों में बांट आ।"

---

1. विद्वान्

लोग कहते हैं कि गुलाम बड़ा समझदार था। वह सारे दिन इधर-उधर घूमता फिरा। शाम को लौटने पर अशर्फियों की थैली को चूमकर बादशाह के कदमों में रखते हुए कहा, "हुजूर, मैंने बहुत तलाश किया लेकिन मुझे कोई फकीर मिला ही नहीं।"

बादशाह ने कहा, "यह कैसे हो सकता है? मेरे हिसाब से इस शहर मे चार सौ से ज्यादा फकीर हैं।"

गुलाम ने कहा, "ऐ दुनिया के मालिक! जो असली फकीर है वह तो धन लेता नहीं और जो धन चाहता है वह असली फकीर नहीं।"

बादशाह हंसा और कहने लगा, "फकीरों और खुदापरस्तों से मुझे जितनी श्रद्धा है, इस शैतान को उनसे उतनी ही दुश्मनी है लेकिन बात इसी की ठीक है।"

'जो फकीर दरम और दीनार ले ले, उसको तू छोड़ दे और दूसरे की तलाश कर।"

एक बड़े आलिम से लोगों ने पूछा, "वक्फ़[1] की रोटी के बारे में आपकी क्या राय है?"

उसने कहा, "यदि कोई फकीर यह रोटी इसलिए खाता है कि वह तसल्ली से खुदा की इबादत कर सके तो यह हलाल है किन्तु यदि वह इसलिए तसल्ली के साथ अड्डा जमाए हुए बैठा है कि वह वक्फ़ की रोटी खाए तो यह हराम है।"

'फकीर रोटी इसलिए खाता है कि तसल्ली से एक कोने में बैठकर खुदा को याद करे। वह फकीरों की कुटिया में रोटी के लालच से नहीं बैठता।'

एक फकीर ऐसी जगह पहुंचा जहां का हाकिम बहुत उदार था। उसके पास हमेशा कुछ बुजुर्ग रहा करते थे। वे तरह-तरह की हास्य और विनोद-भरी बातें किया करते। फकीर बहुत चलकर आया था। वह बेहद थका हुआ और भूखा था।

एक बुजुर्ग ने उससे हंसी मे कहा, "आप भी कुछ सुनाइए।"

वह बोला, "आप लोग सब बुजुर्ग हैं। मुझमें आपका सलीका कहां है? मैं पढ़ा-लिखा भी नहीं हूं, फिर भी हूं।"

उसने जो शेर पढ़ा उसका भाव कुछ इस

1. ईश्वर को अर्पित

वालिद ने कहा, "ऐ बेटे ! महज इस ख्याल से कि वाइजो के कौल और फेल मे फर्क होता है तुझे उनकी नसीहतो मे नफरत नही करनी चाहिए और न उनके फायदे से महरूम[1] रहना चाहिए। हर वाइज पर सन्देह करना गलत है।

"तुमने उस अंधे की मिसाल नही सुनी ? वह कीचड मे फस गया था और कह रहा था, ऐ मुसलमानो ! मेरे रास्ते मे एक चिराग रख दो।'

"किसी ने उससे पूछा,'जब तुझे चिराग ही नही दीखता, तो चिराग से तू क्या देखेगा ?'

'वाइज की मजलिस बजाज की दूकान की तरह है। जब तक तू कुछ नकद लेकर न जाएगा, तुझे कुछ नही मिलेगा। अकीदत[2] के साथ नसीहत सुने बिना तेरे पल्ले कुछ न पडेगा।'

'आलिम वाइज के कौल और फेल मे फर्क हो, तो भी उसकी बात दिल से सुनो।'

"तू यह गलत कहता है कि सोया हुआ सोए हुए को नही जगा सकता।"

'तुझे चाहिए कि नसीहत यदि दीवार पर लिखी हुई हो, तो उसे भी अपने कानों मे डाल ले।'

एक उदारहृदय व्यक्ति फकीरो की बस्ती छोड़कर मदरसे मे आया और शिक्षको के साथ रहने लगा। मैंने उससे पूछा, "तूने आबिद और आलिम मे क्या फर्क पाया जो तू उन्हे छोड़कर इनके साथ रहने लग गया ?"

वह बोला, "आबिद तो तूफान से अपनी गूदड़ी बचाने की चिन्ता करता है और आलिम डूबते को बचाने के लिए खुद पानी मे कूद पड़ता है।"

एक जवान सडक के किनारे पड़ा सो रहा था। सोते हुए मस्ती मे आकर वह नंगा हो गया। एक खुदापरस्त फकीर उधर से गुजरा। वह उस जवान को उस हालत मे पड़ा हुआ देखने लगा।

जवान ने मस्ती की नीद मे सिर उठाया और बोला, "शरीफ लोग जब किसी बेहूदे के पास से गुजरते है तो वहा रुकते नही, शराफत से गुजर जाते है।"

1. वंचित
2. श्रद्धा

"जब तू किसी गुनहगार को देखे, तो उसकी बुराइयों पर पर्दा डाल दे और उन्हें माफ कर दे। तू मेरी बुराइयां बखान क्यों कर रहा है? शराफत से चला क्यों नहीं जाता?"

'ऐ परहेजगार! तू गुनहगार से नफरत न कर। उसे माफ कर दे और भूल जा।'

'यदि मैं अपने बुरे कामों के कारण लाचार हूं तो तू कर्म कर और मुझे मेरे हाल पर छोड़ दे।'

कुछ मस्त लोग एक फकीर पर नाराज हो गए। उन्होंने उसे बुरा-भला कहा, उसे मारा-पीटा और बहुत तंग किया। वह अपने पीर के पास गया और उसे अपनी मुसीबत कह सुनाई।

पीर ने कहा, "बेटा! फकीर की गूदडी सब्र की गूदड़ी होती है। जो इसे पहनकर रंज को बर्दाश्त न कर सके वह फकीर बनने का ढोंग न रचे। वह फकीर है ही नहीं और गूदडी पहनना उसे हराम है।"

'बड़ी नदी एक पत्थर गिरने से गदली नहीं हो जाती। जो खुदा-परस्त रंज को बर्दाश्त न कर सके वह अभी सच्चा फकीर नहीं बना।'

'अगर तुझे कोई तकलीफ पहुंचे तो बर्दाश्त कर ले। दूसरों को माफ कर देने से तू गुनाहों से पाक हो जाएगा।'

'ऐ भाई! जब तुझे अन्त में मिट्टी में ही मिल जाना है, तो जिन्दगी में ही मिट्टी की तरह नम्र क्यों नहीं बन जाता?'

कहते हैं कि बगदाद शहर में एक बार झंडे और पर्दे में झगड़ा हो गया। झंडे ने पर्दे से कहा, "मैं और तू दोनों बादशाह के नौकर हैं और शाही दरबार के गुलाम हैं। मैंने तो बादशाह की सेवा में कभी एक पल को भी आराम नहीं पाया। हमेशा सफर में रहना पड़ता है। तूने न कोई रंज सहा, न किला देखा, न जंगल, न हवा, न गर्द-गुबार। मेहनत करने में मैं सदा आगे रहा हूं लेकिन फिर भी तुझे अधिक सम्मान क्यों मिलता है? तू चांद-से मुखड़े और चमेली जैसी खुशबू वालों के चेहरे पर रहता है। उधर मुझे नौकरों के हाथों में रहना पड़ता है।"

पर्दा बोला, "इसका कारण यह है कि मैं तो अपना सिर बादशाह की चौखट पर रखता हूं। तेरी तरह आसमान में नहीं उठता। जो मनुष्य [illegible] न से अपना सिर ऊंचा करता है वह सिर के बल ही गिरा भी करता है।"

एक बुजुर्ग ने एक पहलवान को देखा। वह गुस्से से भरा हुआ था और उसके मुंह से झाग निकल रहा था।

बुजुर्ग ने लोगों से पूछा, "इस पहलवान को क्या हो गया है ?"

लोगों ने बताया कि किसी ने इसे गाली दी थी, जिसके कारण यह गुस्से से पागल हो रहा है।

बुजुर्ग बोला, "यह दुष्ट हजार मन का पत्थर उठा लेता है और जरा-सी बात नहीं बर्दाश्त कर सकता है !"

'पहलवानी की डींग मत मार और बहादुरी का दावा छोड़ दे। जो मर्द दुष्टता के काबू में आ गया उसे औरत समझ।'

'किसी के मुह पर मुक्का मार देना बहादुरी नहीं। हो सके तो उसका मुह मीठा कर दे।'

'हाथी का माथा फाड़ देना बहादुरी नहीं। सच्ची बहादुरी इन्सानियत में है। आदम की औलाद मिट्टी से पैदा हुई है। उसमें मिट्टी जैसी नम्रता नहीं तो वह आदमी नहीं।'

मैंने एक बुजुर्ग से कहा, "सच्चे फकीरों का मिजाज कैसा होता है?'

वह बोला, "सच्चा फकीर दूसरों की भलाई को अपनी भलाई से ज्यादा जरूरी समझता है। विद्वानों ने भी कहा है, 'जो भाई अपना ही काम बनाने में लगा रहे वह न भाई है और न अपना है।'"

'तेरा साथी यदि सफर में जल्दी करे, तो तू ठहर जा। जिसका दिल तुझमें नहीं लगा है, तू भी उससे दिल न लगा।'

'यदि तुझमें ईमानदारी और परहेजगारी जैसे गुण नहीं हैं, तो फिर रिश्तेदारी से दोस्ती और प्रेम का नाता तोड़ दे।'

'खुदा को न मानने वाले हजार दोस्तों से वह एक गैर अच्छा है जो खुदा परस्त है।'

लोग कहते हैं कि एक बड़े आलिम[1] की एक बेटी थी। वह बेहद बदसूरत थी। वह काफ़ी सयानी हो चुकी थी। धन-दौलत और भारी दहेज के लालच में भी कोई उससे ब्याह करने को तैयार न था।'

'बदसूरत दुल्हन पर बारीक रेशमी कपड़े भी बुरे लगते हैं।'

विवश होकर एक अंधे व्यक्ति से उसका ब्याह कर दिया गया। संयोग से उन्हीं दिनों एक मशहूर हकीम सरान्दीप से आया। वह अंधों को अच्छा कर सकता था।

लोगों ने उस आलिम से पूछा, "तू भी अपने दामाद का इलाज क्यों

1. विद्वान्

नहीं करवा लेता ?"

उसने उत्तर दिया, "मुझे डर है कि यदि उसे दिखाई देने लगा तो वह मेरी बेटी को तलाक दे देगा।"

'बदसूरत औरत का शौहर अंधा ही अच्छा है।'

एक बादशाह मन-ही-मन फकीरों से नफरत करता था। एक समझदार फकीर इस बात को ताड गया। उसने कहा, "ऐ बादशाह! हम लोग तुझसे अधिक सुखी हैं। तेरे पास बहुत बडी सेना जरूर है, लेकिन मरेंगे हम और तू दोनों ही। अल्लाह ने चाहा तो कयामत के दिन हमारी दशा तुझसे अच्छी ही होगी।

"दुनिया को जीतने वाला अपने इरादों में कामयाब हो सकता है और फकीर रोटी को भी मोहताज रह सकता है, लेकिन जब मौत आएगी तो कब्र मे कफन के सिवा किसी के साथ कुछ भी न जाएगा।"

'जब एक दिन तेरी बादशाहत खत्म ही होगी तो अच्छा है कि तू अभी फकीरी ले ले।'

'देखने मे फकीरी महज एक गूदडी और मुडा हुआ सिर है किन्तु उसका फल अपने मन को जीतना और शान्ति पाना है।'

'वह फकीर नही है जो फकीर होने का दावा तो करे किन्तु लोग उसकी न सुनें तो उनसे लडने के लिए खडा हो जाए।"

'यदि चक्की के पाट के बराबर पत्थर भी पहाड से लुढककर आ जाए तो भी फकीर अपने रास्ते से नही डिगेगा। अगर वह डिगता है तो वह सच्चा फकीर है ही नहीं।'

'फकीरो में खुदा को याद करना, उसकी नेमतो का शुक्रिया अदा करना, उसकी खिदमत करना, उसी की मर्जी मे राजी रहना और मुसीबतों को सह लेना, इन सब गुणो का होना जरूरी है। जिसमे ये सब गुण हों वही सच्चा फकीर है। भले ही वह शाही पोशाक पहनता हो। दूसरी ओर, जो दिन-भर मारा-मारा फिरे, नमाज न पढे, इच्छाओं का गुलाम हो, लालची हो, दिन-भर काम वासनाओ से घिरा रहे और रात-भर सुस्ती मे पडा सोता रहे, जो भी हाथ लगे उड़ा ले और जो भी मुह में आए बक डाले वह ऐयाश है। फकीर नही, चाहे वह गूदडी ही क्यों न पहनता हो।'

'तेरा दिल तो साफ है नहीं और तूने कपड़े फकीरों के पहन रखे हैं। स ढोंग से तुझे क्या मिलेगा ? दरवाजे पर तू सतरंगे पर्दे मत लटका यदि घर के अन्दर बिछाने के लिए टाट के सिवा कुछ भी नहीं है।'

मैंने एक गुम्बद पर घास से बंधे हुए कुछ ताजे फूलों के गुलदस्ते रखे

हुए देखे। मैंने घास से कहा, "तू फूलों के साथ रहने योग्य कहां थी!"

वह रो पड़ी और बोली, "चुप रह! शराफत का अर्थ यह नही है कि दोस्ती को भुला दिया जाये। माना कि मुझमें सुन्दरता, रंग और खुशबू नही है किन्तु क्या मैं भी उसी बाग की घास नहीं हू जिसमे ये फूल खिलते है?"

इसी प्रकार मैं उस खुदा के दरबार का गुलाम हूं जो बडा रहीम है। मै उसी की नेमतो का पला हुआ हू। मुझे उस मालिक से सदा मेहरबानी की उम्मीद है। मेरे पास कोई पूंजी नहीं है और मैंने उसकी सेवा का पुण्य भी नही कमाया है किन्तु वह मेरी जरूरतो को समझता है और यह भी जानता है कि मेरा उसके सिवा और कोई सहारा नही है।

'नियम है कि जब गुलाम बूढ़ा हो जाता है, तो मालिक उसे आजाद कर देता है। ऐ दुनिया बनाने-संवारने वाले सर्वशक्तिमान खुदा! तू महान् है। तू अपने बूढे गुलाम 'सादी' को बख्श दे।'

'ऐ सादी! तू खुदा की मर्जी पर भरोसा कर। तेरे लिए यही काबा है। तू तो खुदा का गुलाम है। उसी के रास्ते पर चल।'

'जो इस दरवाजे से मुह मोड़ेगा, वह अभागा है। उसे और कोई दरवाजा नही मिलेगा।'

एक आलम से लोगों ने पूछा, "उदारता और पराक्रम मे कौन-सा गुण श्रेष्ठ है?"

उसने उत्तर दिया, "जिसके पास उदारता है उसे पराक्रम की आवश्यकता नही।"

बहराम गौर की कब्र पर लिखा हुआ है, "सखावत[1] का हाथ जोर के बाजू से बेहतर है।"

'हातिमताई तो न रहा लेकिन उसका नेक नाम उसकी दरियादिली के कारण अमर रहेगा।'

'अपनी सम्पत्ति में से जकात[2] निकालता रह, क्योंकि माली जब अंगूर की बेल को थोडी तराश देता है तो अंगूर ज्यादा फलता है।'

1. उदारता
2. इस्लाम धर्म के अनुसार सम्पत्ति के ढाई प्रतिशत का दान

3

सन्तोष

अफ्रीका का रहने वाला एक भिखारी हलब के बजाजों के बाजार में कह रहा था, "ऐ मालदारो ! अगर तुम्हारे पास न्याय होता और हमारे पास सन्तोष, तो दुनिया में भीख मांगने का रिवाज ही उठ जाता।"

'ऐ कनाअत ![1] तू मुझे मालदार कर दे; क्योंकि तुझसे बढ़कर कोई नेमत नहीं।'

'सब्र का कोना हजरत लुकमान को भी बहुत प्यारा था। यह सच है कि जिसे सब्र नहीं उसे इल्म भी नहीं मिल सकता।'

मिस्र देश में एक अमीर के दो बेटे थे। एक ने विद्या पाने में अपना जीवन लगा दिया और दूसरे ने धन कमाने में। पहला एक बड़ा आलिम बना और दूसरा मिस्र का वजीर बन गया।

एक दिन वजीर ने आलिम की तरफ उपेक्षा-भरी दृष्टि डाली और कहा, "मैं तो आज हुकूमत कर रहा हू और तू फकीर बना हुआ है। पढ़-लिखकर तुझे क्या मिला?"

वह बोला, "ऐ भाई ! तुझसे अधिक मैं अल्लाह की कृपा का आभारी हूं क्योंकि मैंने पैगम्बरों की मीरास[2] पाई है और तूने फिर औन[3] की।

"मैं वह चींटी हूं जिसे लोग पैरों तले मसल डालते हैं। वह बर्र नहीं हूं जिसके काटने से लोग रोने-चिल्लाने लगते हैं। मैं खुदा की इस नेमत का शुक्र कैसे अदा करूं? मुझमें आदमियों को सताने की शक्ति ही नहीं है।"

---

1. थोड़ी-सी चीज पर सन्तोष
2. गुजारे के लिए छोड़ी गई पूंजी
3. एक बादशाह जिसने खुदा होने का दावा किया था

एक फकीर के बारे मे मैंने सुना कि वह भूखों मरता था और अपनी फटी हुई गूदड़ी में पैबन्द लगाकर गुजर करता था फिर भी सब्र रखे हुए था।

वह कहता था, "हम रूखी रोटी और फटी पुरानी गूदड़ी पर ही सतोष कर लेते है क्योकि मुसीबत का गम दुनिया के अहसान से अच्छा है।"

किसी ने उससे कहा, "तू यहां क्यो बैठा है ? शहर मे अमुक व्यक्ति बडा उदार है। वह सबको दान देता है और फकीरो की सेवा के लिए तो हमेशा तैयार रहता है। यदि तेरी दीन-दशा के बारे मे उसे पता चल जाए तो वह खुशी से तेरी सेवा करेगा और ऊपर से तेरा अहसान भी मानेगा।"

फकीर बोला, "चुप रह ! तग रहकर मर जाना दूसरे के आगे हाथ फैलाने से कही अच्छा है।"

'दौलतमन्दों को खत लिखकर उनसे कपडो की माग करने मे फटी हुई गूदड़ी मे पैबन्द लगाकर एक कोने मे सब्र के साथ पडे रहना कही अच्छा है।'

'मैं खुदा की कसम खाकर कहता हू कि पडोसी की मदद से जन्नत पहुंचना दोजख की आग सहने से कम दुखदायी नही है।'

अजम के बादशाह ने एक होशियार हकीम हजरत मुहम्मद साहब की खिदमत में अरब भेजा। वह वहां कई वर्ष रहा किन्तु एक भी मरीज उससे दवा लेने नही आया। उसे बडा आश्चर्य हुआ। वह मुहम्मद साहब के पास गया और कहने लगा, "मुझे तो यहा आप लोगो के इलाज के लिए भेजा गया था लेकिन अभी तक किसी ने मेरी तरफ ध्यान ही नही दिया न अपनी सेवा का कोई अवसर दिया।"

मुहम्मद साहब ने फरमाया, "यहां का कायदा यह है कि लोग जब तक भूख से मजबूर नही हो जाते कुछ खाते ही नही और जब खाने बैठते हैं तो भूख रहते ही खाने से हाथ खीच लेते हैं।"

हकीम बोला, "तन्दुरुस्ती का राज यही है।" वह उनके सामने जमीन चूमकर आदाब बजा लाया और चला गया।

'बुद्धिमान मनुष्य उस समय तक बोलना शुरू नही करता है और उस समय तक भोजन की तरफ अपना हाथ नही बढाता है जब तक कि वह यह देख नही लेता कि उसके न बोलने से नुकसान हो रहा है या उसके भोजन न करने से उसकी जान पर आ बनी है। फलस्वरूप उसके बोल बुद्धिमानी से भरे हुए होते हैं और उसका भोजन स्वास्थ्यदायक होता है।"

अर्द-शीर-बाबका नामक बादशाह के जीवन-चरित मे लिखा है

अरब के एक हकीम से लोगों ने पूछा कि "एक दिन में कितना खाना खाना चाहिए ?'

उसने कहा, "उन्नीस तोला के लगभग।"

लोगों ने पूछा, "इतना कम खाने से ताकत कैसे आएगी ?"

हकीम ने कहा, "इतना ही भोजन तुझे उठाएगा। इससे ज्यादा को तू उठाता फिरेगा। इतना भोजन तुझे ताकत देने और खड़ा रखने के लिए काफी है। इससे ज्यादा खाएगा तो वह बोझ को ढोना और ताकत को खोना होगा।

"खाना तो जिन्दा रहने और खुदा को याद करने के लिए होता है। तू समझता है कि जिन्दगी खाने के लिए है !"

खुरासान के दो फकीर साथ-साथ सफर कर रहे थे। उनमें से एक कमजोर था। वह दो रातो के बाद एक बार रोजा खोलता था। दूसरा फकीर खूब मोटा-ताजा था। वह दिन मे तीन बार खाता था।

दुर्भाग्य से दोनो एक शहर के दरवाजे पर ही गिरफ्तार कर लिए गए। उन पर जासूसी का इलजाम लगाया गया। दोनों को ही कमरे में बन्द करके दरवाजे को मिट्टी से लीप दिया गया।

दो सप्ताह के बाद जब पता चला कि दोनों ही निर्दोष हैं तो दरवाजा खोला गया। क्या देखते है कि मोटा फकीर तो मर चुका है और कम खाने वाला जिन्दा और ठीक-ठाक है।

'जो कम खाता है वह गरीबी और तंगी मे भी आसानी से गुजर कर लेता है, जो खुशहाली में बहुत खाता है, वह कष्ट न झेल पाने के कारण जल्दी ही मर जाता है।'

एक बुद्धिमान व्यक्ति अपने बेटे को ज्यादा खाना खाने से रोकता था। वह कहता था कि पेट-भर खाने से आदमी बीमार पड़ जाता है।

बेटे ने कहा, "भूख आदमी को मार भी तो डालती है। क्या आपने नही सुना ? लोग हंसी-मजाक में कहा करते हैं कि भूखे रहने से तो भर-पेट खाकर मर जाना अच्छा है।"

पिता ने उत्तर दिया, "खाओ-पियो परन्तु हद से बाहर मत जाओ।"

'न इतना अधिक खाओ कि मुंह से बाहर निकल पड़े और न इतना कम खाओ कि कमजोरी से जान निकल जाए।'

'यद्यपि भोजन आनन्द देता है किन्तु जरूरत से ज्यादा कर लिया जाए तो वही भोजन कष्ट पहुंचाने लगता है।'

'यदि बिना भूख तू गुलकन्द भी खाएगा तो वह नुकसान करेगा। भूख

मे सूखी रोटी भी गुलकन्द का काम करेगी।"

एक बीमार से लोगों ने पूछा, "तेरा मन कौन-सी चीज खाने को करता है?"

उसने जवाब दिया, "किसी चीज को नही।"

'जब पेट ठसाठस भर जाता है और उसमें दर्द उठता है, तो उचित इलाज से भी लाभ नही होता।'

वासित शहर मे एक अनाज वेचने वाले बनिये के कुछ दरम सूफी लोगो पर कर्ज हो गए। वह रोज उनमे तकाजा करता और उन्हे बुरा-भला भी कहता।

सूफी उसकी सख्ती से परेशान थे। बर्दाश्त करने के अलावा वेचारे करते भी क्या?

एक बुजुर्ग ने उनसे कहा, "जबान को अच्छे खाने का लालच देना आसान है लेकिन बनिये का पैसा चुकाना इतना आसान नही।"

'बडे आदमियों का अहसान लेने से तो दरबान का जुल्म सह लेना अच्छा है।'

'गोश्त खाने की तमन्ना लिए मर जाना कसाइयों के सख्त तकाजे से अच्छा है।'

एक बहादुर सिपाही तातार की लड़ाई मे जख्मी हो गया। किसी ने उससे कहा, "अमुक सौदागर के पास बडी अच्छी दवा है। यदि तू मागे तो वह मना नही करेगा। यों वह अपनी कजूसी के लिए बहुत बदनाम है।"

'यदि उसके दस्तरख्वान पर रोटी की जगह सूरज की टिकिया रखी होती तो कयामत तक कोई सूरज की रोशनी नही देख पाता।'

सिपाही बोला, "अगर मैं उससे दवा मागू तो पता नही वह देगा या नही। वह दे भी दे तो जाने वह फायदा भी करे या नही। उससे फायदा चाहना मेरे लिए घातक जहर होगा।"

'तुच्छ लोगो से खुशामद करके जो भी तू मागेगा उससे तेरा शरीर चाहे पल जाए पर तेरी आत्मा जरूर कमजोर हो जाएगी।'

अक्लमन्दो का कहना है कि 'इज्जत-आबरू के बदले अमृत भी मिलता हो तो उसे नही लेना चाहिए। बेइज्जती से जीने से तो इज्जत से मर जाना अच्छा है।'

'नेक आदमी के हाथ से एलुया[1] भी खाना अच्छा है।'

1. कड़वी दवा

जान पर आ बनी है।" हजरत मूसा ने दुआ कर दी और चले गए।

कुछ दिन बाद जब वह लौटे तो देखा कि वह फकीर गिरफ्तार हो गया है और लोग उसे घेरे खड़े हैं। हजरत मूसा ने पूछा, "क्या बात है?" लोगों बताया कि उसने शराब पीकर किसी से झगड़ा किया था। एक आदमी को मार भी डाला। अब उसे मौत की सजा दी गई है।

'बिल्ली के पर होते तो वह चिड़ियों का बीज ही दुनिया से मिटा देती, गधा बैल की तरह दो सींग रखता तो किसी आदमी को अपने पास ही न फटकने देता।'

'कमजोर आदमी के हाथ मे ताकत आ जाए तो वह उठ खड़ा होगा और दूसरे कमजोरो के हाथ मरोड देगा।'

'अल्लाह अपने बन्दो के लिए तमाम जमीन पर खाने की वस्तुए बिखेर दे तो लोग लड़ेंगे और एक दूसरे का सिर काट डालेंगे।'

'नीच व्यक्ति को जब सोना-चांदी और ओहदा मिल जाता है तो उसके सिर को चपत की भी जरूरत होती है।'

'क्या तूने नहीं सुना कि अफलातून ने क्या कहा है?—चींटी वही अच्छी है जिसके पर न हो।'

'बाप के पास तो शहद बहुत है पर बेटे का मिजाज गर्म है। जो खुदा तुझे अमीर नही बना रहा है वह तेरी भलाई तुझसे ज्यादा जानता है।'

मैंने अरब के एक आदमी को बसरा मे देखा। वहां वह जौहरियो के बीच बैठा हुआ अपना किस्सा बयान कर रहा था।

उसने कहा, "मैं एक बार जगल मे रास्ता भूल गया। मेरे पास जो खाना था वह खत्म हो गया। मैंने समझ लिया कि अब मेरी जान नहीं बचेगी। उसी समय अचानक मुझे एक थैली पड़ी हुई मिली। मैंने समझा कि उसमें भुने हुए गेहू के दाने होंगे। उस समय मुझे जो खुशी हुई उसे मैं भूल नही सकता। मैंने थैली खोली तो देखा कि वह मोतियो से भरी हुई थी। मुझे बडी निराशा हुई।"

'सूखे रेगिस्तान मे जहा रेत ही रेत है, वहां प्यासे के मुह में चाहे मोती रख दो या सीपी दोनो बराबर है। जिस मुसाफिर के थैले मे भोजन नही रहा उसमें सोना भर दो या कंकड़, कोई फर्क नहीं पड़ेगा।'

अरब का एक व्यक्ति जंगल मे प्यासा भटक रहा था और कह रहा था, "काश! मरने से पहले मेरी मुराद पूरी हो जाती। काश! मुझे एक नहर मिल जाए जिसमे घुटनो तक पानी भरा हो और मैं अपनी मशक भर लूं।"

कोई फकीर एक विस्तृत रेगिस्तान मे रास्ता भूल गया। पैरों में आगे

चलने की ताकत भी नही बची थी। उसके पास खाना नही था। सिर्फ कुछ दरम थे लेकिन उनकी कोई उपयोगिता नही था। वह बहुत भटका; लेकिन उसे रास्ता नहीं मिला। भूख और थकान से उसकी मृत्यु हो गई।

बाद में कुछ लोग उधर से गुजरे तो उन्होंने देखा कि फकीर की लाश के पास कुछ दरम पड़े हुए हैं और जमीन पर लिखा है, 'सन्दूकची सोने-चांदी से भरी हुई हो तो भी बिना भोजन के आदमी एक कदम भी नहीं चल सकता। रेगिस्तान मे भूख से व्याकुल और गर्मी से झुलसते हुए फकीर के लिए उबला हुआ शलजम चादी से ज्यादा मूल्यवान है।'

मैंने बुरे वक्त की कभी शिकायत नही की और न परेशान होकर मुह बिगाड़ा। हा, एक बार मैं भी हिम्मत हार बैठा था। मेरे पास जूते खरीदने के लिए पैसे नही थे। मैं नंगे पांव घूमा करता। मैं बहुत दुखी था।

एक दिन मैं कोफा की मस्जिद मे पहुचा। वहां मैंने एक आदमी को देखा जिसके पैर ही नही थे।

मैंने अल्लाह की नेमत का शुक्रिया अदा किया कि उसने मेरे पैर तो सलामत रखे। मैंने जूते न होने का दुख सह लिया।

'जिसका पेट भरा हुआ है उसे भुना हुआ मुर्ग सब्जी मे भी अधिक बद-जायका लगेगा। जिसे खाना ही मुश्किल से मिलता है उसके लिए उबला हुआ शलजम ही भुने हुए मुर्ग जैसा है।'

जाड़े का मौसम था। एक बादशाह अपने कुछ खास मित्रो के साथ जंगल में शिकार खेलने गया। जब वे बहुत दूर निकल गए और रात होने लगी तो उन्हें कहीं ठहरने की फिक्र हुई।

संयोग से पास ही मे एक देहाती का घर दिखाई दिया। बादशाह ने कहा, "चलो यही रात गुजारें। सर्दी से तो बचेंगे।"

एक वजीर ने कहा, "यहां ठहरना आपकी शान के खिलाफ है। हम मैदान मे ही डेरा डाल देगे और सर्दी के बचने के लिए आग जला लेते हैं।"

जब गरीब देहाती को पता चला कि बादशाह ने वहा डेरा डाला है तो जो कुछ भोजन उसके घर मे तैयार था वह उसे लेकर हाजिर हुआ। आदाब बजा लाते हुए उसने बादशाह से कहा, "मेरे घर ठहरने से आपकी शान में कोई फर्क नहीं आता, हां मेरा दर्जा जरूर ऊंचा हो कि इन लोगों ने नहीं चाहा कि एक गरीब आदमी की

बादशाह को देहाती की बात पसन्द आई। वह पर ठहरा। सुबह उसने उसे पोशाक और धन के रूप

मैंने सुना कि उस देहाती ने आगे बढ़ कर बादशाह की बन्दगी करते हुए कहा, "एक गरीब के घर आने से बादशाह की शान-शौकत में कोई कमी नहीं आई, परन्तु गरीब का मर्तबा इतना ऊंचा हो गया कि अब उसकी टोपी का किनारा सूरज को छू रहा है, क्योंकि बादशाह का साया उसके सिर पर है।"

मैंने देखा कि एक सौदागर के पास डेढ़ सौ ऊंट और चालीस गुलाम और खिदमतगार थे। एक रात वह मुझे अपने कमरे में ले गया। तमाम रात उसने डींगें मारने में गुजार दी। न खुद सोया और न मुझे सोने दिया।

मुझसे उसने कहा, "मेरा इतना सामान तुर्किस्तान में पड़ा है और इतना हिन्दुस्तान में। यह रहा उस जमीन का बयनामा। मेरी फला चीज का फला आदमी जामिन है।" कभी वह कहता कि "मेरा इरादा इस्कन्दरिया जाने का है क्योंकि वहां मौसम अच्छा है।" फिर कहता कि "अभी नहीं जाऊंगा क्योंकि मिस्र की खाड़ी में बाढ़ आई हुई है।" थोड़ी देर में उसने कहा, "सादी साहब! मुझे एक सफर और करना है। अगर वह सही-सलामत पूरा हो जाए तो बाकी उम्र मैं एकान्त में गुजारूंगा और सब्र से काम लूंगा।"

मैंने पूछा, "वह कौन-सा सफर है?"

वह बोला, "मैं फारस से गंधक खरीदकर चीन ले जाना चाहता हूं। मैंने सुना है कि वहां गंधक अच्छे दामों पर बिकता है। वहां से मैं चीनी बर्तन रोम ले जाऊंगा और रोम का रेशमी कपड़ा 'देवा' हिन्दुस्तान ले जाऊंगा और हिन्दुस्तान से लोहा हलब ले जाऊंगा। हलब से आईने खरीदकर यमन ले जाऊंगा और यमन की चादरें फारस ले लाऊंगा। बस, इसके बाद कोई सफर नहीं करूंगा और दूकान पर बैठ जाऊंगा।"

साफ बात तो यह है कि उसने पागलपन में आकर इतनी बकवास की कि वह खुद भी थक गया। जब उसमें ज्यादा बोलने की ताकत नहीं बची तो मुझसे बोला, "सादी साहब! आप भी तो कुछ कहिए। आपने क्या देखा और सुना?"

मैंने कहा, 'तुमने शायद सुना होगा कि गौर के जंगल में पिछले साल एक सौदागर घोड़े से गिर पड़ा तो उसने कहा, 'ससार की लालची आंखों को सब्र ही भर सकता है या फिर कब्र की मिट्टी।'

एक मालदार के बारे में मैंने सुना है कि वह अपनी कजूसी के लिए इतना ही प्रसिद्ध था जितना कि हातिमताई दान देने के लिए। दुनिया-भर की दौलत उसने इकट्ठी कर रखी थी, फिर भी दिल इतना छोटा था कि

वह रोटी के एक-एक टुकड़े के लिए जान देता था। शायद वह हजरत अबू हरीरा[1] की बिल्ली को भी एक लुक्मा न डालता और न असहाबेकैफ[2] के कुत्ते के लिए एक हड्डी छोडता। जब कभी उसके घर का दरवाजा खुलता तो उसके दस्तरख्वान को कोई देख भी नही पाता। फकीर सिर्फ उसके खाने की खुशबू सूंघ सकता था। खाना खत्म होने के बाद एक दाना भी न बचता जिसे कोई चिडिया भी चुग ले।

मैंने सुना कि उसका इरादा मिस्र की खाडी से होकर मिस्र जाने का हुआ। फिरऔन की तरह घमंड में चूर होता हुआ वह रवाना हुआ। कहते है कि हवा उसकी किश्ती के खिलाफ चल पडी और उसे समुद्र मे जा डुबोया।

'तेरी आत्मा तेरे दुष्ट मन का साथ कैसे दे? समुद्र की हवा सदा किश्ती के अनुकूल नही होती।' डूबते समय उसने दुआ के लिए हाथ उठाए और चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया, लेकिन सब बेकार गया।

'मुसीबत आ पडने पर दुआ के लिए हाथ उठाने से क्या होता है? सब बेकार है यदि केवल दुआ के वक्त तो हाथ ऊपर उठे और खैरात करने के वक्त बगल मे दबा लिए जाए।'

'अपनी चांदी और सोने से दूसरो को भी आराम पहुचा और खुद भी सुख उठा। यह घर-बार तो तुझसे छूट ही जाएगा। इन सोने और चादी की ईंटों में से कम-से-कम एक ईंट तो खैरात मे खर्च कर दे।'

कहते हैं कि उसके गरीब रिश्तेदार मिस्र मे थे। उसके बाद उसके छोडे हुए धन से वे मालदार हो गए। उन्होंने अपने पुराने कपडे फाड़ डाले और रेशमी पोशाकें बनवाईं।

उसके एक रिश्तेदार को मैं पहले से जानता था। मैंने उसकी आस्तीन पकड़कर कहा, "ऐ नेक और पाक दिल इन्सान! खूब खा इस दौलत को। उस कंजूस ने तो इसे जमा ही किया, खाया नहीं।"

किसी कमजोर मछुआरे के जाल में एक मोटी-सी मछली फस गई। वह उसे सम्हाल न सका और मछली उसके हाथ से जाल ले गई।

'शिकारी के हाथ हर बार शिकार नहीं लगता। किसी दिन हो सकता

1. मुहम्मद साहब के मित्र। इनके साथ एक बिल्ली रहती थी जो इन्हें बहुत प्रिय थी।
2. ये सात दरवेश थे जो कैफ की गुफाओं में रहते थे। इनके साथ एक कुत्ता भी रहता था जो इन्सानों की तरह समझदार था।

है कि उसे चीता खा जाए।'

दूसरे मछुआरों ने उसकी हंसी उडाई। कहने लगे, "एक मछली तेरे जाल मे फंसी थी और तू उसे थाम न सका?"

मछुआरे ने कहा, "भाइयो, क्या किया जाए? वह मछली मेरी रोजी न थी और उसकी जिन्दगी बाकी थी।"

'जिस मछुआरे की किस्मत मे रोजी न हो उसे दजला नदी मे भी मछली नही मिल सकती। जिस मछली की मौत नही आई हो वह पानी के बाहर भी नही मरेगी।'

एक लंगडे-लूले व्यक्ति ने एक कनखजूरा मार डाला। कोई खुदा का प्यारा उधर से गुजरा। कनखजूरे को देखकर वह बोला, "अल्लाह की कुदरत देखो। यह हजार पैरो वाला कनखजूरा! जब इसकी मौत आई तो लंगडे-लूले के सामने से भी न भाग सका।"

'जब पीछे से जान का दुश्मन आता है तो मौत भागने वाले के पांव बांध देती है।'

'जब दुश्मन दमादम आकर घेर ले तो कयानी[1] कमान से तीर चलाना बेकार है।'

किसी चोर ने एक भिखारी से कहा, "तुझे चादी के एक जौ के लिए हर कमीन के सामने हाथ फैलाना पडता है। तुझे ऐसा करते शर्म नही आती?"

उसने जवाब दिया, "एक जौ चादी के लिए हाथ फैलाना थोडे-से माल की चोरी करने और लोगो से अपने हाथ के दो टुकड़े करवाने से अच्छा है।"

एक पहलवान के बारे मे कहा जाता है कि वह मुसीबत मे फंस गया और पैसो से तंग हो गया। खाना न मिलने से उसकी जान पर आ बनी। वह अपने वालिद के पास गया और बोला, "मेरा इरादा बाहर जाने का है। शायद वहां मेहनत-मशक्कत करके कुछ कमा सकू।"

'जब तक कुछ काम न किया जाए, आदमी की बुजुर्गी और हुनर का पता नही चलता।'

'अगर[2] की पहचान आग मे जलाने से और मुश्क[3] की पहचान पत्थर पर घिसने से होती है।'

---

1. कयान देश की कमान मशहूर होती थी।
2. खुशबूदार लकड़ी
3. कस्तूरी

वालिद ने कहा,"बेटा, नामुमकिन का ख्याल छोड़ दे और सब्र से काम ले। घर के कोने में महफूज[1] बैठे रहना अच्छा है, क्योंकि आलिमों ने कहा है, "दौलत कोशिश करने से नही मिलती उसके लिए सब्र करना पड़ता है।"

'अपनी दिलेरी से कोई अमीर नहीं बनता। अंधी आंखो वाले का भौंहों पर खिजाब लगाना बेकार है।'

'चाहे तेरे हर बाल में सौ-सौ हुनर हों लेकिन तेरी किस्मत साथ न दे तो सब बेकार है।'

जवान ने फिर कहा, "अब्बाजान! सफर के बहुत-से फायदे हैं। सौदागरी से फायदा होता है, मनबहलाव होता है, अनोखी चीजें देखने को मिलती हैं, नयी-नयी बातें सुनने मे मजा आता है, नये-नये शहरो की सैर करने को मिलती है, दोस्तों से बात-चीत करके अदब और सलीका आता है —आदि-आदि।'

'जब तक तू घर की दूकान में गिरवी रखा रहेगा तू कभी संसार के अनुभव नही प्राप्त कर सकता और न आदमी बन सकता है। इससे पहले कि तू दुनिया से चल बसे, जा! दुनिया की सैर कर।'

वालिद ने कहा, "बेटा! जो तूने बताया वह ठीक है कि सफर से कई फायदे हैं। लेकिन सफर करना सिर्फ पांच किस्म के लोगों के लिए फायदेमन्द है।

"एक तो वे लोग जो सौदागर हैं और जिनके पास धन-दौलत के अलावा चुस्त और फुर्तीले नौकर-चाकर भी हों।

"जिसके पास खूब दौलत है वह चाहे जंगल मे रहे चाहे पहाड़ों पर उसके लिए कहीं कोई तकलीफ नही। वह कहीं भी मुसाफिर नही होता। जहां भी डेरे लगा दिए वही दरबार लग गया, लेकिन गरीब आदमी अपने ही देश में मुसाफिर की तरह होता है। उसे कोई नहीं जानता।

"दूसरे वे लोग सफर से लाभ उठाते हैं जो आलिम हैं और अपनी मीठी बोल-चाल और योग्यता के कारण जहां भी जाते हैं इज्जत पाते हैं। लोग उनकी खिदमत के लिए दौडे चले आते है।"

'आलिम सोने की तरह होता है। सोने की हर जगह कद्र होती है। जिसमें बुद्धि नही है उसका कही आदर नहीं होता। परदेस में तो कोई कौडी को भी नही पूछता।'

---

1. सुरक्षित

'तीसरी किस्म उन हसीनों की है जिन्हें देखकर जाहिद[1] का दिल मचलने लगे। बुजुर्गों ने कहा है कि '*थोड़ा हुस्न बहुत दौलत से बढ़कर है।*' लोग यह भी कहते है, 'हसीन मुखड़ा टूटे हुए दिलों के लिए मरहम का काम करता है और वह बन्द दरवाजों की कुंजी है।'

'जब मैंने मोर के खूबसूरत पंख कुरान शरीफ के पन्नों के बीच रखे हुए देखे तो एक मोर से कहा, '*तेरी यह कद्र तेरे मर्तबे से अधिक है।*' मोर बोला, 'चुप रह ! जो हुस्न रखता है वह जहां भी जाता है लोग उसे हाथों हाथ लेते हैं।'

"चौथे लोग वे है जो अच्छे गायक है। *जिनका गला दाऊद[2] जैसा हो* और जो अपने संगीत के असर से पानी को बहने से और परिन्दों को उड़ने से रोक दे। इस गुण से वह लोगों का मन मोह लेगा। हुनर की कद्र करने *वाले लोग ऐसे व्यक्ति को अपने पास रखना पसन्द करेंगे और हर तरह से* उसकी खिदमत करने को तैयार रहेंगे।"

'मेरे कानों में संगीत का आनन्द समाया हुआ है। यह किसने सितार *छेड़ दिया?*'

'सुन्दर आवाज सुन्दर चेहरे से भी ज्यादा अच्छी लगती है क्योंकि संगीत तो मन का आनन्द और आत्मा का भोजन है।'

"पांचवें *लोग* वे है जो हाथ-पांव से मेहनत कर के रोटी *कमा सकें ताकि* अपमानित होकर किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े। बुजुर्गों ने कहा है, 'रूई धुनने वाला अपने शहर से बाहर भी चला जाए तो भूखा नहीं मरेगा, *लेकिन यदि नीमरोज का बादशाह अपने देश के बाहर कहीं मुसीबत में पड़* जाए तो भूखा सोएगा।"

वालिद बोला, "ऐ बेटे ! ये सब गुण जिनका मैंने वर्णन किया, सफर में काम आते हैं। जिन्दगी में *इन से सुख मिलता है। जिस व्यक्ति में ये* गुण नहीं होंगे वह मारा-मारा फिरेगा और कोई उसकी बात तक न पूछेगा।"

'जब मनुष्य का दुर्भाग्य उसके पीछे पड़ा हो तो संसार के लोग उसे उलटी राय ही देते हैं।'

'जिस कबूतर की मौत उस पर मंडरा रही हो और जिसकी किस्मत में

---

1. परहेजगार
2. हजरत दाऊद संगीत-विद्या में बड़े निपुण थे।

फिर से घोंसले में आना न बदा हो वह स्वयं ही जाल और दाने की ओर चला जाता है।'

बेटे ने कहा, "अब्बा जान ! विद्वानों के मत का विरोध कैसे करूं? उन्होंने कहा है कि रोजी यद्यपि तकदीर के लिखे के अनुसार मिलती है फिर भी उसे पाने के लिए प्रयत्न करना जरूरी है। तकदीर में मुसीबत ही लिखी हो, तो भी उसे टालने का उपाय तो करना ही चाहिए। इस वक्त तो मुझमें ताकत है। मैं मस्त हाथी से लड़ सकता हूं और शेर से पंजा लड़ा सकता हूं। इसलिए उचित यही है कि मैं सफर में जाऊं। मैं तंगी और गरीबी को अब और नहीं सह सकता।"

'इन्सान अपनी आराम और अपने दर्जे से गिर जाए तो फिर उसे किस बात का डर? तमाम दुनिया उसका घर है। वह जहां चाहे रहे।'

'हर अमीर रात को लौटकर अपने घर आ जाता है लेकिन फकीर को जहां रात हो जाए, वहीं उसका घर है।'

यह कह कर उसने अपने वालिद से विदा मांगी। बेटे को जाते हुए देख कर वह अपने मन में कह रहा था, 'जब हुनरमन्द का नसीब उसका साथ नहीं देता, तो वह कहीं भी चला जाए, कोई उसे नहीं जानेगा।'

जवान चलते-चलते एक ऐसी जगह पर पहुंचा जहां नदी का पानी इतना तेज बह रहा था कि पत्थर से पत्थर टकरा रहे थे और पानी का शोर कोसों दूर तक जा रहा था। नदी इतनी भयानक थी कि उसके अन्दर मुर्गा-बियां भी नहीं टिक पा रही थीं। उसकी तेज धार चक्की के पाट को भी वहा ले जाती।

नदी के किनारे उसने कुछ आदमियों की भीड़ देखी। हर कोई अपना-अपना सामान बांधे और एक-एक कराजा[1] हाथ में लिए किश्ती में बैठा था।

इस जवान के पास देने को कुछ नहीं था। उसने उन मुसाफिरों से मिन्नत की, उनकी तारीफ भी की लेकिन किसी ने उसकी सहायता न की। मल्लाह भी उसके पास से हंसता हुआ आगे बढ़ गया और बोला, "बिना ...से के तू किसी पर जोर नहीं चला सकता और अगर तेरे पास पैसा है तो किसी पर जोर दिखाने की जरूरत ही नहीं। सिर्फ जिस्म के बल पर तू नदी पार नहीं कर सकता। दस आदमियों की ताकत रखने में ... होता है बस एक आदमी का किराया दे दे और किश्ती में..."

मल्लाह के ताने से उस जवान का दिल भर...

1. छोटा सिक्का

उसे इस बात की सजा दे लेकिन कोई चारा नहीं था। देखते ही देखते किश्ती रवाना हो गई।

उसने मल्लाह को आवाज दी और कहा, "मैं जो कपड़े पहने हुए हूं अगर तू इन्हें किराए के बदले में ले ले तो मैं दे सकता हूं।"

मल्लाह को लालच आ गया और उसने किश्ती लौटा ली।

'लालच अक्लमन्द आदमी की भी आंख सी देता है। परिन्दे और मछली को लालच ही जाल में फंसाता है।'

जैसे ही जवान का हाथ मल्लाह की दाढ़ी और गिरेबान तक पहुंचा, उसने उसे अपनी तरफ खींच लिया और बेधड़क मारने लगा। मल्लाह को बचाने के लिए एक मुसाफिर किश्ती से उतरकर आया भी लेकिन खतरा देखा तो पीठ फेरकर चल दिया। सबने यही उचित समझा कि जवान के साथ समझौता कर लिया जाए और उससे किश्ती का किराया न लिया जाए।

'जब तू लड़ाई-झगड़ा देखे तो धैर्य से काम ले। नम्रता झगड़ा समाप्त कर देती है।'

'हम मीठी जबान और दया तथा प्रेम के व्यवहार से हाथी को भी एक अकेले बाल से बांध सकते हैं।'

'जहां झगड़ा देखो, नर्मी से काम लो। तेज तलवार से नर्म रेशम को नहीं काटा जा सकता।'

लोगों ने जवान के पैरों पर गिरकर उससे माफी मांगी, उसकी खुशामद की, उसके सिर-आंखों को चूमा और समान सहित उसे किश्ती में ले आए। किश्ती फिर से रवाना हुई।

अब ये लोग पत्थर के एक खम्भे के पास पहुंचे। यह यूनान की किसी पुरानी इमारत का खंडहर था जो पानी में खड़ा रह गया था। यहां पहुंचकर मल्लाह ने कहा, "किश्ती मे कुछ खराबी आ गई है। आप लोगों मे जो सबसे ज्यादा ताकतवर हो वह इस खम्भे पर चढ़ जाए और किश्ती की रस्सी पकड़े रहे। मैं इस बीच किश्ती ठीक कर लूगा।"

जवान को अपनी ताकत पर बड़ा घमंड था। वह इस काम के लिए राजी हो गया। उसने यह नही सोचा कि मल्लाह उसका दुश्मन बन चुका है। आलिमों ने कहा है :

[illegible]

'एक सिपाही ने जमादार से कितनी सच्ची बात कही कि जब तूने

दुश्मन को सताया है, तो उससे बेखबर न रह।'

'यदि तेरे हाथों किसी का दिल दुखा है तो तू भी बेफिक्र न बैठ। तेरा भी दिल दुखाया जाएगा।'

'किले की दीवार पर पत्थर न फेंक। हो सकता है कि जवाब में अन्दर से भी पत्थर आएं।'

जैसे ही जवान अपनी कलाई पर रस्सी लपेटकर खम्भे के ऊपर चढ़ने लगा, मल्लाह ने उसके हाथ से रस्सी खींच ली और किश्ती चला दी। जवान बेचारा हैरान रह गया। दो दिन तक भूखा-प्यासा खम्भे पर लटका रहा। तीसरे दिन उस पर नींद सवार हुई और वह पानी में गिर पड़ा। एक दिन और एक रात पानी में बहते-बहते वह किसी करह किनारे पर जा लगा।

अभी उसकी कुछ जिन्दगी बाकी थी। वह पेड़ों की पत्तियां और घास की जड़ें खाकर अपनी भूख मिटाने लगा। उसमें थोड़ी-सी ताकत आ गई तब वह जंगल की तरफ चल दिया।

भूख और प्यास से निढाल होता हुआ वह एक कुएं पर पहुंचा। वहां भी लोग एक अद्धी[1] लेकर पानी पिला रहे थे। जवान के पास तो अद्धी थी नही, उसने अपनी लाचारी बतलाते हुए पानी मांगा। किसी को उस पर रहम नहीं आया। उसे फिर से गुस्सा आ गया और उसने कुछ आदमियों को पीट डाला। शोर सुनकर वहां भीड़ जमा हो गई। सबने मिलकर जवान को उद्दंडता की सजा देने के लिए मारते-मारते जख्मी कर डाला।

'मच्छर जब बहुत हो जाते हैं तो वे हाथी को भी मार डालते हैं यद्यपि हाथी में बड़ी शक्ति है।'

'चींटियां जब संगठित हो जाती हैं तो शेर की भी खाल उतार लेती हैं।'

विवश होकर जवान एक काफिले के पीछे हो लिया। रात को वे ऐसी जगह पहुंचे जहां चोरों का बहुत डर था। काफिले के लोग डर के मारे कांप रहे थे। उनकी यह दशा देखकर जवान उनसे बोला, "घबराइए नहीं। आप लोगों के बीच एक मैं ऐसा जवान हूं कि अकेले पचास आदमियों का डटकर मुकाबला कर सकता हूं। फिर आपमें से कुछ लोग भी तो मेरी मदद करेंगे ही।"

उसकी इन बातों से काफिले के लोगों को कुछ तसल्ली मिली। उन्हें ऐसे आदमी का साथ पाकर बड़ी खुशी हुई। उन्होंने उसे कुछ खाने-पीने को दिया। जवान तो भूखा था ही। उसके पेट मे आग लग रही थी। खाना

1. छोटा सिक्का

खाया तो जान में जान आई। वह निश्चिन्त हो कर सो गया।

काफिले में एक अनुभवी बूढ़ा भी था। वह बोला, "ऐ साथियो! चोरों से ज्यादा तो मुझे तुम्हारे इस साथी से डर लगता है। लोग एक कहानी कहा करते हैं कि एक देहाती के पास कुछ दरम इकट्ठे हो गए थे। उसे चोरों के डर से रातभर नींद नहीं आती थी। वह अपने एक मित्र को बुला लाया। उसने सोचा कि एक से दो हो जाएं तो अकेले घर में डर न लगे। उसका मित्र कई दिनों तक उसके साथ रहा। जैसे ही उसे दरमों का पता चला वह रात में उन्हें चुराकर भाग गया। सुबह बेचारा देहाती खाली हाथ था। किसी ने उससे पूछा, 'क्या तेरा धन चोर ले गए?' वह बोला, 'नहीं, खुदा की कसम! मेरा साथी ले गया।"

'जब तक मैं किसी मित्र के स्वभाव को अच्छी तरह पहचान नहीं लेता, मैं उसके साथ निश्चिन्त नहीं बैठ सकता।'

'उस दुश्मन के दांत बहुत तेज होते हैं, जो लोगों को दोस्त दिखाई देता है।'

बूढ़े ने आगे कहा, "तुम्हें क्या मालूम? हो सकता है कि यह चोरों के गिरोह का आदमी हो और चालाकी से हमारे साथ घुल-मिल गया हो। मौका पाकर यह उन्हें खबर कर देगा और हम लूट लिए जाएंगे। उचित तो यही मालूम पड़ता है कि इसको यहीं सोता हुआ छोड़कर हम लोग चल दें। आओ, झट-पट अपना सामान बांध लें।'

काफिले वालों को बूढ़े की नसीहत पसन्द आई। उनके दिल में उस पहलवान का डर बैठ गया। उन्होंने अपना-अपना सामान उठाया और उसे वहीं सोता हुआ छोड़कर चले गए।

जब सूरज निकला और उसके मुंह पर धूप आ गई तो जवान की आंख खुल गई। उसने देखा कि काफिला जा चुका था। बेचारा इधर-उधर भटका लेकिन किसी रास्ते से मंजिल तक न पहुंच सका।

वह भूखा-प्यासा खाक में लोटने लगा और मौत का इन्तजार करने लगा। वह कह रहा था, "अब कौन है जो मुझसे बातें करेगा? काफिले वालों के ऊंट चले गए। मुसाफिर का तो मुसाफिर ही दोस्त होता है।"

'मुसाफिरों पर वही व्यक्ति जुल्म करता है, जो स्वयं सफर में अधिक न रहा हो।'

एक शहजादा शिकार खेलते-खेलते उधर आ पहुंचा। वह जवान के पास ही खड़ा उसकी बातें सुन रहा था। उसने देखा कि जवान सुडौल और सुन्दर है। न जाने कैसे इस मुसीबत में पड़ गया होगा।

उसने जवान से पूछा, "तू कहां का रहने वाला है और यहां कैसे आ गया?"

जवान ने संक्षेप में अपनी कहानी कह सुनाई। शहजादे को उस पर दया आ गई। उसने उसे कपड़ों का एक जोड़ा बख्श दिया। एक नौकर भी साथ कर दिया जो जवान को उसके घर पहुंचा आया।

उसका वालिद उसे देखकर बहुत खुश हुआ। उसके घर लौट आने पर उसने खुदा का शुक्र अदा किया। रात में उसने वालिद को सारा हाल कह सुनाया। वह बोला, "बेटा! जाने से पहले मैंने तुझ से नहीं कहा था कि—

"खाली हाथ आदमी की हिम्मत का बाजू बंधा होता है और उसकी बहादुरी का पंजा टूटा होता है।

"उस खाली हाथ सिपाही ने क्या अच्छी बात कही कि जौ-भर सोना सत्तर मन बल से अधिक होता है।"

जवान ने कहा, "अब्बाजान! यह बात तो माननी पड़ेगी कि जब तक आप मेहनत नहीं करेंगे, आपको दौलत नहीं मिल सकती, जब तक आप जान को जोखिम में नहीं डालेंगे, दुश्मन को जीत नहीं सकेंगे और जब तक आप खेत में दाना नहीं बिखेरेंगे, खलिहान कहां से उठा लेंगे? आपने देखा नहीं कि थोड़ी-सी तकलीफ उठाकर मैंने आराम कितना पाया! जो डंक मैंने खाया उसको सह कर शहद कितना जमा कर लिया!"

'यद्यपि तू तकदीर के सहारे रोजी नहीं पा सकता, फिर भी रोजी की तलाश में तुझे आलस नहीं करना चाहिए।'

'गोताखोर यदि मगरमच्छ के जबड़े से डरेगा तो वह कभी भी मोती नहीं पा सकता।'

'चक्की का निचला पाट जो नहीं घूमता अपने ऊपर भारी बोझ को बर्दाश्त करता है।'

'खूंखार शेर भी यदि अपनी गुफा के अन्दर ही पड़ा रहे तो क्या खाएगा? सुस्त बाज यदि शिकार न पकड़े तो उसे खाना कौन देगा?'

'तुम घर बैठे ही शिकार खेलना चाहोगे तो तुम्हारे हाथ-पांव भी मकड़ी की तरह बंध जाएंगे।

वालिद ने कहा, "इस बार किस्मत ने साथ दे दिया कि तेरे पास एक दौलतमन्द आ गया और उसने तेरी दीन दशा देखकर तेरी सहायता कर दी। ऐसा संयोग हमेशा नहीं होता है। जो बातें संयोगवश हो जाती हैं उनके आधार पर कोई नीति नहीं बनाई जा सकती।"

'शिकारी हर बार गीदड़ मारकर घर नहीं लौटता। कभी उसे चीता भी फाड़ खाता है।'

कहते हैं कि फारस के एक बादशाह के पास एक बेशकीमती नगीना था जो उसकी अंगूठी में जड़ा हुआ था। एक दिन वह कुछ लोगों के साथ शीराज की ईदगाह में सैर करने गया। वहां उसने अजद-उद्दीन के गुम्बद पर अंगूठी रखवा दी और यह घोषणा करवा दी कि जो कोई इस अंगूठी के छल्ले में होकर तीर निकाल दे उसे अंगूठी इनाम में दे दी जाएगी।

बादशाह के साथ उस समय लगभग चार सौ मशहूर तीरंदाज थे। सबने अपनी-अपनी किस्मत आजमाई लेकिन किसी का तीर निशाने पर नहीं बैठा।

एक छोटा-सा बच्चा छत पर खेल रहा था। वह अपनी नन्हीं-सी कमान से हर तरफ तीर फेंक रहा था। संयोग की बात है कि तेज हवा के झोंके ने उसका तीर उड़ाकर अंगूठी के छल्ले के बीच से निकाल दिया। बच्चे को इनाम दिया गया और पोशाक बख्शी गई और अंगूठी उसे मिल गई।

लोग कहते हैं कि इसके बाद उस लड़के ने अपना तीर-कमान जला दिया। लोगों ने पूछा, "तूने ऐसा क्यों किया?" उसने उत्तर दिया, "ताकि मेरी पहली इज्जत बरकरार रहे।"

'कभी ऐसा होता है कि विद्वानों की नसीहत से भी काम नहीं बनता और कभी ऐसा होता है कि नादान बच्चे से भी निशाने पर तीर लग जाता है।'

मैंने एक फकीर के बारे मे सुना कि वह एक गुफा में रहने लगा और उसने दुनिया वालों से मिलना-जुलना बन्द कर दिया। अमीरों और बादशाहों तक का उस पर कोई रोब-दाब न रहा।

'जिसने दुनिया वालो से मागना शुरू कर दिया वह मरते दम तक अपमान सहेगा।'

'लालच को छोड़ और बादशाही कर। जिसे लालच नही होता उसका सिर ऊंचा रहता है।'

एक दिन उस तरफ के एक बादशाह ने उसके पास सन्देश भेजा कि मुझे आपकी बुजुर्गी और मेहरबानी से यह आशा है कि आप मेरे यहां आकर रूखा-सूखा भोजन स्वीकार करेंगे। फकीर ने यह दावत कुबूल कर ली।

दूसरे दिन बादशाह फकीर के पास शुक्रिया अदा करने आया। फकीर

उठकर बादशाह से मिला और उसे सीने से लगाया।

फकीर के एक मुरीद ने बादशाह के चले जाने के बाद उससे पूछा, "जितनी नर्मी से आज आप बादशाह से मिले उतनी नर्मी आपके बर्ताव में कभी नहीं देखी।"

उसने उत्तर दिया, "क्या तूने नहीं सुना कि बुजुर्गों ने कहा है कि जिसके दस्तरख्वान पर तू बैठे उसके सम्मान में तेरा खड़ा होना जरूरी है।"

'कान यह कर सकते हैं कि तमाम जिन्दगी ढोल, सितार और बासुरी की आवाज न सुनें। आंख यह कर सकती है कि बाग को बिना देखे रह जाए। नाक भी गुलाब और सेवती की खुशबू के बिना रह सकती है। परों से भरा हुआ तकिया न हो तो पत्थर पर सिर रखकर सोया जा सकता है लेकिन यह नाकारा और टेढा पेट भूखा रहकर सब्र नहीं कर सकता।'

4

खामोशी

मैंने एक मित्र से कहा कि मैंने चुप रहना इसलिए पसन्द किया कि अधिक बात करने से अच्छी-बुरी सभी तरह की बातें मुह से निकल जाती है। दुश्मनो की नजर हमेशा बुराई पर ही पड़ती है।

मेरा मित्र बोला, "ऐ भाई! दुश्मन तो वही अच्छा है जो हमारी भलाई न देखे।"

'दुश्मन जिस भले आदमी के पास से गुजरता है उसी पर झूठा और घमंडी होने का आरोप लगता है।'

'दुश्मन की नजर में तो गुण भी दोष बन जाते हैं। 'सादी' फूल है लेकिन दुश्मनों की नजर में कांटा बना हुआ है।'

'दुनिया मे उजाला फैलाने वाला सूरज छछूदर की आख को बुरा लगता है।'

एक सौदागर को एक हजार दीनार का घाटा हो गया। उसने अपने बेटे से कहा कि यह बात किसी से कहना मत।

लड़के ने कहा, "अब्बाजान, आपका ऐसा हुक्म है तो किसी से नही कहूगा। उचित होगा यदि आप मुझे यह बता दें कि इसे छिपाने से क्या फायदा है?"

सौदागर बोला, "कहने से हमारा नुकसान दुगुना हो जाएगा। पैसों का नुकसान तो पहले ही हो चुका है। ऊपर से पड़ोसियों के हंसी-मजाक से दिल को चोट पहुचेगी सो अलग।"

'अपना गम अपने दुश्मनों से मत कह क्योकि वे खुश होकर लाहौल[1]

---

[1] घृणा और उपेक्षासूचक एक वाक्य

पड़ेंगे।'

एक नौजवान बड़ा बुद्धिमान था। उसमे बहुत-से गुण थे लेकिन वह लोगों मे अधिक उठना-बैठना पसन्द नही करता था। जब आलिमों की सभा मे बैठता तो खामोश रहता।

एक दिन उसके पिता ने कहा, "बेटा, तू भी कुछ बोलाकर और अपने इल्म मे लोगों को लाभ पहुंचायाकर।"

वह बोला, "अब्बाजान, मुझे डर है कि कही लोग मुझसे ऐसी बातें न पूछ बैठें जो मुझे मालूम ही न हों और मुझे शर्मिन्दा होना पडे।"

'क्या तूने नही सुना कि एक सूफी अपने जूतों के तले मे खुद कीलें ठोकने लगा तो उसे इस काम मे माहिर समझकर एक सिपाही ने उसकी बांह पकड़कर कहा—चल मेरे घोड़े की नालें ठोक दे।'

'तू बोलता नही तब तक तुझसे किसी का कोई सरोकार नहीं। परन्तु जब तू बोलना शुरू कर देगा तो जो कुछ कहेगा उसका तुझे प्रमाण भी देना पड़ेगा।'

किसी आलिम की एक नास्तिक से बहस छिड गई। आलिम उसे अपनी बात न मनवा सका और खामोश हो गया।

जब वह अपने घर लौटकर आया तो किसी ने उससे पूछा, "इतने बड़े आलिम होकर तुम उस अधार्मिक व्यक्ति से हार मान गए।"

आलिम बोला, "मेरे ज्ञान का आधार तो कुरान शरीफ हदीस[1] और बुजुर्गों की नसीहतें है। वह इनमे से किसी पर भी श्रद्धा नहीं रखता। फिर उसकी बातें मेरे किस काम की?"

'जो व्यक्ति कुरान और हदीस की बातें भी न माने उससे छुटकारा पाने का सरल उपाय यही है कि तू उसकी बात का उत्तर न दे।'

हकीम जालीनूस ने देखा कि कोई मूर्ख किसी बुद्धिमान व्यक्ति का गला पकड़कर उसका अपमान कर रहा है।

जालीनूस बोला, "यदि यह व्यक्ति बुद्धिमान होता तो मूर्ख के साथ इसका झगड़ा होने की नौबत ही न आती।"

'दो बुद्धिमानों मे मनमुटाव या झगडा नही होता। कोई बुद्धिमान किसी मूर्ख से झगड़ा नही करता। मूर्ख यदि मूर्खतावश बुरा-भला कहता भी है तो बुद्धिमान नर्मी से उसे शान्त कर देता है।'

'दो उदार हृदय वाले आपसी व्यवहार मे ज़रा-ज़रा-सी बात का

---

1. मुहम्मद साहब के प्रवचन

ख्याल रखते हैं जब कि झगड़ालू और मक्कार लोग लड़ने के लिए ज़रा-ज़रा-सा बहाना ढूंढते हैं।"

"यदि दोनों ओर दुष्ट लोग हों तो वे जंजीर तक को तोड़ डालते हैं।"

किसी भलेमानस को एक बदतमीज ने गाली दी। बेचारे ने उसे बर्दाश्त किया और कहा, "जितना तूने मुझे कहा है, मैं तो उससे भी अधिक बुरा हूं। मैं अपनी बुराइयों के बारे में तुझसे ज्यादा जानता हूं।"

सहबान बाइल भाषाविज्ञान तथा अलकार शास्त्र का ज्ञाता था। उसका भाषा पर ऐसा अधिकार था कि यदि साल-भर तक भाषण देता तो जो शब्द एक बार बोल चुका होता उसे दुहराता नहीं। एक ही विषय को समझाने के लिए वह नित नये शब्दों का प्रयोग करता था।

'बात चाहे कितनी ही मीठी और अच्छी लगने वाली हो और लोग चाहे कितनी ही प्रशंसा करके उसे दुबारा सुनना चाहें फिर भी जब एक बार तू उसे कह चुका तो दुबारा मत कह। हलवा जब एक बार खा लिया तो बस काफी है।'

मैंने एक अक्लमन्द को यह कहते हुए सुना कि संसार में वही आदमी अपनी बेवकूफी को स्वीकार करता हुआ मिलता है जो किसी की बात के बीच में ही बोल देता है और उसकी बात खत्म होने से पहले ही अपनी बात शुरू कर देता है।

'ऐ अक्लमन्द! हर बात का ओर भी होता है और छोर भी अर्थात् आदि भी और अन्त भी। तब तू बात के बीच में क्यों बोलता है?'

'जिसमें तदबीर, अक्ल और होश सब होते हैं वह उस वक्त तक बात नहीं करता जब तक दूसरों को खामोश नहीं देख लेता।'

सुलतान महमूद के कुछ नौकरों ने उसके वजीर हसन मैमन्दी से पूछा, "सुलतान ने आज आपसे अमुक मामले में क्या कहा?"

उसने जवाब दिया, "सुलतान ने मुझसे जो कहा है वह तुमसे भी छिपा नहीं रहेगा।"

वे फिर बोले "जो बातें सुलतान आपसे कह देगा वह हमसे कहना जरूरी नहीं समझेगा।"

उसने कहा, "जब सुलतान मुझसे अपना भेद इसलिए कहता है कि मैं किसी से न कहूं तो आप लोग मुझसे उसकी बातें क्यों पूछ रहे हैं?"

'अक्लमन्द आदमी ऐसी बात को प्रकट नहीं करता जो कोई उस पर भरोसा करके एकान्त में कहता है। बादशाहों की राज की बातें कहकर

अपना सिर कटवाने का खतरा मोल नही लेना चाहिए।'

एक शायर चोरों के सरदार के पास गया और उसकी प्रशंसा में कुछ शेर पढे। सरदार ने हुक्म दिया कि उसके कपड़े उतार लिए जाएं और उसे गांव से बाहर निकाल दिया। ऐसा ही हुआ।

बेचारा जाड़े मे ठिठुरता हुआ जा रहा था। पीछे से कुत्ते भौंकने लगे और उस पर झपटने लगे। उसने चाहा कि जमीन पर से पत्थर उठाकर कुत्तो को भगा दे। जमीन पर बर्फ जमी हुई थी इसलिए उसे कोई पत्थर भी न मिला।

वह झुंझलाकर कहने लगा, "ये लोग कैसे पाजी है कि इन्होंने कुत्तों को तो खोल दिया है और पत्थरों को बाध दिया है।"

चोरो का सरदार यह सब खिड़की में से देख रहा था। उसे हंसी आ गई। वह शायर से बोला, "ऐ अक्लमन्द ! माग क्या मांगता है !"

वह बोला, "अपने कपडे चाहता हूं। आप मेहरबानी करके दे दें तो बेहतर है। मैं फौरन यहा से चला जाऊंगा। भलाई की उम्मीद तो भले आदमियों से ही की जा सकती है। मुझे तुझसे भलाई की उम्मीद नहीं। यही गनीमत है कि तू मेरे साथ बुराई न करे।"

चोरों के सरदार को उस पर रहम आ गया। उसने शायर के कपड़े वापस कर दिए। साथ में एक रोएंदार चोगा और कुछ दरम भी दिए।

एक नजूमी[1] जब अपने घर मे घुसा तो उसने अपनी पत्नी के पास एक अजनबी को बैठे हुए देखा। उसने उस व्यक्ति को बुरा-भला कहा और गालियां भी दीं। उन दोनो का आपस में खूब झगड़ा हुआ। काफी शोर मचने लगा।

एक बुजुर्ग ने जब यह किस्सा सुना तो बोला, "तू कैसे जान सकता है कि इतने ऊंचे आसमान पर क्या है जब तुझे यही नहीं मालूम कि तेरे घर में कौन है ?"

एक भद्दी आवाज वाला वाइज[2] अपनी आवाज को बहुत अच्छी समझता था और मजलिसो मे नाहक शोर मचाया करता था।

गांव के लोग उसके ऊंचे मर्तबे की वजह से उसकी आवाज की मुसीबत को बर्दाश्त करते थे।

उसी इलाके मे एक दूसरा वाइज था जो उससे मन ही मन जलता था।

---

1. ज्योतिषी
2. उपदेशक

वह एक बार उससे मिलने आया और बोला, "मैंने आपके बारे में एक ख्वाब देखा है। खुदा आपका भला करे।"

उसने पूछा, "क्या देखा?"

वह बोला, "मैंने देखा कि आपकी आवाज बहुत सुरीली है और उससे सबको बड़ा सुख मिल रहा है।"

पहला वाइज थोड़ी देर सोचता रहा, फिर बोला, "खुदा आपका भला करे। आपने सचमुच बहुत अच्छा ख्वाब देखा। मुझे पता चल गया कि मेरी आवाज बेसुरी है और लोगों को मेरे जोर से बोलने से तकलीफ पहुंचती है। आज से मैं यह अहद[1] करता हूं कि अब वाज करूंगा भी तो आहिस्ता बोलकर।"

'मैं ऐसे मित्र की संगति से सुखी नहीं हूं जो मेरे दोषों को गुण और मेरे कांटों को गुलाब और चमेली के फूल बताए। वह निर्दयी और निडर दुश्मन कहां है जो मेरे दोष साफ-साफ बताता है?'

'जिस आदमी के दोषों को लोग उसके मुंह पर साफ-साफ नहीं कहते, वह मूर्खतावश अपने दोषों को ही गुण समझने लगता है।'

एक बेसुरी आवाज वाला मुअज्जिन[2] इतने जोर-जोर से अजान देता था कि लोग उससे चिढ़ने लगे। मस्जिद का प्रबन्धक एक अमीर था जो बहुत न्यायप्रिय और भला था। वह नहीं चाहता था कि मुअज्जिन को उसका दोष बताकर दुखी किया जाए।

उसने मुअज्जिन से कहा, "ऐ जवां मर्द! इस मस्जिद में पहले जो मुअज्जिन रहे थे उन्हें मैं पांच-पांच दीनार वजीफा दे रहा हूं। तुझे मैं दस दीनार दूंगा। तू किसी दूसरी जगह चला जा। मुअज्जिन राजी हो गया।

कुछ दिनों बाद वही मुअज्जिन उस अमीर को कहीं रास्ते में मिला। वह कहने लगा, "ऐ मालिक! आपने मेरे ऊपर बड़ा जुल्म किया है। मैं अब जिस जगह पर हूं वहां का मालिक कहता है कि यदि मैं उस गांव से कहीं और चला जाऊं तो वह मुझे बीस दीनार वजीफा देगा। आपने तो मेरे लिए सिर्फ दस दीनार तय किए हैं।"

अमीर हंस पड़ा और बोला, "तुम बीस दीनार हर्गिज मत लेना। वह तो पचास देने को तैयार हो जाएगा।"

'जितनी बेरहमी से तेरी भद्दी आवाज सुनने वालों के दिलों को

---

1. प्रण
2. अजान देने वाला

छोलती है उतनी बेरहमी से तो कोई कड़े पत्थर से मिट्टी को भी नहीं छोलता होगा।'

एक बेसुरी आवाज वाला कारी[1] जोर-जोर से कुरान शरीफ पढ़ा करता था। एक खुदापरस्त उधर से गुजरा। उसने पूछा, "तुझे इस काम के लिए कितनी तन्ख्वाह मिलती है?"

वह बोला, "कुछ नहीं।"

खुदापरस्त ने कहा, "फिर तू इतनी तकलीफ क्यों उठाता है?"

कारी ने उत्तर दिया, "मैं तो खुदा के लिए पढ़ता हूं।"

भला आदमी बोला, "अब तू खुदा के लिए न पढ़। यदि तू कुरान को इस भद्दे तरीके से पढ़ेगा तो इस्लाम की सारी रौनक ही खत्म कर डालेगा।"

1. कुरान पढ़ने वाला

5

बुढ़ापा

दमिश्क की जामा मस्जिद मे कुछ अक्लमन्द लोग जमा थे और वे किसी बात पर बहस कर रहे थे। मैं भी उसमे शरीक था।

एक नौजवान वहा आया और पूछने लगा, "इस मजमे मे कोई ऐसा आदमी है जो फारसी भाषा जानता हो ?"

सबने मेरी तरफ इशारा कर दिया। मैंने पूछा, "खैरियत तो है ?"

उसने कहा, "एक डेढ़ सौ साल का बूढ़ा आखिरी सासें ले रहा है। वह फ़ारसी भाषा मे कुछ कह रहा है जो हमारी समझ में तो आता नही। अगर आप वहां तक चलने की थोड़ी तकलीफ बर्दाश्त करें तो बड़ा सवाब[1] मिलेगा। शायद वह कोई वसीयत कर रहा है।"

जब मैं उस बूढ़े के सिरहाने पहुचा तो उसे यह कहते हुए पाया :

'मैंने सोचा था कि ऐश के साथ कुछ सांसें ले लू। अफसोस कि मेरी सास की नली ही बन्द हो गई।'

'अफसीस कि जिन्दगी के दस्तरख्वान पर जहा तरह-तरह के खाने चुने हुए थे, मैं सिर्फ चन्द लुकमे ही खा पाया कि मुझसे 'बस करो !' कह दिया गया।'

मैंने इन शब्दों का अर्थ शाम देश के निवासियों को अरबी भाषा मे समझा दिया। वे लोग आश्चर्य करने लगे कि इतना बूढ़ा आदमी कितनी हसरतें लिए मर रहा है !

मैंने बूढ़े के पास जाकर पूछा, "क्या हाल है ?"

उसने उत्तर दिया, "मैं क्या बताऊं ? क्या तूने नहीं देखा है कि जिस

---

1. पुण्य

व्यक्ति के मुह से एक दांत निकालते हैं उस पर क्या बीतती है? इससे यह अन्दाजा लगा कि जिसकी सारी जान ही अपने प्यारे जिस्म को छोड़ रही हो उसकी क्या हालत होगी?"

मैंने उससे कहा, "आप मरने के डर को दिल से निकाल दें और बेकार वहम न करें। यूनान के दार्शनिकों ने कहा है कि अच्छी सेहत इस बात का जिम्मा नहीं ले सकती कि मौत नहीं होगी और खतरनाक बीमारी में भी जरूरी नहीं है कि मरीज मर ही जाएगा। आप कहे तो मैं किसी हकीम को बुला दूं जो आपका इलाज कर दे।"

बूढ़े ने निगाह उठाई और हंसकर कहा, 'काबिल से काबिल हकीम भी जब किसी बूढ़े दोस्त को बीमार पड़ा हुआ देखता है, तो हाथ मलने लगता है।"

'मकान मालिक अपने मकान के दरवाजे पर बेल-बूटे बनवाकर उसकी खूबसूरती बढ़ाने की फिक्र मे है। उसे यह नही मालूम कि मकान पीछे से गिरना शुरू हो गया है।'

'बूढ़ा आदमी तो तकलीफ से दम तोड़ रहा है और उसकी बुढ़िया उसे आराम पहुंचाने के लिए उसके शरीर पर चन्दन मल रही है।'

'जब शरीर को कायम रखने वाले तत्त्व ही तितर-बितर हो जाएं तो न दवा काम करती है, न दुआ, न गंडे-ताबीज।'

मैं दयार बक्र में एक बूढ़े का मेहमान था। उसके पास बेइन्तहा दौलत थी और एक ही बेटा था।

एक रात वह मुझसे कह रहा था, "बहुत वक्त तक मेरे कोई औलाद न थी। इस जंगल मे एक पेड़ है। उसके पास लोग मन्नतें मागने जाते हैं। मैं भी लम्बी-लम्बी रातों में उसी पेड़ के नीचे बैठकर खुदा के सामने रोया हूं। तब जाकर यह बेटा मिला है।"

मैंने सुना कि उसका बेटा अपने दोस्तो से चुपके-चुपके कह रहा था, "क्या ही अच्छा होता अगर मुझे भी उस पेड़ का पता लग जाता। मैं वहा जाकर दुआ मागता कि मेरा बाप मर जाए।"

'बूढ़ा खुश होता है कि मेरा बेटा समझदार है। बेटा सख्त-सुस्त कहता है कि मेरा बाप सठिया गया है।'

'तुझे बरसो गुजर जाते हैं और तू अपने बाप की कब्र के पास से भी नही गुजरता। तूने अपने बाप के साथ क्या भलाई की है जो अपनी औलाद से भलाई की उम्मीद रखता है?'

एक दिन मैं जवानी के जोश में बहुत तेज-तेज चला। रात हुई तो

दीवार के सहारे टिककर सुस्त पड रहा।

मैंने देखा कि एक कमजोर बूढा किसी काफिले के पीछे-पीछे चला आ रहा है। वह मुझसे बोला, "अरे, यहा क्यो पड़ा है ? यह कोई सोने की जगह है ?"

मैंने कहा, "चलू कैसे ? मैं थका हुआ हूं। मेरे पैर चलने के काबिल ही नही रह गए हैं।"

उसने कहा, "क्या तूने नही सुना कि अक्लमन्दों ने कहा है कि 'दौड लगाने और फिर सफर छोडकर बैठे रहने से बेहतर है कि चलते रहो और थक जाने पर बैठकर सुस्ता लो।"

'ऐ मन्जिल पर पहुचने के इच्छुक ! जल्दी न कर। मेरी नसीहत पर अमल कर और सब्र करना सीख। ताजी घोडा दो दौड़ें तो दौड़ लेता है मगर फिर थककर बिलकुल बैठ जाता है। सुस्त ऊंट बराबर चलता ही रहता है और मजिल पर पहुच जाता है।'

हमारी ऐशो-इशरत की महफिल मे एक नौजवान आया करता था। वह बडा चुस्त, हसमुख, पाक चाल-चलन वाला और शीरीं-जबान[1] था। उसके दिल को किसी तरह का गम नही सताता था। उसके होंठ हंसते रहते थे।

एक जमाना गुजर गया कि उससे मुलाकात न हुई। एक दिन इत्तिफाक से मैंने उसे देखा। उसने शादी कर ली थी और उसके एक बच्चा भी हो गया था। अब उसकी खुशी की जड कट चुकी थी और उसका गुलाब-सा चेहरा मुरझा चुका था।

मैंने उससे पूछा, "तू कैसा है और तेरा यह क्या हाल हो गया है ?"

वह बोला, "जब से मेरे यहा बच्चा पैदा हुआ है, मेरा बचपना ही खत्म हो गया।"

'अब बचपना कहा जब कि बुढापे ने बालो का रग ही बदल डाला ! जमाने की तब्दीली हमें डराने के लिए काफी है।'

'जब तू बूढ़ा हो गया तो बचपना छोड दे। खेल-कूद और हंसी-मजाक को जवानों के लिए रहने दे।'

'नौजवानो जैसी मस्ती बूढे मे तलाश न कर। नदी में बहा हुआ पानी फिर नदी मे वापस नही आता।"

'जब फसल के कटने का वक्त आ जाए तो वह नये सब्जे की तरह

---

1. मीठा बोलने वाला

नहीं लहलहाती ।'

'जवानी का जमाना मेरे हाथ से चला गया । हाय ! अफसोस ! वह दिल को हर वक्त खुश रखने वाला वक्त अब लौटकर नहीं आने का ।'

'शेर के पंजे से कुव्वत जाती रही । अब मैं चीते की तरह पनीर पर ही राजी हूं ।'[1]

'ऐ बूढ़ी अम्मा ! तूने अपने बाल को काले कर लिए, लेकिन यह झुकी हुई कमर कैसे सीधी करेगी ?'

एक बार जवानी की बेवकूफी में मैं अपनी मां पर गुस्से से चीख पड़ा । वह बेचारी उदास होकर एक कोने में जा बैठी और रोते-रोते यह कहने लगी, "शायद तू अपना बचपन भूल गया है । तभी मुझ पर इतनी सख्ती कर रहा है ।"

एक बुढ़िया ने जब यह देखा कि उसके नौजवान बेटे में चीते को पछाड़ने की ताकत आ गई है और उसका शरीर हाथी की तरह तगड़ा हो गया है तो उसने कैसी अच्छी बात कही ।

"अगर तुझे अपने बचपन का वह वक्त याद होता जब तू मजबूर था और मेरी गोद में पड़ा रहता था, तो आज जब तुझमें शेर जैसी कुव्वत है और मैं बूढ़ी और मजबूर, तू मुझ पर जुल्म न करना ।'

एक मालदार कंजूस का बेटा बीमार था । उसके शुभचिन्तकों ने उसे सलाह दी कि लड़के की सेहत के लिए या तो तू कुरान शरीफ का पाठ कर या कुर्बानी में

लगी होती।"

'कंजूस लोग एक दीनार खर्च करते हुए इतने सुस्त पड जाते हैं मानो वे दलदल में फंस गए हों। उनसे अलहम्द[1] पढ़ने को कहा जाए तो सौ बार पढ़ देंगे क्यों कि उसमें खर्च का कोई सवाल नहीं।'

1. खुदा की तारीफ में कलमा

6

परवरिश

एक वजीर का बेटा बड़ा बेवकूफ था। वजीर ने उसे एक अक्लमन्द के पास भेजा कि वह उसे कुछ तालीम दे ताकि उसे कुछ अक्ल आ जाए।

अक्लमन्द काफी समय तक उसे पढ़ाता रहा; लेकिन कोई असर न हुआ। मजबूर होकर उसने लड़के को उसके पिता के पास वापस भेज दिया और यह कहला भेजा, "यह लड़का तो अक्लमन्द बना नही, उलटा इसने मुझे पागल बना दिया।"

'निकम्मे और खराब किस्म के लोहे पर कोई भी अच्छी कलई नही चढ़ा सकता।'

'जिसकी शरिस्त[1] में कोई गुण होता है उसी पर तालीम असर करती है।'

'कुत्ते को चाहे सात समुद्रों मे नहला लो वह पाक नही हो सकता। जितना वह भीगेगा उतना ही नापाक होगा।'

'हजरत ईसा के गधे को चाहे मक्का शरीफ ले जाएं तो भी वापस आने पर वह गधा ही रहेगा।'

एक अक्लमन्द अपने बेटो को नसीहत दे रहा था, "ऐ बाप के प्यारो! हुनर सीखो। इसलिए कि हुकूमत और दुनिया की दौलत पर कोई भरोसा नही किया जा सकता। सोने और चादी मे खतरा है। या तो उसे चोर ले जाएगा या लोग उसे खा जाएगे। हुनर कभी न सूखने वाला सोता ह और हमेशा रहने वाली दौलत। अगर हुनरमन्द का पैसा चला जाए तो कोई फिक्र की बात नही, क्योकि हुनर खुद दौलत है। हुनरमन्द जहा भी जाएगा

1. पैदाइश, बनावट

उसकी इज्जत होगी और लोग उसे ऊंची जगह पर बैठाएंगे। बेहुनर हमेशा रोटी-रोटी को मोहताज रहेगा और मुसीबतें उठाएगा।

ऊंचे पद पर रह चुकने के बाद किसी की चाकरी करनी पड़े तो बहुत तकलीफ होती है। दूसरों का हुक्म बर्दाश्त नहीं होता। जो आदमी नाजों में पला हो वह दूसरों का जुल्म कैसे बर्दाश्त करेगा?

मुल्क शाम में एक बार गड़बड़ मची और हर शख्स अपनी हिफाजत के लिए निकल-निकलकर भागने लगा।

देहातियों के अक्लमन्द लड़के तो बादशाह के दरबार में वजीर बनकर पहुंच गए और वजीरों के बेवकूफ लड़के भीख मांगने के लिए देहातों में पहुंचे।

एक बहुत बड़ा विद्वान बादशाह के बेटे को पढ़ाता था। वह उसे बेहद डांटता और मारता रहता था। एक दिन मजबूर होकर लड़के ने पिता के पास जाकर शिकायत की और कपड़े उतारकर अपना जख्मी जिस्म भी दिखाया।

बादशाह का दिल भर आया। उसने उस्ताद को बुलवाया और कहा, "तू मेरे बच्चे को जितना झिड़कता और मारता है इतना आम लोगों के बच्चों को नहीं। इसकी वजह क्या है?"

उस्ताद बोला, "वजह यह है कि यों तो सोच-समझकर बोलना और अच्छे काम करना सब लोगों के लिए जरूरी है, लेकिन बादशाहों के लिए खास तौर से जरूरी है। जो बात उनकी जबान से निकलेगी या जो काम उनके हाथ से होगा वह सारी दुनिया में मशहूर हो जायेगा, जब कि आम लोगों की बात और काम का इतना असर नहीं होता।"

'यदि किसी फकीर में सौ ऐब है तो उसके साथी उसका एक ऐब भी न लेंगे। लेकिन बादशाह से एक नाजायज हरकत हो जाये तो उसकी शोहरत मुल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हो जाएगी।'

"इसलिए और बच्चों के मुकाबले में बादशाह के बेटे के चरित्र को संवारने की उस्ताद को ज्यादा कोशिश करनी चाहिये और उसे खुदा से दुआ करनी चाहिये कि इस नेक काम में वह उसकी मदद करे।"

'जिस बच्चे को तू बचपन से अदब नहीं सिखायेगा वह जब बड़ा होगा तो उसमें कोई गुण नहीं होगा।'

'जब तक लकड़ी गीली रहती है, उसे कैसे ही मोड़ लो। जब वह सूख जाती है, तो आग में रखकर ही उसे सीधा किया जा सकता है।'

'जो लड़का सिखाने वाले का जुल्म बर्दाश्त नहीं कर सकता उसे जमाने

का जुल्म बर्दाश्त करना पड़ता है।'

बादशाह को उस काबिल उस्ताद की बात पसन्द आई। उसने खुश होकर उसे कपड़ों का एक जोड़ा इनाम में दिया और उसके पद में तरक्की कर दी।

पश्चिम के मुल्क में मैंने एक मदरसे में ऐसे उस्ताद को देखा जो बेहद चिड़चिड़ा बच्चों को सताने वाला और कमअक्ल था। मुसलमान उसे देखकर बहुत दुखी होते। उसका कुरान पढ़ना भी लोगों को बुरा लगता। उसके सामने न किसी की हंसने की हिम्मत होती थी और न बात करने की। कभी वह किसी के चांदी जैसे गाल पर तमाचा मार देता और कभी किसी की बिल्लौर जैसी पिंडली को शिकंजे में कस देता। खुलासा यह कि जब लोगों को उसकी ज्यादतियों का पता चला तो उन्होंने उसे मार-मारकर वहां से निकाल दिया :

उस मदरसे में एक नेक आदमी पढ़ाने के लिए रख दिया गया। यह आदमी परहेजगार था। इसकी आदतें बहुत अच्छी थी। अक्लमन्द इतना था कि बिना जरूरत बात भी न करता और कभी किसी से ऐसी बात नहीं कहता था जिससे उसे तकलीफ पहुंचती। बच्चों के दिल में पहले उस्ताद का जो डर था वह निकल गया। नये उस्ताद को उन्होंने फरिश्ते की तरह नेक पाया।

नतीजा यह हुआ कि हर लड़का शैतान बन गया। उस्ताद की शराफत का फायदा उठाकर उन्होंने पिछला पढ़ा-लिखा भी सब भुला दिया। वे ज्यादातर अपना वक्त खेल में गुजारने लगे। वे इतने ऊधमी हो गए थे कि अपनी बिना लिखी तख्तियां वे एक-दूसरे के सिर पर मारकर तोड़ डालते।

'पढ़ाने वाला उस्ताद जब बच्चों पर सख्ती करना बन्द कर देता है तो बच्चे बाजार में जाकर मदारी बन जाते हैं।'

दो हफ्ते बाद मैं उस मदरसे की तरफ से गुजरा। मैंने देखा कि अब वे लोग पहले वाले उस्ताद को मनाकर वापस ले आए थे। मैंने लाहौल पढ़ा और लोगों से पूछा कि उस शैतान को फिर से फरिश्तों का उस्ताद क्यों बना दिया गया?

एक मसखरे और तजुर्बेकार बूढ़े ने मुझे जवाब दिया, "एक बादशाह ने अपने बेटे को मकतब में बैठाया और उसकी बगल में चांदी की तख्ती दे दी, उसके हाथों सोने के पानी से उस तख्ती पर लिखवाया गया—'उस्ताद का जुल्म बाप की मुहब्बत से बेहतर है।'

एक शहजादे को अपने चाचा से विरासत में बेहद दौलत मिल गई।

फिर क्या था ! वह ऐयाशी मे डूब गया। कोई गुनाह ऐसा नही था जो उसने नही किया। कोई नशा बाकी न बचा जो उसने न लिया हो। वह बहुत फिजूलखर्ची करने लगा था।

एक बार मैंने उसे समझाया, "साहबजादे ! आमदनी बहते हुए पानी की तरह है और खर्च पनचक्की की तरह। इसलिए ज्यादा खर्च उसी को मुनासिब है जिसकी आमदनी लगातार होती रहती हो।

'जब तेरी आमदनी नही है तो खर्च थोड़ा कर। मल्लाह एक गीत गाया करते है जिसका मतलब है कि यदि पहाड़ो पर बारिश न हो तो दजला नदी एक ही साल मे सूख जाए।'

"इसलिए तू अक्ल और अदब को काम मे ला। खेल-कूद छोड दे और ऐयाशी की जिन्दगी से बाज आ क्योंकि जब यह दौलत खत्म हो जाएगी तो तू मुसीबत उठाएगा और शर्मिदा होगा।"

शहजादा संगीत और शराब के नशे मे मस्त था। उसने मेरी नसीहत को न सुना। मेरी बात पर एतराज करते हुए कहने लगा, "मौजूदा आराम को आने वाली परेशानियो से गन्दला करना अक्लमन्दों का काम नही है। दौलतमन्द और खुशकिस्मत लोग मुसीबत के डर से मुसीबत क्यो उठाएं? जा, ऐ दिल को रोशन करने वाले दोस्त ! मजे कर। कल का गम आज नही खाना चाहिए। मैं भला कंजूसी कैसे कर सकता हूं ! मैं एक ऊंचे स्थान पर बैठा हुआ हूं। मेरी उदारता की चर्चा सब लोगों की जबान पर है। मैंने सबकी परवरिश का वायदा किया हुआ है।"

'जो अपनी उदारता के लिए मशहूर हो गया उसको रुपये की थैली बन्द नही रखनी चाहिए।'

'जब तेरा नेक नाम गली-कूचों मे फैल गया है तो तू किसी पर दरवाजा बन्द नही कर सकता।'

मैंने देखा कि वह मेरी नसीहत मानने को हर्गिज तैयार नही है। मेरी गर्म सास उसके ठंडे लोहे पर असर नही कर रही थी। इसलिए मैंने और कुछ कहना मुनासिब नही समझा और उसका साथ छोड़ दिया। मैं अक्लमन्द लोगों के कहे पर अमल करने लगा कि जो तेरा फर्ज हो उसे दूसरों तक पहुंचा दे। फिर भी अगर वह न माने तो तुझ पर कोई इलजाम नही।

'तुझे मालूम हो कि लोग तेरी नसीहत नही मानेंगे फिर भी तू अपना पूरा कर। जो भी नसीहत या मशविरा तुझे देना चाहिए, दे डाल।'

'तू उस मगरूर को जल्द ही कैदखाने में पाएगा और उसके पैर बेड़ियो मे जकड़े हुए देखेगा।'

'तू देखेगा कि वह हाथ मल रहा होगा और अफसोस कर रहा होगा कि मैंने अक्लमन्दों की बात न मानी।'

खुलासा यह कि जैसा मुझे डर था वही हुआ। कुछ दिनों के बाद मैंने उस शहजादे की बरबादी को खुले आम देख लिया। वह इतना गरीब हो गया था कि थिगली सी-सी कर तन ढकता था और दाने-दाने को मोहताज था। उसे फटे-हाल देखकर मेरा दिल भर आया। ऐसी हालत में उसे कोई ताना देना उसके जख्म को छीलने और उस पर नमक छिड़कने के बराबर होता। ऐसा करना इन्सानियत के खिलाफ था। इसलिए उससे कुछ न कहते हुए मैंने दिल ही दिल में कहा—

'तुच्छ व्यक्ति अपनी मस्ती में डूबा हुआ मुसीबत के दिन की फिक्र नहीं करता।'

'बहार के मौसम में पेड़ फल लुटाते हैं, तभी जाड़ों में उन्हें पतझड़ का सामना करना पड़ता है।'

एक बादशाह ने अपना बेटा किसी उस्ताद के सुपुर्द किया और कहा, "इस लड़के को तू अपने लड़कों के साथ पढ़ा और उन्हींकी तरह काबिल और होशियार बना दे।"

उस्ताद ने उसे अपने लड़कों के साथ एक साल तक पढ़ाया मगर उसे कुछ भी हासिल न हुआ, जबकि उस्ताद के लड़के पढ़-लिखकर बड़े काबिल और हुनरमन्द बन गए।

बादशाह ने जब यह देखा तो उस्ताद पर बहुत नाराज हुआ कि तूने अपना वायदा पूरा नहीं किया और हमें धोखा दिया।

उस्ताद बोला, "ऐ दुनिया के मालिक! तालीम तो मैंने सब लड़कों को एक-सी दी, लेकिन हर एक की प्रकृति अलग-अलग होती है।"

'यद्यपि सोना और चांदी पत्थरों से ही निकलते हैं, लेकिन हर जगह के पत्थरों से नहीं।'

मैंने एक पीर के बारे में सुना कि वह एक मुरीद से कह रहा था कि इन्सान अपनी रोजी के साथ जितना लगाव रखता है और उसके लिए जितनी चिन्ता करता है यदि वही भाव रोजी देने वाले के लिए रखने लगे तो उसका दर्जा फरिश्तों से भी ऊंचा हो जाए।

'ऐ इन्सान! खुदा तुझे उस हालत में भी नहीं भूला था, जब तू मां के गर्भ में एक कण के रूप में अचेत पड़ा हुआ था।

'उसी खुदा ने तुझे जान दी। मिजाज, अक्ल, सोचना, समझना, होशो-हवास, सब चीजें दी।

उंगलियां बनाईं और तेरे कन्धे पर दो बाजू लगाए।

'ऐ कम-हिम्मत इन्सान ! अब तू यह समझ रहा है कि वह तुझे रोजी देना भूल जाएगा !'

मैंने अरब के एक देहाती को देखा जो अपने बेटे से कह रहा था, "ऐ बेटे ! तुझसे कयामत के दिन यह पूछा जाएगा कि तूने क्या किया, यह नहीं कि तू किस खानदान से है। तेरे कर्मों का हिसाब तुझसे लिया जाएगा, तुझसे कोई [illegible] ?"

[illegible] कपड़े के कारण [illegible] इसलिए होती है। क्योंकि वह कुछ दिनों तक काबे की पाक चहारदीवारी से चिपका रहता है।'

हिकमत की किताबों में लिखा है कि बिच्छू की पैदाइश दूसरे जानवरों की तरह नहीं होती। बिच्छू के बच्चे अपनी मां के पेट के भीतरी भाग को खा जाते हैं। वे उसका पेट फाड़ डालते हैं और बाहर निकलकर जंगल का रास्ता लेते हैं। बिच्छू के सूराखों में जो खालें मिलती हैं वे उन्हीं मादा बिच्छुओं की होती हैं जिनके बच्चे उन्हें खाकर छोड़ गए होते हैं।

एक बार मैं यह बात एक बुजुर्ग के सामने कह रहा था। उन्होंने कहा, "मेरा दिल भी गवाही देता है कि यह बात सच्ची होगी। जब ये मां के साथ ऐसा सलूक करते हैं तो बड़े होने पर इन्हें कौन बख्श देगा ? इसलिए ये जहां देखे जाते हैं, कुचल दिए जाते हैं।"

एक पिता ने मरते समय अपने बेटे को नसीहत दी, "ऐ बेटे ! याद रख जो अपने लोगों के साथ वफा नहीं करता वह अक्लमन्दों की नजरों में दोस्त नहीं होता।'

बिच्छू के लोगों ने पूछा, "तू जाड़ों में बाहर क्यों नहीं निकलता ?"

उसने कहा, "गर्मियों में ही मेरी कौन-सी इज्जत होती है कि जाड़ों में भी बाहर निकलूं ?"

एक फकीर की पत्नी गर्भवती थी। फकीर के कोई पुत्र नहीं था। जब प्रसव का समय निकट आया तो वह कहने लगा, "अगर अल्लाह ताला मुझे लड़का दे, तो मैं इस गूदड़ी के अलावा, जो कुछ धन मेरे पास है, उसे फकीरों में बांट दूंगा।"

फकीर के घर लड़का ही पैदा हुआ। उसने अपने वायदे के अनुसार [illegible] को दावत दी।

कुछ साल बाद जब मैं शाम के सफर से लौटा तो उस दोस्त के मुहल्ले

से गुजरा। मैंने लोगो से उसका हाल-चाल पूछा। लोगो ने बताया कि वह फकीर तो अब कोतवाल शहर की कैद मे है।

मैंने पूछा, "इसका सबब क्या है?" लोगो ने बताया कि उसके बेटे ने शराब पीकर दंगा किया और किसी को कत्ल करके शहर से भाग गया है। उसी की वजह से बाप के गले मे तौक़ और पैरो मे भारी बेडिया डाल दी गई है।

मैंने कहा, "इस बला को तो उसने अल्लाह ताला से बडी मिन्नतें करके मागा था!"

'ऐ होशियार मर्द! औरते अगर बच्चो की जगह साप जने तो अक्लमन्दो की राय में, यह नालायक लडको को जन्म देने से कही अच्छा होगा।'

एक साल पैदल चलकर हज करने जा रहे लोगो मे झगडा हो गया। मै भी उनके साथ था।

सच तो यह है कि हम एक-दूसरे से लडे और गाली-गलौच की हद हो गई।

मैंने एक ऊंट सवार को देखा जो अपने साथी से कह रहा था, "बडे ताज्जुब की बात है कि शतरज के खेल मे तो 'पैदल' जब सारी बिसात तय कर लेता है तो 'वजीर' बन जाता है मगर ये हाजी लोग पैदल-पैदल सारा जंगल तय करने के बाद और भी घटिया हो गए हैं।"

'उस इन्सानों के सताने वाले हाजी से मेरी तरफ से कह दे कि तू हाजियो को बदनाम करता है। तू हाजी बनने के काबिल नही है। असली हाजी तेरा ऊंट है,'जो काटे चबाता है और तेरा बोझ उठाता है।'

एक व्यक्ति आतिशबाजी का काम सीख रहा था। किसी अक्लमन्द ने उससे कहा, "तेरे लिए आतिशबाजी का खेल मुनासिब नही है क्योंकि तेरा झोपडा घास-फूस का बना हुआ है।"

'जब तक तू किसी बात के बारे मे जान न ले कि वह ठीक है या नही तू उसे अपनी जबान से मत कह। जिस बात के बारे मे तुझे यह मालूम है कि उसका जवाब अच्छा नही मिलेगा, उसे भी मत कह।'

एक बेवकूफ आदमी की आंख मे दर्द हुआ। वह मवेशियो के चिकित्सक के पास चला गया और उससे अपना इलाज करने को कहा। उसने वही दवा उसकी आख मे डाल दी जो वह जानवरो की आखो मे डाला करता था। नतीजा यह हुआ कि वह अधा हो गया।

दोनो व्यक्तियों मे झगडा हुआ और वे एक हाकिम के पास पहुचे। हाकिम ने यह कह कर मुकदमा खारिज कर दिया कि दोष उस बेवकूफ

आदमी का ही है। अगर वह गधा न होता तो मवेशियों के चिकित्सक के पास न जाता। अगर किसी नातजुर्बेकार को कोई बड़ा काम सौंपा जाए तो सौंपने वाले को ही शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। अक्लमन्दो की नजर में वह बेवकूफ ही गिना जाएगा।

'कोई भी समझदार आदमी किसी अनाड़ी को कोई बड़ा काम नहीं सौंपता। कहने को तो बोरिया बुनने वाला भी बुनकर कहलाता है मगर उसे रेशम के कारखाने मे बुनकरी के लिए कोई नही ले जाता।'

एक बुजुर्ग इमाम का बेटा गुजर गया। लोगों ने पूछा, "उसकी कब्र की तख्ती पर क्या लिख दें ?"

इमाम बोला, "कुरान शरीफ की कोई आयत तो लिखना मत। थोड़े दिनो बाद वह घिस जाएगी। दुनिया उस पर पाव रखकर चले-फिरेगी और कुत्ते वहा पेशाव करेंगे। इसलिए वहा सिर्फ यह शेर लिख दो :

"वाह-वाह ! जब बाग मे हरियाली होती थी तो मेरा दिल कितना खुश होता था ! ऐ दोस्त ! यहां से होकर गुजर, ताकि तुझे मेरी कब्र पर हरियाली देखने को मिले।"

कोई नेक बन्दा एक अमीर के पास से होकर गुजरा। अमीर एक गुलाम के हाथ-पाव बाधकर उसे सजा दे रहा था।

वह उस अमीर से बोला, "देख, यह भी तुझ जैसा इन्सान है। तू हाकिम बना हुआ है और यह तेरा चाकर। अल्लाह का शुक्र अदा कर और इस गरीब पर जुल्म न कर। कही ऐसा न हो कि कल कयामत के दिन वह तुझसे अच्छी हालत मे हो और तू उसके सामने शर्म से सिर झुकाए खड़ा हो।"

'गुलाम पर बहुत गुस्सा न कर। उसको तूने दस दरम मे खरीदा है, अपनी ताकत से तो पैदा नही किया। यह हुक्म चलाना, यह गुस्सा और घमड कब तक करेगा ? तुझसे बड़ा तेरे ऊपर खुदा भी तो है !'

एक साल मैं बल्ख से बामियां जा रहा था। रास्ते मे डाकुओ का खतरा था। हमारे आगे एक नौजवान चल रहा था। वह हथियारों मे लैस था और ताकतवर इतना कि दस आदमी भी उसकी कमान पर चिल्ला न चढा सकते थे। दुनिया का कोई पहलवान उसकी कमर को जमीन पर नही लगा सकता था। वह नाजों का पला हुआ था मगर उसने न जमाना देख रखा था, न कभी सफर किया था, न बहादुरो के नक्कारे की कड़क उसके कानो में पड़ी थी और न सवारो की तलवारों की चमक उसने देखी थी। न कभी वह दुश्मन के हाथ कैदी बना था और न कभी उसके सामने

तीरों की वारिश हुई थी।

मैं और वह जवान आगे-पीछे चल रहे थे। जो पुरानी दीवार सामने आती उसे वह बाजुओ के जोर से गिरा देता और जो पेड रास्ते मे आता उसे वह अपने पंजे की ताकत से उखाड देता और घमंड के साथ कहता, "हाथी कहां है? आकर मेरे बाजुओं की ताकत को देखे। शेर कहा है? वह मर्दों के पजो का जोर तो देखे!"

हम इसी तरह चले जा रहे थे कि एक पत्थर के पीछे से दो डाकुओ ने सिर उभारा और हमसे लडने को तैयार हो गए। उनमे से एक के हाथ मे एक लकडी थी और दूसरे के हाथ मे एक मोगरी।

मैंने जवान मे कहा, "देखता क्या है? दुश्मन आ गए। जो जवामर्दी और ताक़त तुझमे हो दिखा। दुश्मन खुद अपने पैरो चलकर अपनी कब्र मे आया है।"

मैंने देखा कि जवान के हाथ से तीर-कमान गिर पडा और उसकी हड्डियो में कंपकपी पैदा हो गई। फिर मेरे लिए सिवा इसके कोई चारा न रहा कि मैं सामान, हथियार और कपडे छोड़ और जान बचाकर भाग जाऊं।

'बडे कामो के लिए तजुर्बेकार को भेज, जो खूंख्वार शेर को भी अपनी अक्ल से कमन्द मे फांस लाए।'

'जवान कितना भी ताकतवर क्यों न हो दुश्मन से लड़ते वक्त डर के मारे उसके सब जोड़ हिल जाते है।'

'तजुर्बेकार आदमी लडाई के हुनर को जानता है। जैसे कि इस्लाम के विधान को अक्लमन्द ही समझता है।'

मैंने देखा कि एक अमीर आदमी का लड़का अपने वालिद की कब्र के पास खडा हुआ एक फ़कीर के लडके से बहस कर रहा था। वह कह रहा था, "मेरे वालिद की कब्र पर जो ताबीज बना है वह पत्थर का है और जो खुतबा[1] लिखा हुआ, वह रगीन है। कब्र के इर्द-गिर्द पत्थर का फर्श है, जिस पर फीरोजे की ईंटें जडी हुई हैं। तेरे बाप की कब्र उसका क्या मुका-बला कर सकती है? उसमें है ही क्या! दो ईंटे रख दी है और उन पर दो मुट्ठी मिट्टी छिडक दी है।"

फकीर का लड़का यह सब सुनकर बोला, 'जब तक तेरा बाप इन भारी पत्थरो के नीचे जरा हिले-डुलेगा, मेरा बाप निकलकर जन्नत पहुच

1. प्रशंसा

जाएगा।"

'वह फकीर जिसने फाकाकशी का कष्ट झेला है, बेशक मौत के दरवाजे पर हल्का-फुल्का होकर पहुंचेगा।'

'जो कैदी जेल से रिहाई पा चुका है, वह उस अमीर से ज्यादा खुशकिस्मत है, जो कैद होकर जेल मे आया है।'

मैंने एक बुजुर्ग से मुहम्मद साहब की इस शिक्षा का अर्थ पूछा—"तेरा सबसे बड़ा दुश्मन तेरा नफ्स[1] है।"

उन्होने बताया कि नफ्स[1] को सबसे बड़ा दुश्मन इसलिए कहा गया है, क्योंकि अन्य दुश्मन तो ऐसे है कि यदि तुम उनके साथ अहसान करो तो वे तुम्हारे दोस्त बन जाते हैं; लेकिन अपने नफ्स के साथ तुम जितनी रियायत करो वह उतना ही तुम्हारा विरोध करेगा।

'आदमी कम खाने से फरिश्तों का स्वभाव पा जाता है। वह ठूस-ठूसकर खाएगा तो पत्थर बना पड़ा रहेगा।'

'तुम जिसकी इच्छा पूरी करोगे वह तुम्हारा तावेदार बन जाएगा, लेकिन नफ्स की इच्छा जब पूरी होती है तो वह तुम पर अपना हुक्म चलाने लगता है।'

मैंने एक आदमी को देखा जो सूरत तो फकीरो की-सी बनाए हुए था लेकिं फकीरो जैसे गुण उसमे नही थे। महफिल मे बैठा हुआ वह दूसरो की बुराइया कर रहा था और उसने शिकायतो का पूरा दफ्तर खोल रखा था, धनवान लोगो की वह खास तौर पर बुराई कर रहा था।

वह कह रहा था, "फकीर की ताकत का बाजू बंधा हुआ है तो अमीरों की हिम्मत की टांग टूटी हुई है।"

'जो दानी है उनके पास पैसा नही है और जो पैसे वाले हैं उनमे रहम नही है।'

मैं बुजुर्गों की नेमतों का पला हुआ हूं, इसलिए मुझे उसकी बातें नागवार लगी। मैंने कहा, "ऐ दोस्त! धनवान ही गरीबो की आमदनी हैं। वही कोने में बैठे रहने वाले फकीरो की पूंजी हैं। जियारत करने वालो का मकसद भी वे ही पूरा करवाते है। वे मुसाफिरो को पनाह देते हैं और दूसरो के लिए भारी जिम्मेदारिया ले लेते हैं। खाने मे तब तक हाथ नही डालते जब तक अपने घर वालों और दूसरे लोगो को खिला नही देते। उन्ही की मेहरबानी से बहुत-सी बेवाओं, बूढ़ो, रिश्तेदारो और पडोसियों को रोटी

1. मन (इन्द्रियां)

मिलती है।"

'वक्फ़[1] करना, मन्नत पूरी करना, मेहमानों को खिलाना, जकात[2] देना, फ़ितरा[3] अदा करना, गुलाम आजाद करना, खाना-ए-काबा[4] को कुर्बानी भेजना, ये सब काम धनवान ही कर सकते है और करते है।'

अरब वाला कहता है, "मैं अल्लाह से दुआ मागता हूं कि वह मुझे औंधा कर देने वाली गरीबी से बचाए और ऐसे आदमी के पडोस से बचाए जो मुझसे मुहब्बत नही करता।"

हदीस[5] मे भी आया है कि, 'गरीबी दोनो दुनियाओ मे मुह की कालिख बनती है।'

वह फ़कीर मुझसे बोला, "तूने वह तो सुन लिया जो अरब ने कहा। क्या तूने यह नही सुना कि रसूल-अल्लाह ने फरमाया है कि, मै फ़कीरी पर फ़ख्र[6] करता हू?'

मैंने कहा, "चुप रह! रसूल-अल्लाह का इशारा उन फकीरो की तरफ है जो खुदा की मर्जी मे ही राजी रहते हैं और जो खुदा की भेजी हुई हर चीज को खुशी से कुबूल करते हैं, न कि वे लोग जो गूदडी पहन लेते है और खैरात मे मिले टुकड़े बेचते फिरते है।"

'ऐ ऊंची आवाज वाले ढोल! चलते वक्त तेरे पास खाना नही होगा तो तू क्या करेगा?'

'अगर तू हिम्मत वाला मर्द है तो लालच मत कर और दुनिया से मुंह फेर ले। फिजूल में हजार दानो वाली तस्बीह को अपने हाथ पर मत लपेट।'

मैं कहता गया, "गरीब आदमी गुनाह जल्द करने लगता है क्यो कि जो नंगा है वह पैसों के बिना कपड़े कहा से पहनेगा? इसीलिए हम जैसे लोग पैसे वालों के दरजे तक नही पहुंच सकते है। ऊपर के हाथ का नीचे के हाथ से क्या मुकाबला?"

---

1. ईश्वर के नाम पर सम्पत्ति का दान
2. अपनी आमदनी का चालीसवां भाग असहाय लोगों के लिए दान करना
3. दान (एक धार्मिक कर्म)
4. मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थ-स्थान
5. मुहम्मद साहब के प्रवचन
6. गर्व

'कुरान शरीफ में अल्लाह ताला ने जन्नत के लोगों के बारे में यह कहा है कि ये वे लोग हैं जिनकी रोजी मुकर्रर है।'

'प्यासों को सपने में तमाम दुनिया पानी का चश्मा नजर आती है।'

जब मैंने यह बात कही तो फकीर गुस्से से उबल पड़ा। वह जोर-जोर से चिल्लाकर कहने लगा, "तूने धनवानों की तारीफों के पुल बांध दिए और इतनी बेतुकी बातें कहीं जिनका कोई हिसाब नहीं। तेरी बातों से लोग मालदारों को तिर्याक[1] समझेंगे या रिज्क[2] की कोठरी की चाबी। यही थोड़े से लोग हैं जो घमंड में चूर रहते हैं, अपनी तारीफ करवाना चाहते हैं, गरीबों से नफरत करते हैं, धन-दौलत बटोरने में हमेशा लगे रहते हैं और अपने मर्तबे के चक्कर में झगड़े-फसादों में फंसे रहते हैं। ये लोग बिना सिफारिश के किसी से मिलना और बात करना भी पसन्द नहीं करते, किसी की तरफ देखते हैं तो नाक सिकोड़कर, आलिमों को फकीरों में शुमार करते हैं और फकीरों को नंगा होने का ताना देते हैं।

"इन सब बुराइयों का कारण उनके पास माल-दौलत का जमा हो जाना है। उन्हें तो अपने ऊंचे मर्तबे का घमंड रहता है। सबसे ऊपर चढ़कर बैठते हैं। उनके दिमाग में यह नहीं आता कि किसी की तरफ सिर उठाकर देखें। उन्हें अक्लमन्दों की यह बात नहीं मालूम कि—

"जो खुदा की इबादत में और लोगों से कम है और धन-दौलत में बढ़ा हुआ है, देखने में तो मालदार है, लेकिन असल में फकीर है।"

मैंने उस फकीर से फिर कहा, "तू मालदारों की बुराई न कर। ये लोग दूसरों पर करम करते हैं।"

उसने कहा, "तू गलत कहता है। ये तो पैसों के गुलाम होते हैं। उनसे किसी को कोई फायदा नहीं। उन्हें तो आजर के महीने का बादल कहना चाहिए जो कभी बरसता ही नहीं या उन्हें ऐसा सूरज कहना चाहिए जो किसी को रोशनी नहीं देता। खुदा की राह में वे एक कदम भी नहीं चलते और बिना अहसान जताए किसी को एक दरम भी नहीं देते। मुसीबतें झेलकर दौलत इकट्ठी करते हैं, कंजूसी से उसकी हिफाजत करते हैं और मरते वक्त उसे हसरत के साथ छोड़ जाते हैं। बुजुर्गों ने ठीक ही कहा है कि 'कंजूस की चांदी जमीन से उस वक्त निकलती है जब वह खुद जमीन के नीचे चला जाता है।'"

---

1. विष का नाशक, जहरमोहरा
2. अनाज

मैंने उसे जवाब दिया, "तू लालची फकीर होने के कारण धनवानो से जलता है। इसी कारण उन्हे कजूस बताता है। जिस फकीर मे लालच नही होता उसे तो दानी और कंजूस एक-से दिखाई देते है।"

वह बोला, "मैंने तो देखा है कि ये मालदार लोग अपने दरवाजो पर मुलाजिम रखते है जो बड़े सख्त और बेरहम होते है। ये आसानी से किसी को अन्दर नही जाने देते। सीधे-सादे और भले लोगो को ये बहुत तंग करते है और कह देते हैं कि, 'अन्दर कोई नही है।' असल मे वे ठीक ही कहते है।

'जिस धनवान मे न अक्ल है, न हिम्मत, न अच्छी राय, न कोई तदबीर, उसके बारे मे ड्योढीबान ठीक ही कहता है कि वह है ही नही। उसका दुनिया मे होना न होना बराबर है।'

मैंने कहा, "इसकी वजह यह है कि वे लोग मागने वालो से तंग आ जाते हैं। यह ठीक भी है। लालची फकीरों की अर्जिया कहां तक पढे ! सबको खुश रखना मुमकिन भी नही।"

'यदि रेगिस्तान की रेत के सब जर्रे मोती बन जाएं, तो शायद लालची फकीरो को एक वक्त का खाना मिल सके। दुनिया की नेमतो से फकीरों का पेट नही भरता, जैसे ओस के गिरने से कुआं नही भरता।'

'जहा कही तू किसी को मुसीबत मे फंसा हुआ देखेगा तो उसका कारण यह पायेगा कि उसने लालच मे आकर कोई खतरनाक काम जरूर किया होगा। उसे आखिर की सजा का कोई डर न रहा होगा और उसने हलाल और हराम मे कोई तमीज न की होगी।'

'अगर कुत्ते के सिर पर कोई पत्थर भी मारता है तो वह समझता है कि हड्डी आ गई और खुशी से उछल पड़ता है। अगर दो आदमी कधे पर लाश ले जा रहे हों, तो भिखमंगा यह समझता है कि दस्तरख्वान बिछा हुआ आ रहा है।'

'मैंने जो कुछ कहा है उसका कोई सबूत या उसके लिए कोई दलील नही दी। फिर भी मैं तुझी से पूछता हूं कि अगर तूने कभी किसी की मुश्के बंधी हुई देखी हो तो यह जरूर पता चला होगा कि उसने गरीबी मे तंग आकर किसी को धोखा दिया था। अगर तूने किसी को कैद में पड़ा हुआ देखा होगा या किसी की बेइज्जती होते हुए देखी होगी या किसी का हाथ कलाई पर से कटा हुआ देखा होगा तो इन सबकी एक ही वजह पाई होगी कि इन लोगो ने अपनी गरीबी से तंग आकर कोई न कोई गुनाह किया था। बड़े से बड़े पाकबाजों को भी मजबूर होकर सेंध लगानी पड़ती है और सजा

के तौर पर उनके पैरों में बेड़िया डाल दी जाती हैं।

'जब इन्सान भूखा होता है तो उनमें परहेजगारी की ताकत नहीं रहती। गरीबी परहेजगारी के हाथ से बागडोर खीच लेती है।'

"तूने यह कहा कि अमीर लोग फकीरो पर अपने दरवाजे बन्दकर लेते हैं। वे ठीक ही करते हैं। हातिमताई बड़ा दानी कहलाता है। उसका राज यह है कि वह जंगल मे रहता था। जगल में बहुत-से मागने वाले नही पहुंच पाते। अगर वह शहर में रहता तो वह भी मांगने वालों की भीड़ से तग आ जाता। हो सकता है कि भिखमगे उसके कपडे तक फाड डालते।"

वह बोला, "मैं कभी मालदारो पर तरस नही खा सकता।"

मैंने कहा, "तू उनकी दौलत से जलता क्यों है?"

इस तरह हम दोनों मे बहस चल रही थी। जो दलील वह देता उसे मैं काट देता। धीरे-धीरे उसकी हिम्मत की थैली की सब नकदी खत्म हो गई और उसकी दलीलों के तरकस के सब तीर खाली हो गए।

'खबरदार! कही बक्की आदमी की बकवास के रोब मे आकर अपने हथियार मत डाल देना। उसकी लम्बी-चौडी बातो को मागे हुए हथियार समझो जो ज्यादा देर तक काम नही आते।'

'असल चीज इल्म है। इसलिए तू दीन को जानने और खुदा को पहचानने की कोशिश कर। तुकबन्दी करने वाला शायर बेकार आदमी है। वह उस सिपाही की तरह है, जो किले के दरवाजे पर हथियार रखे हुए बैठा है, जब कि उस किले के अन्दर कुछ भी नही है।'

अन्त में जब उसके पास कोई भी दलील न बची और मैंने उसे निरुत्तर कर दिया तो वह लडने को तैयार हो गया और गालियां बकने लगा।

खुलासा यह कि हमारा झगडा काजी के सामने पहुचा। हम दोनों इस बात पर राजी हो गए कि काजी साहब जो फैसला देंगे वही ठीक होगा। हम इन्तजार करने लगे कि देखें मुसलमानों का हाकिम कोई अनोखी दलील निकालकर अमीरों और गरीबो मे क्या फर्क बताता है?

हमारी बातें सुनकर काजी सोच मे पड गया। थोडी देर बाद उसने सिर उठाया और मुझसे कहा, 'ऐ मालदारों की तारीफ करने वाले! तूने गरीबों पर उनके जुल्म को जायज समझा। जान ले कि जहा फूल हैं वहा कांटे भी हैं। शराब के मजे के बाद जिस्म टूटने की तकलीफ भी होती है। खजाने के साथ सांप भी देखा गया है। दुनिया के मजों के साथ मौत का डर भी लगा रहता है।

"दोस्त को चाहने वाला दुश्मन का जुल्म न सहेगा तो क्या करेगा?

खजाना और साप, फूल और कांटे, रंज और खुशी मिले हुए चलते हैं।'

"तू बाग को नही देखता, जहां बेदमुश्क जैसी खुशबूदार लकड़ी भी है और झंखाड़ भी है। इसी तरह मालदारों में भी खुदा का शुक्र अदा करनेवाले खुदा परस्त भी हैं और खुदा को भूल जानेवाले घमंडी नाशुक्रे भी हैं। वैसे ही फकीरों मे सब्र करने वाले भी हैं और कमीने भी।"

'अगर ओलों का हर कतरा मोती बन जाता तो सारा बाजार कौड़ियों की तरह मोतियों से भर जाता।'

'अल्लाह ताला के प्यारे वे मालदार हैं जिनमें फकीरों की-सी अच्छी आदतें हैं और उसे वे फकीर प्यारे हैं, जिनमें मालदारो की-सी हिम्मत है। मालदारों मे बड़ा वह है जो फकीर का गम खाए और फकीर वह ऊंचा है जो मालदारों की परवाह न करे।'

फिर काजी ने अपने गुस्से का रुख मेरी तरफ से हटाकर उस फकीर की तरफ कर दिया और उससे बोला, "ऐ मालदारो की बुराई करने वाले! तू कहता है कि मालदार बुरे और नाजायज कामों में लगे रहते हैं। हां, हो सकता है। कुछ मालदार ऐसे जरूर है जो न खुद खाते हैं और न किसी को खाने देते हैं। उन्हें इससे कोई मतलब नही कि बारिश नही हुई है या सैलाब ने दुनिया को तबाह कर दिया है। उन्हें तो अपने पैसे का गुरूर है और वे इसी मे मस्त हैं। वे न दुखी लोगों का हाल पूछते हैं और न खुदा से डरते हैं।

"बेशक, कुछ मालदार ऐसे ही हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी है जो नेमतों का दस्तरख्वान दूसरों के लिए फैलाए बैठे हैं और करम का हाथ खोले हुए हैं। ऐसे लोग लोक और परलोक दोनो के मालिक हैं।

"ऐसे नेक लोग उस बादशाह के दरबार में ही मिल सकते हैं जो इंसाफ पसन्द है और जिसको खुदा की मदद हासिल है, जो कामयाब है, जो लोगों के दिलो पर हुकूमत करता है, जो इस्लामी मुल्कों की हिफाजत करता है। हजरत सुलेमान का वारिस है, दीन और दुनिया दोनों में सफल है, यानी जो हमारा बादशाह है, जिसका नाम अताबक-अबूबक्र-बिन-सादेजंगी है। खुदा उसकी सन्तान बनाए रखे और उसके झंडों को

जब काजी ने बात यहां तक पहुंचा दी तो

मान लिया और जो कड़वाहट पैदा हो गई

शेर पढ़कर बात खत्म की—

'ऐ फकीर ! तू जमाने की गर्दिश की शिकायत न कर। अगर तू इसी हालत में मर गया तो बड़ा बदनसीब समझा जायगा।'

'और ऐ मालदार ! जब तेरे दिल की मुरादें पूरी हो चुकी है और तेरे हाथ में धन है तो खुद भी खा और दूसरों को भी दे, ताकि तुझे लोक और परलोक दोनों का सुख मिले।'

7

ज़िन्दगी

धन जिन्दगी के आराम के लिए होता है। जिन्दगी धन जमा करने के लिए नहीं।

एक अक्लमन्द से लोगों ने पूछा, "खुशकिस्मत कौन है और बदकिस्मत कौन?"

उसने जवाब दिया, "खुशकिस्मत वह है जिसने खाया और खैरात की। बदकिस्मत वह है जिसने जमा किया और छोडकर मर गया।"

हज़रत मूसा ने कारूं[1] को नसीहत की कि तू दुनिया वालों पर वैसा ही अहसान कर जैसा अल्लाहताला ने तुझ पर किया है। कारूं ने यह नसीहत सुनी-अनसुनी कर दी। तूने देख लिया कि कारूं का कैसा अन्त हुआ। अगर तू चाहता है कि दुनिया की नेमतों का फायदा उठाए तो लोगों पर वैसा ही करम कर जैसा अल्लाह ने तुझ पर किया है।

अरब वालों का कौल है कि दूसरो के साथ भलाई कर, लेकिन उन पर उसका अहसान मत जता। जो भलाई तूने की है उसका फल तो तुझे मिलेगा ही। फिर तू अहसान किसी और पर क्यों लादना चाहता है?

अल्लाह का शुक्र कर कि तू दूसरो के साथ भलाई करने के काबिल है। अल्लाह ने तुझ पर अपना करम दिखा दिया और तुझे इस काबिल बना दिया कि तू दूसरो के साथ भलाई कर सके।

दुनिया में दो तरह के आदमी बेकार तकलीफ उठाते हैं। एक तो वे, जो धन जमा करते हैं और उसे खाते नही। दूसरे वे, जो पढते तो हैं लेकिन उन पर अमल नहीं करते।

---

1. मिस्र का एक कंजूस बादशाह

इल्म तू चाहे जितना पढ़ ले। तू उस पर अमल नहीं करता है तो तू जाहिल है। ऐसा आदमी न तो किसी बात को परख या समझ पाता है और न अक्लमन्द बन पाता है। उसे तो एक जानवर समझो जिस पर कुछ किताबें लदी हुई है। उस गधे को क्या पता कि उसकी पीठ पर इल्म का अम्बार लदा हुआ है या सिर्फ लकड़ियों का बोझा।

इल्म दीन की बारीकियों को समझने के लिए होना चाहिए, पैसा कमाने के लिए नहीं। जिसने पैसे की खातिर अपना दीन, ईमान, इल्म और परहेज-गारी को बेच दिया, उसकी मिसाल ऐसे किसान से दी जा सकती है जिसने साल-भर मेहनत करके अनाज उगाया, खलिहान जमा किया, फिर उसमें आग लगा दी।

जो पढ़ा-लिखा आलिम गुनाहों से नहीं बचता, वह ऐसा अंधा है, जिसके हाथ में मशाल तो है मगर उसे खुद को उससे कोई फायदा नहीं।

जिसने दुनिया के बाजार में कोई चीज खरीदी ही नहीं और रुपया भी गवां दिया, उसने अपनी उम्र बेकार गवा दी।

मुल्क की रौनक वहा के अक्लमन्दों से होती है और दीन की रौनक परहेजगार लोगों से। बादशाह अक्लमन्दों की नसीहत का मोहताज होता है। अक्लमन्द बादशाह की मेहरबानी का मोहताज नहीं।

ऐ बादशाह! अगर तू कोई नसीहत सुनना चाहता है तो सुन। इस नसीहत से बढ़कर कोई नसीहत तुझे किताबों में नहीं मिलेगी। हुकूमत का काम जब तू किसी को सौंपे तो अक्लमन्द को ही सौंप, हालांकि उसे कबूल करना अक्लमन्द का काम नहीं।

तीन चीजें टिकाऊ नहीं होती—माल बिना तिजारत, इल्म बिना बहस और तदबीर बिना हुकूमत।

कभी तो मेहरबानी, आवभगत और शराफत से काम निकाल, ताकि तू दूसरे के दिल को अपने काबू में रख सके। कभी गुस्से और सख्ती से काम ले, क्योंकि कभी-कभी मिश्री के सौ कूजे भी वह काम नहीं कर सकते जो ऐचुए[1] की एक गांठ करती है।

बुरे लोगों पर रहम करना भलों पर जुल्म करना है और जालिमों को माफ कर देना फकीरों पर ज्यादती करना है अगर तू किसी दुष्ट को मेहर-बानी की नजर से देखेगा तो वह तेरे ही पैसे से गुनाह करेगा।

बादशाहों की दोस्ती पर भरोसा नहीं करना चाहिए, न बच्चों की

1 पेट साफ करनेवाली बहुत कड़वी दवा

प्यारी आवाज पर। बादशाहों की दोस्ती तो एक ख्याल से बदल जाती है और बच्चों की आवाज एक ही रात की बीमारी से।

जिस माशूक के हजारों दोस्त हों, उसे तू अपना दिल न दे, और अगर देता है, तो जुदाई के लिए तैयार रह।

तू अपना भेद अपने दोस्त से भी न कह, चाहे वह कितना ही सच्चा क्यों न हो। तुझे क्या मालूम कब वह दुश्मन बन जाए और तेरे भेद से नाजायज फायदा उठा ले।

इसी तरह अपने दुश्मन को कम से कम तकलीफ दे। हो सकता है कि वह कभी तेरा दोस्त बन जाए। पिछली कड़वाहट कम से कम होगी तो आसानी से दूर हो जाएगी।

जिस भेद को तू छिपाना चाहता है, उसे अपने करीबी दोस्त से भी न कह। उस दोस्त के और दोस्त होंगे और औरों के और-और। इसी तरह सिलसिला चलता रहेगा। यदि तूने एक दोस्त से भी कह दिया तो बात सारे जहान में फैल जाएगी।

किसी से अपना भेद कहना और फिर उससे यह कहना कि "भई, किसी से कहना मत," यह भारी मूर्खता है। इससे तो चुप रहना अच्छा है।

ऐ अक्लमन्द! पानी को शुरू में ही रोक देना आसान है। बाद में जब पानी की नदी बन जाएगी, तो उसके बहाव को रोक पाना संभव नहीं होगा। वह बात अकेले में भी किसी से नहीं कहनी चाहिए, जो भरी मजलिस में नहीं कही जा सकती है।

जो कमजोर दुश्मन तेरे कब्जे में खुद-ब-खुद आ जाता है और तेरा दोस्त बनना चाहता है उसका मतलब सिवा इसके और कुछ नहीं होता कि वह ताकत पाकर ज्यादा दुश्मनी करे। अक्लमन्द लोगों ने कहा है कि जब दोस्त की दोस्ती पर भरोसा नहीं, तो दुश्मनों की चापलूसी से क्या मिलेगा?

जो छोटे दुश्मन को कम समझे उसकी तुलना उस मूर्ख से करनी चाहिए जो थोड़ी-सी आग को अपने सामान के पास पड़ी रहने दे। अगर तू बुझा सकता है तो आग को अभी बुझा दे। कल जब वह बढ़ जाएगी तो दुनिया को जला डालेगी।

जिस दुश्मन को तू तीर से अभी बींध सकता है, उसे इतना मौका क्यों देता है कि वह अपनी कमान पर डोरी खींच ले?

दो दुश्मनों के बीच इस तरह बात करनी चाहिए कि अगर वे बाद में दोस्ती कर लें तो तुझे शर्मिन्दगी न उठानी पड़े। दो आदमियों के बीच की

लड़ाई आग की तरह है और बदनसीब चुगलखोर ईंधन डालने वाला है। दोनों लड़ने वाले तो कभी न कभी दोस्ती कर लेते हैं और साथ-साथ हंसी-खुशी बैठने लगते हैं, लेकिन चुगलखोर शर्मिन्दा होता है और बदनसीबी का शिकार बनता है।

दो आदमियों के बीच आग भड़काना और खुद को बीच में जला लेना अक्ल की बात नहीं है। दोस्तों के साथ आहिस्ता-आहिस्ता बात कर। ऐसा न हो कि खूंखार दुश्मन सुन ले। दीवारों के भी कान हो सकते हैं। इसलिए दीवार के पास जो भी तू कहे, सोच-समझकर कह।

जो दुश्मनों के साथ सुलह कर लेता है, वह दोस्तों को सताने का इरादा रखता है। ऐ अक्लमन्द! उस दोस्त की दोस्ती से हाथ धो ले, जिसका उठना-बैठना तेरे दुश्मनों के साथ हो।

जब तुझे किसी काम की चिन्ता लगी हुई हो, तो ऐसा उपाय कर कि तेरा काम बिना तकलीफ उठाए हो जाए।

लोगों से नम्रता से बात कर, सख्ती न कर। जो तुझसे सलाह करना चाहता है उससे न झगड़।

जब तक रुपये-पैसे से काम निकले, जान को खतरे में नहीं डालना चाहिए। अरब वालों का कौल है कि 'तलवार केवल आखिरी उपाय हुआ करती है। जब सब तदबीरें बेकार हो जाएं तो तलवार उठाना ही मुनासिब है।'

दुश्मन यदि नम्रता दिखाए तो तू उस पर रहम न कर। यदि उसे ताकत मिल गई तो वह तुझे माफ नहीं करेगा।

जब तू दुश्मन को कमजोर देखे तो शेखी से अपनी मूछें न मरोड़, क्योंकि हर हड्डी में गूदा होता है और हर लिबास में बहादुर आदमी छिपा हुआ हो सकता है।

बुरे आदमी को मारना दुनिया को उसके जुल्म से छुटकारा दिलाना है और उस जालिम को खुदा के कहर[1] से बचाना है।

माफ कर देना एक अच्छी बात है; लेकिन दुनिया को सतानेवाले के जख्म पर मरहम नहीं लगाना चाहिए। जिसने सांप पर रहम किया, उसने यह नहीं सोचा कि यह आदम की औलाद पर जुल्म करेगा।

दुश्मन जो नसीहत करे उसे मान लेना गलती है, लेकिन उसे सुन जरूर लेना चाहिए। उसका उलटा काम करना तेरे लिए ठीक होगा।

---

1. कोप

दुश्मन तुझसे जो काम करने को कहे, तू उससे बच, नहीं तो अफसोस से अपनी रान पर हाथ मारेगा।

यदि वह तुझे तीर की तरह सीधा रास्ता दिखाए तो भी उस पर मत चल। उसे छोड़कर कोई दूसरा रास्ता ले।

हद से ज्यादा गुस्सा लोगों में डर और बेचैनी पैदा कर देगा और बेमौके की मेहरबानी से तेरा रोब उठ जाएगा। न तो इतनी सख्ती कर कि लोग तंग आ जाएं और न इतनी नर्मी कि उनकी हिम्मत इतनी बढ़ जाए कि वे तेरी परवाह न करें।

सख्ती और नर्मी मिली-जुली अच्छी होती है। जर्राह जब फोड़े को चीरकर खून निकालता है तो फिर उस जगह पर मरहम भी लगाता है।

एक नौजवान ने अपने पिता से कहा, 'ऐ अक्लमन्द! मुझे एक बुजुर्गाना नसीहत कर।'

उसने कहा, "इतनी नेकी न कर कि तेज दांतों वाले भेड़िये तुझ पर सवार हो जाएं।"

दो शख्स मुल्क के दुश्मन हैं—एक तो वह बादशाह जिसमें सहनशीलता न हो और दूसरा वह इबादत करने वाला जिसमें इल्म न हो।

खुदा करे किसी मुल्क पर ऐसा बादशाह हुकूमत न करे जो खुदा का हुक्म नहीं मानता और उसकी बन्दगी नहीं करता।

बादशाह को चाहिए कि दुश्मनों पर इतना गुस्सा न करे, जिसे देखकर दोस्तों का उस पर भरोसा न रहे। गुस्से की आग पहले गुस्सा करने वाले को जलाती है। उसकी लपट दुश्मन तक पहुंच जाए यह जरूरी नहीं।

मिट्टी से बनी हुई आदम की औलाद को अपने सिर को गुस्से और घमंड से भरा हुआ नहीं रखना चाहिए। तुझमें इतनी तेजी, घमंड और बगावत भरी हुई है कि मुझे पूछना पड़ेगा कि तू मिट्टी से बना है या आग से?

मैं बलकान देश के एक खुदापरस्त के पास गया और उनसे कहा कि वह मुझे कुछ तालीम देकर मेरी जहालत दूर कर दें।

उन्होंने कहा, "ऐ समझदार इन्सान! जा और मिट्टी की तरह सहनशील बन, या फिर अब तक जो कुछ तूने पढ़ा है उसे जमीन के नीचे दफन कर दे और भूल जा।"

बुरी आदतों वाला इन्सान ऐसे दुश्मन के हाथ में गिरफ्तार है कि जहां कहीं भी वह जाएगा, सजा से नहीं बच पाएगा। यदि दुनिया से बचकर वह आसमान पर चला जाए तो वहां भी वह इन बुरी आदतों के कारण

मुसीबत में फंस जाएगा।

जब तू देखे कि दुश्मन की फौज में आपस में ही फूट पड़ गई है तो तू इत्मीनान से बैठ। अगर उनमें एका हो जाए तो आने वाली परेशानी से डर।

जब तू दुश्मनों में लड़ाई देखे तो आराम से अपने दोस्तों में बैठ, और यदि यह देखे कि वे सब एक ज़बान हो गए हैं तो अपनी कमान पर डोरी चढ़ा ले और किले के ऊपर पत्थर इकट्ठे कर ले।

जब दुश्मन की सब तदबीरें नाकाम हो जाती हैं तो वह दोस्ती की ज़ंजीर हिलाता है और दोस्ती हो जाने पर वह ऐसा काम करता है जो कोई दुश्मन भी नहीं कर सकता।

सांप के सिर को दुश्मन के हाथ से कुचलवा दे। इसके दो फायदे हैं। अगर दुश्मन तगड़ा पड़ गया तो सांप को तूने मरवा डाला। अगर सांप ने दुश्मन पर फतह पा ली तो तुझे दुश्मन से छुटकारा मिल जाएगा।

लड़ाई के दिन कमज़ोर दुश्मन से भी बेफिक्र नहीं रहना चाहिए। जब उसकी जान पर आ बनेगी तो वह शेर का भी भेजा निकाल लेगा।

अगर तुझे कोई ऐसी खबर मिले जो दूसरों को रंज पहुंचाने वाली हो, तो तू कुछ देर चुप रह, ताकि कोई दूसरा उसे कह डाले।

ऐ बुलबुल! तू मौसमे बहार की खुशखबरी दूसरों को सुना और बुरी खबर मनहूस कौवे के लिए छोड़ दे।

बादशाह से किसी की चुगली न खा। किसी की बेईमानी की करतूत तू बादशाह से उस वक्त तक न कह जब तक तुझे पूरा भरोसा न हो जाए कि तेरी बात पर यकीन कर लिया जाएगा। नहीं तो तू अपनी ही तबाही बुलाएगा।

बात कहने का उसी वक्त पक्का इरादा कर, जब तू यह देख ले कि तेरी बात का कोई असर भी होगा।

बात कहने से तेरी लियाकत और हुनर का पता चलता है, इसलिए बेकार बात करके तू अपनी कद्र को न घटा।

जो किसी घमंडी को नसीहत देता है वह खुद नसीहत का मोहताज है।

दुश्मन के धोखे में न आ और अपनी तारीफ सुनकर घमंड मत कर क्योंकि उसने तेरे लिए मक्कारी का जाल बिछाया है और अपने लालच का दामन फैला रखा है।

बेवकूफ को अपनी तारीफ अच्छी लगती है। वह फूलकर कुप्पा हो

जाता है ।

खबरदार ! उस चापलूस से अपनी तारीफ हर्गिज न सुन, जो तुझसे थोड़ा-सा भी फायदा उठाना चाहता है । यदि किसी दिन तू उसकी इच्छा को पूरा न कर पाया तो वह तेरे दो सौ ऐब गिना देगा ।

बात करने वाले का जब तक कोई ऐब नही पकडा जाता, उसके हुनर में कोई तरक्की नही होती ।

अपनी तकरीर[1] की खूबी पर घमंड न कर । तेरी तारीफ करने वाला उस खूबी को पहचानता ही नही है और तुझे बेकार मे अपने ऊपर गुरूर है ।

हर व्यक्ति को अपनी अक्ल बड़ी मालूम होती है और अपना बच्चा खूबसूरत ।

अगर सारी दुनिया से अक्ल उठ जाए तो भी अपने बारे मे कोई यह नही सोचेगा कि मै बेअक्ल हूं ।

दस आदमी एक दस्तरख्वान पर खाना खा सकते है लेकिन दो कुत्ते एक लाश पर एक साथ गुजारा नही कर सकते ।

लालची आदमी को दुनिया-भर की दौलत मिल जाए तो भी वह भूखा ही रहेगा जबकि सब्र करने वाला एक रोटी पर ही सब्र कर लेता है । अक्लमन्दों ने कहा है कि सन्तोषी फकीर लालची पूंजीपति से अच्छा है ।

तग आत तो एक रूखी रोटी से भर जाती है, लेकिन लालची की आख दुनिया-भर की नेमतों को देखकर भी नही भरती ।

जो ताकत के जमाने मे दूसरों के साथ भलाई नही करता वह कमजोर होने पर दूसरों की सख्ती झेलेगा ।

लोगों को सताने वाले से ज्यादा बदनसीब कोई नहीं है, इसलिए कि मुसीबत के वक्त उसका कोई दोस्त नही होता ।

जो चीज जल्द हासिल हो जाती है वह देर तक नही ठहरती ।

पूरब मे मिट्टी से चीनी के प्याले बनाने मे चालीस दिन लग जाते हैं जब कि मदेश्त मे कारीगर लोग एक दिन में सोना तैयार कर लेते हैं । मगर तुमने देखा होगा कि उस सोने की कोई कद्र नही होती ।

मुर्गी का बच्चा अण्डे से निकलते ही अपनी रोजी तलाश करने लगता है, जबकि आदमी के बच्चे में न अक्ल होती है न होश और तमीज । मगर मुर्गी का बच्चा आगे चलकर कुछ भी नही सीखता, जबकि आदमी का

1. भाषण

बच्चा धीरे-धीरे इल्मो-हुनर सीखकर कितना काबिल, स्वाभिमानी और बुद्धिमान बन जाता है।

कांच हर जगह मिल जाता है, इसीलिए उसकी कोई कद्र नहीं होती। लाल मुश्किल से हाथ आता है, इसीलिए सबको प्यारा होता है।

सब्र से बहुत-से काम निकलते हैं और जल्दबाज मुंह के बल गिरता है।

मैंने जगल में अपनी आंख से देखा कि आहिस्ता चलने वाला दौडने वालो से बाजी ले गया।

तेज चलने वाला घोडा दौड मे थक जाता है और आहिस्ता-आहिस्ता चलने वाला ऊट मंजिल पर जा पहुंचता है।

नादान के लिए चुप रहने से बढ़कर और कोई चीज नही है, लेकिन कोई यह बात समझ ले तो वह नादान ही न रहे।

जिस तरह अन्दर गिरी न होने से अखरोट हलका हो जाता है, उसी तरह हुनर न होने से इन्सान की बातचीत उसे बेकद्र कर देती है।

एक मूर्ख एक गधे को बड़ी मेहनत से पढ़ाने की कोशिश करता था। एक अक्लमन्द ने उससे कहा, "ऐ नादान ! तू यह क्या कर रहा है ? इस बेवकूफी पर तुझे जो ताने सुनने को मिलेंगे उनका तो खौफ कर। चौपाये तुझसे बोलना नही सीख सकते। हा, तू चौपायो से चुप रहना सीख सकता है।"

जो सोच-समझकर जवाब नही देता उसका जवाब अक्सर गलत होता है।

या तो समझदार आदमियों की तरह बात को सम्हालकर कह और नहीं तो चौपायो की तरह खामोश रह।

जब कोई व्यक्ति अपने से अधिक विद्वान् से इसलिए बहस करता है कि लोग उसे भी विद्वान् समझें तो नतीजा यह होता है कि लोग उसे मूर्ख समझने लगते है।

जब कोई बडा आदमी तुझसे बात करे, तो चाहे तू उससे ज्यादा जानता हो, तुझे उसकी बात नही काटनी चाहिए।

जो शख्स बुरो के साथ उठता-बैठता है वह भलाई की बात सोच ही नही सकता।

यदि फरिश्ता शैतान के साथ बैठेगा तो वह भी पागलपन, बेईमानी और मक्कारी की बातें करेगा।

बुरे आदमियो से तू बुराई के सिवा और कुछ नही सीखेगा। भेड़िया

खाल फाड़ना ही जानता है, खाल सीना नही।

लोगों के छिपे ऐब जाहिर न कर, क्योंकि तू उनको जलील करेगा और अपना एतबार उनके दिलो से खो देगा।

जो इल्म पढ़ता है और उस पर अमल नही करता वह उस किसान की तरह है जो हल चलाता है मगर बीज नहीं बोता

यह जरूरी नही है कि जो लड़ने मे तेज हो वह समझदारी की बात कहने मे भी तेज हो।

बहुत-सी अच्छे कद वाली स्त्रिया पर्दे मे छिपी अच्छी मालूम होती है, लेकिन पर्दा हटाने पर वे नानी की उम्र की बुढिया निकलती है।

अगर सारी रातें शबे-कद्र होती तो शबे-कद्र की कोई कद्र नही होती।

अगर सारे पत्थर लाल बदख्शा होते तो फिर लाल और पत्थर की कीमत एक-सी होती।

यह जरूरी नही कि जिसकी शक्ल अच्छी हो उसकी आदते भी अच्छी होंगी। असल चीज अन्दर का गूदा होती है, बाहर का छिकला नहीं।

इन्सान के इखलाक[1] और उसकी आदतो को देखकर यह अन्दाजा एक रोज मे ही लगाया जा सकता है कि उसमे कितना इल्म और हुनर है। लेकिन उसके अन्दर के हालात से बेखबर न रह क्योंकि नफ्स[2] की बुराइयों का पता सालों मे भी नही लग पाता।

जो बड़ो से लड़ता है वह खुद अपना खून करता है। क्या तू अपने-आप को बड़ा समझता है? ठीक ही है। जिसकी निगाह मे भेंगापन होता है उसे एक की दो चीजें दिखाई देती है।

अगर तू बेवकूफी करके मेढे मे लड़ेगा तो बहुत जल्द अपना माथा फुड़वा लेगा।

शेर से पंजा लडाना और तलवार पर मुक्का मारना अक्लमन्दो का काम नही है।

लड़ाई और जोर मस्त लोगो से मत कर। पजा लडाने वाले से बच और उसके सामने अपना हाथ बगल मे दबा ले।

जो कमजोर ताकतवर के मुकाबले मे बहादुरी दिखाता है वह अपने सर्वनाश मे अपने दुश्मन का साथ देता है।

जो कमजोर बाजू वाला लोहे जैसा पजा रखने वाले के साथ पजा

---

1. व्यवहार
2. मन

सड़ाता है वह नादान है।

जो नसीहत नही सुनता उसका इरादा बुरा-भला सुनने का मालूम होता है।

जब तू मेरी नसीहत नही सुनता तो मेरी झिड़की सुनकर चुप रह।

बेहुनर लोग हुनरमन्दों को देख कर जलते हैं। जिस तरह आवारा कुत्ते शिकारी कुत्तों के सामने नही आते लेकिन उन पर भौंकते जरूर है उसी तरह नीच लोग हुनरमन्दों की बराबरी न कर पाने पर उनमें ऐब जरूर ढूढते हैं।

जलने वाले लोग पीठ पीछे बुराई करते हैं क्योंकि कि मुकाबला करते समय उनकी जबान गूगी हो जाती है।

यदि पेट की आग न सताती, तो कोई परिन्दा शिकारी के जाल मे न फंसता। शिकारी खुद भी उसके लिए कभी जाल न बिछता।

पेट ही हाथ की हथकड़ी और पैर की बेड़ी बनता है। पेट का गुलाम खुदा को भी कम याद करता है।

अक्लमन्द बहुत देर में खाते हैं, इबादत करने वाले आधा पेट खाकर रहते हैं, परहेजगार केवल उतना खाते हैं कि वे जीवित रह सकें, जवान खाते रहते हैं जब तक उनके आगे थाल हटा नही लिया जाता, बूढे उस वक्त तक खाते हैं जब तक उन्हे पसीना नही आ जाता और फकीर इतना खा जाते हैं कि पेट में सांस लेने की गुंजाइश नही रहती और दस्तरख्वान पर किसी के लिए कुछ नही बचता।

पेटू आदमी को दो रातो को तकलीफ की वजह से नींद नही आती। एक रात तो पेट भारी हो जाने के कारण और एक रात खाना न मिलने की बेचैनी के कारण।

झगड़ालू और बदमाश लोगों से प्रेम करना गुनाह है।

तेज दांतो वाले भेड़िये पर रहम करना बकरियो पर जुल्म करना है।

जो अपने सामने खड़े हुए दुश्मन को नही मारता वह स्वयं अपना दुश्मन है।

अगर पत्थर पर सांप बैठा हो और तेरे हाथ मे भी पत्थर हो तो सोचना और देर करना बेवकूफी होगी।

कुछ लोग इस राय से इत्तिफाक नही रखते। वे कहते हैं कि कैदी को कत्ल करने मे देर करना बेहतर है। उसे मारा भी जा सकता है और छोड़ा भी जा सकता है। यदि उसे जल्द ही मार डाला गया और बाद में वह बेगुनाह साबित हुआ तो पछतावा होगा।

जिन्दा को मार डालना आसान है किन्तु मरे हुए को जिन्दा नही किया

जा सकता।

तीर फेंकने वाले का सब्र करना अक्ल का तकाजा है। जब तीर कमान से निकल जाता है तो फिर वापस नही आ सकता।

जो अक्लमन्द जाहिलो से झगड़ा करे, उसे चाहिए कि अपनी इज्जत बचाए रखने का ख्याल छोड़ दे। यह देखा जाता है कि जाहिल गाली-गलौज से अक्लमन्द को दबा लेता है। यह कोई ताज्जुब की बात भी नही क्योंकि जाहिल तो पत्थर है जो मोती को तोड डालता है।

यदि बुलबुल को कौवे के साथ पिंजरे मे बन्द कर दिया जाए तो ताज्जुब नही कि उसकी सांस घुटने लगे।

किसी हुनरमन्द को यदि किसी आवारा के कारण तकलीफ उठानी पडे तो उसे दुखी नही होना चाहिए। नीच पत्थर यदि सोने के प्याले को तोड़ दे तो इससे सोने की कीमत घटती नही और पत्थर की कीमत बढती नही।

यदि जाहिलों की मजलिस में कोई अक्लमन्द अपनी बात न कह सके तो इस पर कोई ताज्जुब नही करना चाहिए। सारगी की आवाज का ढोल के शोर में पता नही चलता।

जोर से बोलने वाला जाहिल जब गर्दन उठाता है तो अपनी बेशर्मी से अक्लमन्द को दबा लेता है। वह यह नही जानता कि हजाज का नगमा[1] गाजी[2] के ढोल की आवाज से दब जाता है।

लाल और जवाहर यदि कीचड़ मे गिर पड़ें तो भी उतने ही कीमती रहते हैं लेकिन गर्द यदि आसमान पर चढ जाए तो उतनी ही जलील रहती है।

कनआ[3] मे अपनी कोई लियाकत नही थी। इसलिए बाप की पैगम्बरी से उसके मर्तबे में कोई तरक्की नही हुई।

यदि तुझमे कोई हुनर है, तो उसे दिखा। यह मत कह कि मैं अमुक आदमी का बेटा हूं। इसलिए कि फूल कांटे से पैदा होते हैं और हजरत इब्राहीम एक बुतपरस्त[4] आजर[5] के यहा पैदा हुए थे।

---

1. हजाज का संगीत प्रसिद्ध है
2. लड़ाई जीतने वाला
3. हजरत नूह का बेटा
4. मूर्ति पूजक
5. हजरत इब्राहीम के चचा, जो बुततराश थे। अरब के लोग चचा को बाप भी कहते हैं।

मुश्क[1] वह है जो खुद खुशबू दे। इत्र बेचने वाले को यह बतलाना न पड़े कि यह मुश्क है।

अक्लमन्द एक इत्र की शीशी की तरह है जो चुपचाप खुशबू देती रहती है। जाहिल वह ढोल है जो शोर तो करता है मगर अन्दर से खाली है।

बुजुर्गों ने जाहिलों के बीच एक आलिम की मिसाल अंधों के बीच एक हसीन माशूक से या काफिरों के इबादतगाह में रखे हुए कुरान शरीफ से दी है।

जिस आदमी को तूने एक जमाने से दोस्त रखा हो, उसे जरा-सी देर में रंजीदा कर देना अक्लमन्दी नहीं है।

पत्थरों से लाल कई बरसों में पैदा हो पाता है। खबरदार! उसे कहीं पत्थर से कुचलकर तोड़ मत डालना।

बिना ताकत के सब तदबीरें मक्कारी और फरेब हैं। बिना तदबीर के ताकत का जोर नादानी और पागलपन है।

थोड़ा-थोड़ा मिलकर बहुत बन जाता है। कतरे में कतरा मिल जाए तो नहर बन जाती है और नहर से नहर मिल जाए तो नदी बन जाती है।

आलिम को लोगों की बेवकूफी बर्दाश्त नहीं करनी चाहिए। इससे दोनों का नुकसान होता है। आलिम का रोब कम होता है और जाहिल की जहालत बढ़ जाती है।

जब तू किसी नीच से प्रेम और खुशी से बात करेगा तो उसका गुरूर और अकड़ बढ़ जाएगी।

गुनाह जिससे भी हो, बुरा है, लेकिन यदि वह पढ़े-लिखे और काबिल आदमी से होता है, तो और भी बुरा है।

इल्म तो शैतान से लड़ने का हथियार है और यदि हथियार रखने वाला ही कैद हो जाए तो उसे बहुत शर्मिन्दा होना पड़ता है।

जाहिल बेचारा तो इसलिए रास्ते में भटकता है कि वह अक्ल का अंधा है, लेकिन अफसोस उस पढ़े-लिखे पर है जो आंखें रखते हुए भी कुएं में जा गिरा।

दुनिया के बदले ईमान को बेचने वाले महामूर्ख हैं।

कुरान में आया है कि अल्लाह अपने बन्दों से पूछता है, "ऐ आदम की औलादो! क्या मैंने तुमसे यह वायदा नहीं लिया था कि तुम शैतान को न पूजोगे?"

---

1. कस्तूरी

दुश्मन के कहने से तूने दोस्त से किया हुआ वायदा तोड डाला। अब गौर कर। तू किससे अलग हुआ और किससे जा मिला।

सच्चे आदमियो पर शैतान का जोर नही चलता उसी तरह जैसे फकीरो पर बादशाह का जोर नही चलता।

जो बे-नमाजी है उसको कर्ज मत दे। चाहे उसका फाको से दम ही क्यो न निकल रहा हो। जब वह खुदा के लिए अपना फर्ज पूरा नही करता तो तेरा कर्ज देने की उसे क्या फिक्र होगी ?

जिस आदमी की जिन्दगी मे उसकी रोटी किसी ने नही खाई, उसके मरने के बाद कोई उसका नाम भी नही लेता।

अगूर का स्वाद किसी बेवा से पूछो। मेवा बेचने वाले से क्या पूछना, जो रोज अगूर बेचता है और खाता है।

यूसुफ सिद्दीक साहब अकाल के दिनो मे पेट भर खाना नही खाते थे, ताकि वह भूखो को भूल न जाए।

जो ऐशो आराम मे जिया उसे क्या मालूम कि भूखे आदमी का दर्द क्या होता है ? कमजोर और लाचार आदमी का हाल वही जान सकता है जो खुद कभी कमजोर और लाचार रहा हो।

ऐ दौडने वाले घोडे पर सवार ! जरा इस बात का भी ख्याल कर कि एक गरीब, कमजोर और लाचार लकड़हारे का गधा कीचड़ मे फस गया है।

पडोस मे रहने वाले फकीर के घर से आग न माग। उसके घर खाने को ही नही तो वह आग क्यों जलाएगा ? उसके घर से जो धुआ उठ रहा है वह उसकी आहो का धुआं होगा।

कमजोर फकीर से अकाल के समय यह न पूछ कि तेरा क्या हाल है ? अगर पूछता है तो उसके जख्म पर मरहम लगाने और उसे कुछ देने को तैयार रह।

जब तू भारी बोझ से लदे हुए किसी गधे को कीचड मे फसा हुआ देखे तो दिल ही दिल मे उस पर रहम खा ले, उसके पास मत जा। यदि उसके पास जाता है तो कमर कसकर उसकी मदद को तैयार हो जा और उसकी दुम पकडकर उसे बाहर निकाल।

दो बातें अक्ल के बिलकुल खिलाफ है। एक तो तकदीर मे जितनी लिखी है उससे ज्यादा रोजी पाना और दूसरे मुकर्रर वक्त से पहले मौत का आना।

हजारो आहे और नाले करने से भी तकदीर नही बदलती। चाहे शुक्र

अदा करो या गिला-शिकवा, कोई फर्क नही पड़ेगा।

जो फरिश्ता हवा के खजाने पर तैनात है उसे इस बात की क्या परवाह कि किसी बुढ़िया के घर का चिराग बुझा जा रहा है?

ऐ रोजी को तलाश करने वाले! तसल्ली से बैठ। तुझे रोजी जरूर मिलेगी। और ऐ मौत से भागने वाले! मत भाग! तू मौत से बच न सकेगा।

तू रोजी की कोशिश करे या न करे खुदा-ए-बुजुर्ग तुझे रोजी जरूर पहुंचाएगा। और अगर तेरी मौत नही आई है और तू शेर या तेन्दुए के मुह मे चला जाए, तो वे भी तुझे नही खाएंगे।

जो मालदार दौलत और मर्तबा दोनो के होते हुए भी दुखी लोगों की कोई मदद नही करता, उससे जाकर कह दो कि ये दौलत और मर्तबा उसे उस दुनिया मे नही मिलेंगे।

जो जलने वाला खुदा के बेकसूर बन्दो से जलता है और उनसे दुश्मनी रखता है, वह खुदा की नेमतो से महरूम[1] रहता है।

मैंने एक हासिद[2] को देखा जो किसी बड़े आदमी की बुराई कर रहा था। मैंने उससे कहा, "जनाब, अगर आप बदकिस्मत हैं तो इसमें उस नेक बख्त का क्या कुसूर है?"

खबरदार! तू हासिद के लिए खुद को किसी मुसीबत में डालने की फिक्र मत कर। वह खुद ही अपनी बुरी आदत की मुसीबत मे गिरफ्तार है।

तुझे क्या जरूरत है कि तू उससे दुश्मनी करे? उसकी हसद[3] उसकी दुश्मन बनकर उसके पीछे पड़ी हुई है।

जो शागिर्द उस्ताद में अकीदत[4] नही रखता वह गरीब आशिक की तरह है, जो मुसाफिर रास्ता नही जानता वह बे-पर वाले परिन्दे की तरह है और जो आलिम बे-अमल है वह बिना फल वाले पेड की तरह है।

इसी तरह जो आबिद[5] बे-इल्म है वह बिना दरवाजे के घर के मानिन्द है। इबादत करने वाला जाहिल है तो उसे सुस्त और पैदल चलने वाला

1. वंचित
2. ईर्ष्यालु
3. ईर्ष्या
4. श्रद्धा
5. इबादत करने वाला

समझो। आलिम यदि सुस्ती से काम करता है तो वह उस सवार की मानिन्द है जो सो रहा है। घमंडी आबिद से वह गुनहगार अच्छा है जो दुआ के लिए खुदा के आगे हाथ फैलाता है।

वह सिपाही जो नर्म-मिजाज है और लोगों को तसल्ली और दिलासा देकर खुश कर देता है, उस आलिम से अच्छा है जो लोगों को सताता है।

लोगो ने किसी अक्लमन्द से पूछा, "आप आलिम-बे-अमल की मिसाल किस चीज से देंगे ?"

उसने कहा, "उस बर्र से जिससे शहद के बजाय डंक मिलता है।"

'उस बुरे स्वभाव वाली जालिम बर्र से कहो कि जब तू शहद नही देती तो डक भी न मार।'

ऐ परहेजगार ! तूने मक्कारी से सफेद कपड़े पहन रखे हैं। तू दनिया को धोखा दे रहा है और तेरा नामा-ए-ऐमाल[1] स्याह हो रहा है।

दरअसल दुनिया से हाथ कोताह[2] कर लेना चाहिए, कुर्ते की आस्तीन चाहे कोताह हो या लम्बी।

दो तरह के आदमियो के दिल से कभी हसरत नही निकलती और उनका टूटा हुआ पैर दलदल से नही निकल पाता—एक तो वह सौदागर जिसकी किश्ती टूट गई हो और दूसरा किसी जायदाद का वह वारिस जो दुष्ट लोगो की संगति मे बैठे।

या तो हाथी वालो से दोस्ती न कर या हाथी के रहने के काबिल घर बना ले।

बादशाह की दी हुई पोशाक कीमती जरूर होती है, मगर अपने पुराने कपडों मे अधिक सम्मान मिलता है।

बड़े आदमियों के दस्तरख्वान का खाना तो स्वादिष्ट होता है किन्तु अपनी झोली के टुकड़ो मे और ही स्वाद है।

दो बाते अक्लमन्दो की राय के खिलाफ हैं। एक तो महज वहम होने पर दवा का इस्तेमाल करना और दूसरे अनदेखे रास्ते पर काफिले के साथ न चलना।

इमाम मुर्शिद मुहम्मद गजाली से लोगों ने पूछा, "आपने इतना ज्यादा इल्म कैसे हासिल किया ?"

---

1. आचरण का खाता
2. पहुंच से दूर, छोटा

उन्होंने फरमाया, "जो कुछ मेरी समझ में नहीं आया उसके बारे में पूछने में मैंने कभी शर्म नहीं की।"

अक्ल के मुताबिक आराम की उम्मीद तभी हो सकती है जब तू अपनी नब्ज किसी काबिल आदमी को दिखाए, जो तेरे मिजाज को पहचान ले।

जो तुझे न आता हो यह दूसरों से पूछ ले क्योंकि पूछने की जिल्लत[1] तुझे अक्लमन्दी की इज्जत बख्शेगी।

जो बुरे लोगों की संगति में बैठेगा वह उनमें बुराई न भी सीखे पर बदनाम जरूर होगा। शराब की भट्ठी पर कोई नमाज पढ़ने के लिए भी जाए तो कहा यही जाएगा कि वह शराब पीता होगा।

ऊंट बड़ा सहनशील जानवर माना जाता है। कोई बच्चा भी चाहे तो उसकी नकेल पकड़कर उसे सौ मील तक ले जाए, और वह उसके हुक्म से गर्दन मोड़ेगा, लेकिन अगर सामने कोई खतरनाक घाटी आ जाए और बच्चा अपनी नदानी से आगे बढ़ना चाहे तो ऊंट उस वक्त उसकी ताबेदारी नहीं करेगा और नकेल को उसके हाथ से छुड़ा लेगा। जहां सख्ती करनी चाहिए वहां नहीं करना बुरा है।

जो तेरे साथ मेहरबानी करे, तू उसके पैरों की खाक बन जा, लेकिन यदि वह तेरा विरोध करे तो उसकी आंखों में धूल झोंक दे।

सख्त मिजाज वाले से नर्मी और मेहरबानी से बात मत कर, क्योंकि जंग खाया हुआ लोहा रेती से घिसने से ही साफ हो सकता है।

जो लोगों से इसलिए बढ़-चढ़कर बातें करता है कि उसे बुजुर्ग और काबिल मान लिया जाए, उसे जाहिल समझा जाता है।

अक्लमन्द आदमी उस वक्त तक नहीं बोलता जब तक लोग उससे कोई बात न पूछें।

लम्बी-चौड़ी बातें करने वाला चाहे सच्चाई पर ही क्यों न हो, लोग उसके दावे को झूठा मानते हैं।

सच बात कहने में अगर कैद हो जाना पड़े तो यह उससे अच्छा है कि तू झूठ बोलकर कैद से छूट आए।

झूठ बोलना एक ऐसी चोट की तरह है जिसका जख्म तो भर जाता है मगर दाग नहीं छूटता।

क्या तुमने नहीं सुना कि हजरत यूसुफ के भाइयों ने एक बार झूठ

---

1. अपमान

बोला था, इसके बाद उनके सच पर भी किसी ने यकीन नहीं किया।[1]

जिसकी आदत सच बोलने की है अगर उससे कोई गलती भी हो जाए तो लोग उसे माफ कर देते हैं, लेकिन अगर कोई झूठ बोलने के लिए बदनाम हो चुका हो तो लोग उसकी सच बात का भी यकीन नहीं करते।

खुदा की बनाई हुई सब चीजों मे इन्सान सबसे अच्छा है और कुत्ता सबसे गन्दा। लेकिन अक्लमन्दो ने कहा है कि नाशुक्रे इन्सान से वफादार कुत्ता अच्छा होता है।

कुत्ते को तू एक लुक्मा खिला दे, फिर चाहे सौ पत्थर मार, वह तेरे अहसान को नहीं भूलेगा। लेकिन यदि तू सारी उम्र एक नीच आदमी पर मेहरबानी करे तो भी वह जरा-सी बात पर तुझसे लड़ने को तैयार हो जाएगा।

जो अपने मन को खुश करने में लगा रहता है वह किसी हुनर में माहिर नहीं हो सकता और जिसमे हुनर नहीं है वह सरदार बनने के काबिल नहीं है।

बहुत खाने वाले इन्सान पर रहम न कर। पेटू आदमी बड़ा कमीना होता है।

यदि तू बैल जैसा मोटापा चाहता है तो गधे की तरह लोगों का जुल्म सहने को तैयार हो जा।

इंजील में आया है कि खुदा ने कहा, "ऐ आदम की औलाद ! अगर हम तुझे अमीरी देंगे तो तू उसमे फंसकर हमे भूल जाएगा, और अगर तुझे फकीरी देंगे तो तू उदास होकर बैठ जाएगा और तुझे हमारी याद मे आनन्द नहीं आएगा। जब खुशी और रंज दोनों हालतों मे तू खुदा को याद नहीं

---

1. हजरत यूसुफ के भाइयों ने उन्हें कुएं में डालकर अपने पिता हजरत याकूब से यह कह दिया था कि उसे भेड़िया खा गया। फिर जब हजरत यूसुफ मिस्र के बादशाह बने और वहां सात साल का कहत पड़ा तो उन्होंने जरूरतमन्दों को अनाज बंटवाया। हजरत यूसुफ के भाई बन्यामीन भी गल्ला लेने गए। हजरत को उन पर दया आई और उनकी सहायता करने के विचार से उन्होंने चुपचाप एक सोने का प्याला उनके सामान में रखवा दिया। सिपाहियों ने उनके पास सोना देखकर उन्हें चोर समझा और रोक लिया। हजरत यूसुफ के दूसरे भाइयों ने घर जाकर अपने पिता से सारा हाल सुनाया। हजरत याकूब ने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया।

करता तो मैं नहीं समझता कि तू अपनी फिक्र को छोड़कर कभी मेरी इबादत करेगा।"

अल्लाह की कुदरत समझ से बाहर है। किसी को वह बादशाहत से उतार देता है,[1] *और किसी को मछली के पेट में भी जिन्दा रखता है।*[2]

जो दुनिया के अदब सिखाने से भी नहीं सीखता और सीधे रास्ते पर नहीं चलता वह बाद मे दोज़ख की मुसीबत मे गिरफ्तार होता है।

बुजुर्ग लोग पहले तो नसीहत करते हैं और उसके बाद सजा देते है। तू उनकी नसीहत को नहीं सुनेगा तो वे तेरे पैरो मे बेड़ियां डाल देंगे।

खुशकिस्मत लोग दूसरों के किस्सों और मिसालों से नसीहत हासिल करते हैं। वे ऐसा मौका नही आने देते कि उनकी गलतियो मे बाद मे आने-वाले लोग नसीहत लें और उनकी गलतियो की दास्तान एक-दूसरे को सुनाए।

लेकिन चोर उस वक्त तक हाथ नही सिकोड़ते जब तक कि उनका हाथ काट नही डाला जाता।

एक चिड़िया जब दूसरी चिड़िया को जाल में फंसा हुआ देखती है तो दाने की तरफ नही जाती। इसी तरह तू दूसरों की मुसीबत से नसीहत हासिल कर, ताकि दूसरे तेरी मुसीबत को देखकर नसीहत न लें।

जिसकी आस्था के कान बहरे हों वह क्यों कर सुने? और जिसे सौभाग्य की कमन्द अपनी तरफ खींच रही हो वह क्यों न जाए?

खुदा के दोस्तों की अंधेरी रात भी रौशन दिन की तरह चमकती है।

नेकबख्ती अपनी कोशिश से उस वक्त तक हासिल नही हो सकती जब तक मेहरबान खुदा मेहरबानी नही करता।

---

1. हजरत सुलेमान ने एक गैरमुस्लिम लड़की को मुसलमान बनाकर उससे शादी कर ली थी। फिर अपनी बीबी की इच्छा होने पर उसे अपने पिता की तस्वीर बनाकर रखने की इजाजत दे दी थी। वह उसे छिप-छिपकर पूजती थी। *इस्लाम में बुतपरस्ती या मूर्ति पूजा पाप है* है इसलिए हजरत सुलेमान पर खुदा का कोप हुआ और वे बादशाहत से उतार दिए गए।
2. हजरत यूनिस को एक मछली निगल गई थी मगर खुदा की मेहरबानी से वे चालीस दिन तक उसके पेट में जिन्दा रहकर बाहर निकल आए।

ऐ खुदा ! तेरे कहर[1] की शिकायत मैं किससे करूं ? दूसरा कोई हाकिम नही है और तेरे हाथ से ऊंचा किसी का हाथ नही है ।

जिसे तू रास्ता दिखाए उसे कोई भटका नही सकता और जिसे तू रास्ता भुला दे उसे फिर कोई रास्ते पर ला नही सकता ।

वह फकीर कि जिसका अन्त अच्छा है, उस बादशाह से बढ़कर है, जिसका अन्त खराब है ।

वह रंज जिसके बाद तुझे खुशी मिले, उस खुशी से अच्छा है जिसके बाद तुझे रंज मिले ।

आसमान जमीन पर आबे-रहमत[2] की बारिश करता है, लेकिन जमीन आसमान पर धूल उड़ाती है । हर बरतन से वही टपकता है जो उसमे होता है ।

अगर तुझे मेरी बुरी आदत नागवार है तो तू अपनी अच्छी आदत तो न छोड़े ।

अल्लाह सबसे ज्यादा रहमदिल है । वह हमारे गुनाह देखकर उन पर परदा डालता रहता है जब कि पड़ोसी हमारे गुनाह देखकर शोर मचाने लगते हैं ।

खुदा बचाए ! यदि दुनियावाले एक-दूसरे की छिपी हुई बातों को जान लेते तो कोई किसी को चैन से न बैठने देता ।

सोना खान को खोदने के बाद हाथ आता है । कजूस का पैसा उसकी जान निकलने के बाद ।

यह कहा जाता है कि खाने की तमन्ना मे खाने से ज्यादा मजा आता है । शायद इसी वजह से कंजूस लोग माल खाते नही और उसकी हिफाजत करते रहते हैं । नतीजा यह होता है कि दुश्मनो की ख्वाहिश के मुताबिक कंजूस मरा पड़ा होता है और उसका सोना धरा रह जाता है ।

जो कमजोरों पर रहम नही करता वह जबर्दस्ती करने वालों का जुल्म उठाता है ।

जिस बाजू में जोर है उसे नही चाहिए कि वह किसी कमजोर का हाथ तोड़े । तू कमजोरों के दिल को मत दुखा नही तो किसी जबर्दस्त के जुल्म का शिकार बनना पड़ेगा ।

एक फकीर खुदा से दुआ मागते हुए कह रहा था, "ऐ खुदा ! बुरे

---

1. कोप ।
2. कृपा का जल ।

लोगों पर रहम कर। अच्छों पर तो तेरा रहम पहले से ही है, जिन्हे तूने अपनी रहमत से नेक पैदा किया है।"

अक्लमद आदमी जब कहीं झगड़ा देखता है तो बचकर निकल जाता है और जब कहीं सुलह देखता है तो वहां ठहर जाता है। इसलिए कि झगडे की हालत में किनारे पर रहने में ही सलामती होती है और मेल-जोल की जगह बीच मे ही घुसने मे सुख मिलता है।

जुआरी दांव लगाता है और इच्छा करता है कि तीन और छक्का आए, मगर आते हैं तीन और एक।

घोड़े के लिए घास का मैदान सड़क से बेहतर है, लेकिन बेचारे के हाथ में अपनी लगाम नही होती।

जिस बादशाह ने सबसे पहले कपड़ों पर बेल-बूटे बनवाए और बायें हाथ मे अंगूठी पहनने का रिवाज डाला, उसका नाम जमशेद था।

लोगो ने उससे पूछा, "तूने दायें के मुकाबले बायें हाथ को क्यों पसन्द किया? और उसे अगूठी से क्यो सजाया?"

उसने कहा, "दाहिने हाथ को तो इस बात से ही रौनक हासिल है कि वह सीधा हाथ है।"

बादशाह फरीदू ने चीन के डेरे बनाने वालो मे कहा कि डेरे के बाहरी हिस्से को, जो बीच से दूर है, अच्छी तरह से बेल-बूटे बनाकर खूबसूरत कर दे।

ऐ होशियार शिक्षक! तू बुरे लोगों को सिखा-पढ़ाकर अच्छा बना। अच्छे तो वैसे ही खुशकिस्मत हैं कि वे अच्छे पैदा हुए।

एक बुजुर्ग से लोगो ने पूछा, "यह क्या बात है कि ज्यादातर सब काम सीधे हाथ से किए जाते हैं और वही अच्छा माना जाता है, फिर भी लोग सजाते बायें हाथ को हैं और उसी मे अगूठी पहनते है?"

उसने कहा, "क्या तुझे नही मालूम कि जो हुनर मे बडा होता है उसे ही फायदे से महरूम रहना पडता है?"

अल्लाह जो सब कुछ देने वाला है वह या तो बडा बनाता है और या नसीब वाला।

बादशाहों को नसीहत करना उसे ही मुनासिब है जिसे अपना सिर कटवाने का खौफ न हो और न ही इनाम-इकराम की उम्मीद।

जो खुदापरस्त है उसकी नजरो मे आराम और तकलीफ एक-से हैं। चाहे उसके कदमों पर सोना डाल दो और चाहे उसके सिर पर तलवार

रख दो। उसे न किसी से डर है और न किसी से उम्मीद। यही तौहीद[1] की बुनियाद है।

बादशाह जालिमों को मिटाने के लिए होता है, कोतवाल खूंख्वार लोगों का खून करने के लिए और काजी जेबकतरों को सुधारने के लिए।

यदि दो लड़ने वाले एक ठीक बात पर राजी हो जाएं तो काजी के पास जाने की जरूरत ही न रहे।

अगर तेरे ऊपर किसी का कुछ हक बनता हो और तू जानता है कि तुझे वह हक अदा करना चाहिए तो उसे तू खुशी से अदा कर दे, लड़ाई और तंगदिली से नहीं।

अगर कोई खुशी से खिराज[2] अदा नहीं करता तो सिपाही उसके साथ जबर्दस्ती करते है। फिर वे खिराज भी वसूल करते है और रिश्वत भी।

लोगों के दांत खटाई से खराब होते है और काजी के मिठाई से। जो काजी रिश्वत में एक ककड़ी भी खा लेगा वह मुकदमे मे तुझे जिताकर तेरा दावा खरबूजे के सौ खेतों पर साबित कर देगा।

जवान आदमी अगर तन्हाई मे बैठकर खुदा को याद करता है तो यह उसकी हिम्मत और सच्ची इबादत है। अगर बूढ़ा किसी कोने में पड़ा-पड़ा खुदा को याद करता है तो इसमें तारीफ की कोई बात नही क्योंकि उससे तो वैसे भी उठा और चला-फिरा नही जाता।

किसी अक्लमन्द से लोगों ने पूछा, "जिन पेड़ो को खुदा ने ऊंचा और फल देने वाला बनाया हैं, उनमें से किसी को 'आजाद' नहीं कहा जाता, सिवा सरो के पेड़ के, जिसमें कोई फल नही आता। कहिए, इसकी वजह क्या है?"

उसने कहा, "हर पेड की बहार का एक वक्त मुकर्रर है। जब वह वक्त आता है तभी उसमे फूल-पत्ते आते है। इसके बाद पतझड होने से पेड सूना हो जाता है। मगर सरो के पेड़ में ऐसी कोई तब्दीली नहीं होती। वह हमेशा एक-सा रहता है और हर वक्त सर-सब्ज नजर आता है। आजाद रहने वालो की यही एक विशेषता है।"

'जो चीज गुजरने वाली है उससे दिल मत लगा। बगदाद में यह दजला नदी तो खलीफा के मरने के बाद भी बहुत अर्से तक बहती रहेगी।'

---

1. ईश्वर को एक मानना, अद्वैतवाद
2. कर

'अगर तुझसे बन पड़े तो खजूर के पेड़ की तरह उदार बन, नही तो सरो के पेड़ की तरह आजाद रह।'

दो शख्स मर गए और हसरत साथ ले गए। एक तो वह, जिसने पास रहते हुए भी नही खाया और दूसरा वह, जिसने जानते हुए भी अमल नही किया।

समर्थ होते हुए भी जो कजूस है, उसके बारे मे तू हर एक को बुराई करते देखेगा। लेकिन जो उदार है और देता रहता है उसके दोषो को उसकी दानशीलता छिपा लेगी।

उपसंहार

इस किताब में सादी के पूर्ववर्ती शायरों की कोई भी पंक्ति शामिल नहीं है।

'अपनी पुरानी गूदडी संवार लेना मांगे हुए कपड़ों से बेहतर है।'

सादी की बातें अक्सर मस्ती और मजाक से भरी हुई होती हैं। 'जिनका नजरिया तंग है, वे शायद मुझ पर तानाजनी करें और बेकार में अपना दिमाग खपाएं; लेकिन बिना वजह चिराग का धुआं निगलना अक्लमन्दों का काम नहीं है। जो लोग रोशन दिमाग है, उनमे मुझे यह कहना है कि मैंने मनुष्य को सुख पहुंचाने वाली नसीहतों के मोती अपनी इबारतों की लड़ी में पिरो दिए हैं, लोगों की भलाई के लिए कडवी दवा को मजाक के शहद में मिलाकर पेश किया है, ताकि इन्सान की रंज से उदास तबीयत इसे कुबूल कर ले। तारीफ अल्लाह के लिए है।

'हमने एक लम्बे अर्से तक सोचने के बाद ये नसीहतें लिखी हैं। अगर किसी को अच्छी न लगें तो न सही, रसूल का काम तो बात को लोगों तक पहुंचा देना ही है।

'इस किताब को पढने वाले! तू खुदा से दुआ कर कि वह लिखने वाले को बख्श दे।

'पहले तू अपने भले के लिए जो दुआ मांगना चाहता है वह मांग ले, फिर इस किताब को लिखने वाले को बख्श देने के लिए दुआ कर।

'अगर कयामत के दिन अल्लाह के सामने मुझे कोई मर्तबा मिल गया, तो मैं यही कहूंगा—ऐ मौला! मैं गुनहगार हूं और तू अहसान करने वाला मालिक है। बेशक मैंने गुनाह किए हैं; पर अब मैं तेरी रहमत का उम्मीदवार हूं।'

□□

□ शेख़ सादी

□ शेख मुसलिहुद्दीन सादी (1184–1291 ई०) फारसी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि हुए है। इनके नीति-वचन मनुष्य को उचित और अनुचित कर्मों का अन्तर समझाते हुए उसे सुखमय जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देते है।

□ शेख़ सादी का जन्म 1184 ई० में ईरान के दक्षिणी प्रान्त में स्थित शीराज़ नगर में हुआ था। उनके पिता स्वयं एक कवि थे। अपने पिता के संरक्षक साद-बिन-जगी के नाम पर ही उन्होंने अपना तख़ल्लुस रखा, सादी।

□ उनकी आरभिक शिक्षा शीराज मे हुई। बाद में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे बगदाद चले गए। सुप्रसिद्ध सूफी शेख शहाबुद्दीन सुहरावर्दी उनके गुरु थे।

□ अध्ययन समाप्त होने पर 1226 ई० मे उन्होंने इस्लामी दुनिया के कई भागो की लम्बी यात्रा पर प्रस्थान किया। उन्होंने अपने जीवन के अगले तीस वर्ष केवल भ्रमण करने मे ही व्यतीत किए।

□ उनकी पहली रचना 'बोस्ता' (फलों का उद्यान) है। इसमे उनकी नीति-विषयक कविताएं सकलित है। इसके दो वर्ष पश्चात् 1258 ई० में उन्होंने 'गुलिस्ता' (फूलों का उद्यान) की रचना की।